हालात ज़िन्दगी सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी रह०

पर आधारित

अनवार-ए-मसऊदी

लेखक

मसऊद-ए- मिल्लत अलहाज मौलाना मोहम्मद अली मसऊदी

हालात ज़िन्दगी

सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी रह०

पर आधारित

अनवार-ए-मसऊदी

लेखक

मसऊद-ए- मिल्लत अलहाज मौलाना

मोहम्मद अली मसऊदी

बानी व सरबराहे आला

अलसकाफतुल मसऊदिया अरबी कालेज

रिसिया मोड़ आसाम रोड, बहराइच

मो0 – 9415192177

हजरत मसऊद-ए-मिल्लत (लेखक) का तआरूफ

हुजूर सुल्तानुश्शोहदा सय्यदे सालार मसऊद गाजी रज़ी अल्लाहु तअला अनहु मज़हबे हक़्क़ की इशाअत के लिये अपने वतने अज़ीज़ को खैरबाद फरमाकर हिन्दुस्तान के वो दौरे उफतादा इलाके में जहां इस्लाम की मुकद्दस शुआएं पहुँची नही थी आपने दीन–ए–हक के मुबल्लिगे अव्वल बन कर तौहीद व रिसालत का डंका बजाया और आप व आपके रुफ़का ने हिन्दुस्तान बिलखुसूस शुमाली हिन्द में मज़हबे इस्लाम की नूरानी किरनो से परस्तनद–ए–मअबूदाने बातिला के सियाह कुलूब को मुनव्वर फरमाया खुसूसन शहर बहराइच पर फैज़ाने सालारे आज़म अब्रेए बहारां बन कर ऐसा बरसा कि अबदी आराम गाह के लिये इसी सरज़मीन को मुन्तखब फरमाया बिला आखिर दीने इसलाम के फरोग व इस्तेहकाम की खातिर अपनी जाने अज़ीज़ और खून का आखिरी कतरा भी राहे मौला में नज़्र कर दिया।

जान दी दी हुई उसी की थी।
हक़ तो ये है कि हक अदा न हुआ।।

424 हिजरी में आप मरतबे शहादत से सरफराज हुए कहते है कि खूने शहीदां रायगां नही जाता आप की शहादत रंग लाई इस्लाम का बोल बाला हुआ आज भी शहर बहराइच निस्बते गाज़ी की वजह से बैनुल अक़वामी शोहरत का हामिल है गाज़ी पाक के फैज़े बातिनी से बहराइच की खाक में नाबगए रोज़गार शख्सियतें और ऐसे–ऐसे लअलो गोहर को जन्म दिया है जिन पर पूरी मिल्लत को नाज है उन्ही में एक आज़ीमुल मरतबत सुन्नते नबविया के पासदार तरीकए असलाफ की आईनादार शख्सियत उस्ताज़–ए–गिरामी–ए–वक़ार साहिबुल फज़ीलत हज़रत मसूदे मिल्लत मद ज़िल्लहुल आली की ज़ाते गिरामी है। जिन्हे शारेह बुखारी फकीहे आज़मे हिन्द हज़रत मुफ्ती शरीफुल हक़ अमजदी रहमत उल्लाह अलैह ने मसऊदे मिल्लत का लक़ब अता फरमाया ऐसी ज़ात–ए–बाकमाल को जानने के लिए आइए उनकी किताब–ए–ज़िन्दगी का वरक़ उलटते हैं।

विलादत

शहर बहराइच से मगरिब की जानिब नानपारा व बहराइच के दरमियान एक छोटा सा गांव जोलाहनपुरवा नामी है। जहां आप 12 अगस्त 1972 ई0 में पैदा हुऐ आपका नाम मोहम्मद अली आप के वालिदे गिरामी शेर अली मरहूम है। जो नेक खसलत दींन दार इंसान थे और वालिदा मरहूमा का नाम आमना खातून है। जिनका खानदानी तअलुक हज़रत शह मोहब्बत अली रहमत उल्लाह अलेह बंजरिया से है। जिनके बारे में मशहूर है कि उनकी मुलाकात हज़रत बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार से हुई और उनसे फैज़ हासिल किया।

आपनें उन्ही पाक बाज़ व नेक हसतियों के ज़ेरे साया परवरिश पाई। फिलवक्त आपका कयाम दयारे गाज़ी में वाके मसऊदी मंजिल में रहता है। जबकी मुस्तकिल रिहाईश अबाई गांव की कादरी मंज़िल में है।

तालीम व तरबियत

जब आपने शऊरे आगाही में कदम रक्खा तो नेक सीरत वालिदैन ने दीनी तालीम के लिए मकामी मकतब में दाखिल किया और इस तरह आपने तहसीले इल्म का आगाज कर दिया। इब्तिदाई तालीम के बाद जमाते सालसा तक की तालीम जिला बहराइच के मदारिस में हासिल की बाद में चश्मए इल्म से सैराबी के लिए हिन्दुस्तान की मायानाज दर्सगाह अलजामिअतुल इस्लामिया रौनाही फैजाबाद तशरीफ ले गये। असातजा की इसलाह व तरबियत ने आपके इल्मो अमल में चार चांद लगा दिये आप ने अपनी शबो रोज की मेहनत व जांफिशानी और इस्तादो लियाकत के जरिऐ बहुत जल्द असातजा के महबूबे नजर बन गये। असातजा इकराम ने जब देखा कि आपको बुजुर्गाने दीन बिलखुसूस ग़ाज़ी पाक से क़ल्बी लगाओ है तो आप के नाम के आगे लफ्ज़ मसऊदी का इज़ाफा कर दिया आप मोहम्मद अली से मोहम्मद अली मसऊदी हो गये मुखलिस असातज़ा के सायए शफक़त में 6 साल रह कर उलूमे दीने मुस्तफा की तकमील की और आप आलिमे दीने शरीयत बन गये

फराग़त

9 फरवरी 1992 को हुई ओलमा व मशाएख बिलखुसूस ताजुल शरिया क़ाजी इस्लाम फिलहिन्द हुजूर अज़हरी मियां और हुजूर सय्यद हामिद अशरफ जीलानी के दस्ते अक़दस से ताजे ज़र्री ज़ेब तन किया गया। इसी तरह आपने वारिसे अम्बिया के अमीन बनकर अलजामियतुल इस्लामिया से फराग़त हासिल की।

अस्नाद

फाज़िल दर्स निज़ामीया व क़रात अलजामिअतुल इस्लामिया रौनाही मुन्शी कामिल,(फारसी) इंगलिश, मौलवी, आलिम (अरबी) फाज़िल मअकूलात फाज़िल तिब फाज़िल, दीनयात फाज़िल अदब इलाहाबाद बोर्ड अदीब कामिल, मोअल्लिम उर्दू अलीगढ़।

असातज़ा-ए-इकराम

हज़रत अल्लामा मौलाना तजम्मुल हुदा साहब क़िबला हज़रत ख्वाजा मुनीर आलम साहब क़िबला हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ्ती वकील अहमद साहब क़िबला हज़रत अल्लामा दानिश अली फरीदी साहब क़िबला हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल क़य्यूम साहब क़िबला हज़रत अल्लामा मौलाना इम्तियाज़ साहब क़िबला हज़रत अल्लामा व मौलाना नोअमान साहब क़िबला हज़रत मौलाना व मुफ्ती शब्बीर हसन साहब क़िबला हज़रत अल्लामा मौलाना वसी अहमद साहब क़िबला हज़रत अल्लामा व मौलाना बख्श उल्ला साहब क़िबला हज़रत अल्लामा व मौलाना शाकिर अली साहब क़िबला व हज़रत मौलाना मो0 उमर साहब क़िबला।

।। रोफ़का-ए-दर्स ।।

हज़रत मौलाना मुख़्तार अहमद साहब सीतापुरी, हज़रत मौलाना तौसीफ रज़ा साहब, हज़तर मौलाना मोईनुददीन, हज़रत मौलाना मो0 ज़हूर अहमद साहब, मौलाना मौहम्मद आरिफ साहब, हज़रत मौलाना डा0 सय्यद फजलुर्रहमान साहब, हज़रत मौलाना मुफ्ती मो0 इस्माईल साहब।

तदरीसी खिदमात

मदरसा रिज़विया इरफानुल कुरआंन खन्ना पुरवा जामिया गौसिया असरारूल उलूम रिसिया बाजार, जामिया गाज़िया फैजुल उलूम बहराइच शरीफ, मज़कूरा दर्सगाहों में दर्सओ तदरीस की खिदमात अन्जाम दी और तिशनिगानें उलूम को सैराब किया। दाखिले निसाब कुतुब मसलन जलालैन शरीफ, मुल्ला हसन हदिया सईदिया हिदाया, मिशक़ात शरीफ मुअत्ता इमाम मो0 काफिया कुतबी मीर कुतबी, तिरमिज़ी शरीफ, शरह–ए–जामी, हिदायतुल हिकमत वगैरह जैसी अहम और मोअतबर किताबों का दर्स दिया।

किरदार

आप अखलाको मुरव्वत खुलूसो लिल्लाहियत, सब्रओ शुक्र किरदार ओ अफआल में सुन्नत व शरीयत के नमूना असलाफ के तरीके अमल पर गामज़न है। आपके सैकड़ो तलामज़ा मसलक अहले सुन्नत की नस्रो इशाअत में सरगर्म अमल है। हज़रत की कफ़श बरदारी का शरफ पाने वालों में राक़िमुल सुतूर भी है। सफर व हज्र खिलवतों जलवत में इलमों अमल ज़हद व तक्वा दर्सओ तदरीस के मैदान मं हज़रत की जिन्दगी का मुताला किया है। आप ज़ाहिरो ज़ेबो ज़ीनत तसन्नो से दूर बेजा तकल्लुफात से मुन्तफिर रियाकारी और मक्रो फरेब जैसी सिफअते रजीला से बेज़ार रहते है। दीनों मिल्लत की फिक्र में हमेशा सरगरदाँ रहते है। मसलके आला हज़रत की तरवीज़ो इशाअत के लिये अनथक जद्दो जेहद करने वाले बड़ो का एहतराम छोटों को हसबे दर्जा नवाज़नें वाले है।

इजाज़त व खिलाफत

सिलसिलए आलिया कादरिया रिज़विया अमजदिया की इजाज़त व खिलाफत, शहज़ादए सदरू शरिया हज़रत अल्लमा व मौलाना मुफ्ती अशाह बहाउल मुस्तफा साहब किबला दामत बरकातहमुल आलिया नें अता फरमाई। फैज़ुल अरकान हज़रत सूफी गुलाम आसीपिया कुद्दिसा सर्रहु के शहजादा हजरत ख्वाजा राशिद साहब किबला नें सिलसिले अबुल आलिया जहांगीर की इजाज़त व खिलाफत मरहमत फरमाई। दुआ व तअवीज़ की इजाज़त मज़कूरा बाला हज़रात के अलावा उस्ताजुल उलमा हज़रत गुलाम मुफ्ती मो0 शब्बीर हसन रिज़वी शेखउल हदीस अलजामियअतुल इस्लामिया क़स्बा रौनाही फैज़ाबाद ने अता फ़रमाई।

हज व ज़ियारत

हरमैन शरीफैन की हाज़री और फरीज़ ए हज की अदाएगी दोनों की बरकतों और सआदतों का जरिया है। हज़रत मसउद–ए–मिल्लत ज़िलहिज 1432 हिजरी सन 2011 ई0 में ज़ियारते हरमैन शरीफैन से मुर्शरफ हुए।

दारूल उलूम का क़याम

जब आपकी वाबस्तगी उत्तर प्रदेश के शोअब ए तालीम से हुई तो अपनी जेबे खास से ज़मीन खरीदकर वक्फ की और 1997 ई0 में उलमा व मशाएख की मौजूदगी में शारेह बुखारी रहमत उल्ला अलैह ने संगे बुनियाद रखा और दुवाओ से नवाज़ा मसऊदे मिल्लत ने इदारे का नाम सुल्तानउस्शोहदा फातहे आज़म सय्यदे सालार मसऊद ग़ाज़ी की बाबरकत ज़ात वाला शिफाअत की तरफ मन्सूब करते हुए अस्सक़ाफतुल मसऊदिया अरबी कालेज रखा जो आप की ग़ाज़ी पाक से अक़ीदत व मोहब्बत की दलील है। अलहमदुलिल्लाह बा फैज़ सरकार सुल्तानुस्शोहदा इदारा रोज़ बरोज़ तरक्क़ियों की जानिब

गामज़न है। जिसमें तहतानिया फौक़ानिया आलिया हिफज़ओ क़रात हिन्दी इंग्लिश तबलीग़ों अफतानशो इशअत जैसे अहम शोअबे हैं असातज़ा की टीम तालीम ओ तरबियत इल्मो अमल के ज़ेवर से क़ौम के फरज़न्दो का मुस्तक़बिल ताबनाक बनाने के लिये शबो रोज़ मुन्हमिक हैं ताकि क़ौम के नौनिहाल दीनी तालीम के साथ साथ अस्री तालीम से भी मुजय्यन हों।

कलमी काविश

फज़ायल शबे बरात, फज़ायल शबे मेराज, फज़ायल रमज़ान और अहकामे मय्यत पाकेट साईज तालीफ फरमाकर हज़रत मसऊदे मिल्लत ने दारूल उलूम के शोबए नश्रो इशाअत अल दायरतुल मसऊदिया से छपवाकर मुफ्त तक़सीम फरमाया ताजुल फुकहा बुलबुले हिन्द हज़रत मुफ्तीय नानपारा मोहम्मद रज्जब अजी क़िबला पर अहम मक़ाला ।

शोबए तहक़ीक

अस्सक़ाफतुल मसऊदिया का एक अहम शोबा मसऊदिया रिज़विया दारूल तहक़ीक मसऊदी मंज़िल नूररूद्दीन चक बहराइच शरीफ जिसके कयाम का मक़सद ग़ैर मतबुआ मख़तूतो की इश्आत है। अल्हमदुलिल्लाह हिन्दुस्तान में पहली बार मेराते मदारी की इश्आत का मसऊदिया रिज़विया दारूल तहक़ीक का शरफ हासिल हुआ। जिसे अहले इल्म ने काफी सराहा। दूसरा अहम कारनामा अनवारे मसऊदी आपके हाथों में है। जिसके उर्दू वाले नुस्खे में मेराते मसऊदी क़दीम ग़ैर मतबुआ मत्नु शामिल है जो मख्तूतात से अखज किया गया है।

अनवारे मसऊदी

हज़रत मसऊदे मिल्लत के तमाम औसाफ में जो शिफत सबसे मुम्ताज और नुमाया है जो बुजुरगाने दीन बिलखुसूस सैय्यदे सालार मसऊद ग़ाजी रहमतुल्लाह अलैह से इश्क–ओ–मुहब्बत वालिहाना अक़ीदत जिसको अगर इश्क–ऐ–जुनूं खेज़ से ताबीर किया जाये तो बजा है। यही वजह है कि सफरो हजर अवामो ख़ास की महफिल में जहां कहीं भी आप इल्मी गुफ्तगू फरमाते हैं तो ज़िकरे हबीब से ज़रूर मुंह को मीठा करते हैं। यह इसी अक़ीदत का समरा है। हज़रत सालार ग़ाजी की हयाते आरिफाना व कार मुजाहिदाना पर मुश्तमिल है। तहक़ीकी व तदकीकी शाहकार बनाम अनवारे मसऊदी आपके हाथों में यह अक़ीदत व खुलूस का नूरानी गुलदस्ता आपकी मेहनते शाका और अन्थक कोशिशों का नतीजा है। जिसने तसनीफो तालीफ की दुनिया का सफर किया है उसे बखूबी मालूम है कि कितने दुश्वार मराहिल और सऊबतों से गुजरना पड़ता है। तब कही जाकर मन्जिले मकसूद तक बारियाबी होती है। दौराने तालीफ हज़रत मसऊदे मिल्लत साहब किबला से किताब के ताअल्लुक से गुफ्तुगू हुई तो हज़रत ने फरमाया कि सारी किताबें मवाद की हासिल कर ली है सिर्फ तारीखे मिल्लत महमूद गज़नवी गुलदस्ताए औराद बशारात मजहरिया तलाशे बिसयार के बाद भी न मिल सकी। तलाशो जुस्तजू जारी है। इन्शा अल्ला ताला ज़रूर हासिल होगी। अनवारे मसऊदी और साहिबे अनवारे मसऊदी के ताअल्लुक से अहले सुन्नत का अज़ीम मुजल्ला माहनामा अशरफिया का यह तफसरा मुलाहिजा फरमायें। मौलाना मोहम्मद अली मसऊदी अलजामियअतुल इस्लामिया रौनाही के फारिग और उलूमे शरिया के माहिर हैं। अनवारे मसऊदी आपका कलमी शाहकार है और तारीख व तज़किरा के बाब में संगमील की हैसियत रखती है। 590 सफहात पर मुस्तमिल यह किताब सैय्यदे सालार मसऊद गाजी रह0 अलैह (ग़ाजी मियां) के एहवाल व अफकार और हयात के मुख्तलिफ गोशों का अहाता करती है। माहनामा अशरफिया फरवरी 2012 सफा 46 और अनवारे मसऊदी की बाज़ खूबियों को उजागर करते हुये रकम तराज

है। फातेह हिन्दुस्तान सैय्यदे सालार मसऊद गाजी रह0 की हयाते ताबनाक और मुजाहिदाना सरगरमियों का तज़किरा तारीखी सियाक़ वो सबाक़ और मुस्तनद व मोअतबर हवालों की रोशनी में किया है। ये तज़किरा तकरीबन डेढ़ सौ सफहात पर मुहीत है। ज़बान काफी रग और अंदाजे बयान काफी दिलचस्प है उसलूबे निगारीश मुहक्किकाना संजीदा और वामानिया है। मुहावरों जरबुल मिसाल का इस्तेमाल भी मोका मेहल की मुनासिबत से किया गया है। (अशरफीया फरवरी 2012 सं 46) इस्लामी तारीख से दिलचस्पी रखने वाले हज़रात के लिये अनवरे मसऊदी किसी नेअमत से कम नही है। एज़न सफा (47) अल्लामा जल्ला मजदहुल करीम की बारगाह में दुआ है। कि मौला तआला अपनें हबीब अलैहि सलातो सलाम के सदके तुफैल हज़रत मसऊदे मिल्लत को उम्रे खिज्र अता फरमाए। ता देर हम पर हज़रत का साया कायम व दायम रखे। दुवा अज़मन व जुमल जहां अमीनबाद।

नियाज़मंद

गुल मोहम्मद अलवी

खादिम अस्सकाफतुल

मसऊदिया अरबी कालेज रिसिया मोड़

बहराइच शरीफ (यू.पी)

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जीवन परिचय हज़रत सैय्यद सालार मसऊद गाज़ी रह0

नामो नसब और माता पिता– आपका नाम हजरत सै0 साल़ार मसऊद गाजी रह0 है । आप हजरत शेर–ए–खुदा अली मुर्तुजा करम अल्लाहु तआला वजुहल करीम के पुत्र हजरत इमाम मोहम्मद बिन हन्फिया रजी अल्लाह अन्हु की नस्ले पाक से हैं। और शाहू सालार आपके पिता हैं। आपकी माता का नाम सतरे मुअल्ला है। जो सुल्तान सुबकतीन की शहजादी और सुल्तान महमूद गजनवी की बहन हैं।

मोहम्मद बिन हन्फिया ने कई शादियां कीं जिनसे बहुत सी औलादे पैदा हुईं। मगर तमाम बीवियों और औलादों के नामों की तफसील नहीं मिलती है। इब्ने कसीर लिखते हैं।

मोहम्मद बिन हन्फिया की अनेक बीवियों से अब्दुल्ला, हमजा, अली, जाफर, अकबर, हसन, इब्राहीम, कासिम, अब्दुर्रहमान, जाफरूल असगर, औन, और रूकईया हैं।

हजरत मोहम्मद बिन हन्फिया, ग़ाजी बिन अली रजी0 के और दो पुत्र हजरत अब्दुल मन्नान व हजरत अब्दुल फत्ताह रजी0 थे जिनमे से हजरत सै0 सालार मसऊद गाजी अलैहिरहमा का सिलसिलाए नसब अब्दुल मन्नान बिन मोहम्मद बिन हन्फिया बिन अली रजीअल्लाहु अन्हु तक पहुंचता है।

सिलसिला-ए-नसब

सुल्तानुश्शोहदा सैय्यद सालर मसऊद गाजी रह0 बिन हजरत सालार साहू बिन हजरत अताउल्लाह बिन हजरत ताहिर गाजी बिन हजरत तैयब गाजी बिन हजरत मोहम्मद गाजी बिन हजरत उमर गाजी बिन हजरत आसिफ गाजी बिन हरजत बत्ताल गाजी बिन, हजरत अब्दुल मन्ना गाजी बिन हजरत इमाम मोहम्मद बिन हन्फिया गाजी बिन अमीररूल मोमिनीन हजरत अली शेरे खुदा रजी0।

इब्ने कसीर के ऊपर लिखे गये नामों में अब्दुल मन्नान का

जिकर नहीं मगर मोहम्मद बिन हन्फिया की सन्तानों की संख्या 24 थी, जिनमें से 14 और दूसरों के मुताबिक 18 पुत्र थे। उमद तुत्तालिब कथनानुसार हजरत मोहम्मद बिन हन्फिया की कुछ सन्तानें अरब के बाहर भी जा बसीं। (1) हमारे विचार से यह एक अहमद बयान है, क्योंकि यह एक एतिहासिक घटना है कि महमूदी दरबार के अल्वी भी गैर अरब देश से आये थे। (2) मुमकिन है उन्हीं में अब्दुल मन्ना और अब्दुल फत्ताह भी हों जिनका जिकर सैर व इतिहास के लेखकों नें बाद में आकर बसने की वजह से छोड़ दिया हो। (3) मोलवी अब्दुल्ला खां अल्वी लेखक इतिहास कटरा मानकपुर। (4) पेज नं0 61 पर लिखते हैं कि हजरत जाफरूल अकबर इब्ने मोहम्मद बिन हन्फिया को अब्दुल मन्नान भी कहते थे।

सालार शाहू की अजमेर यात्रा

हजरत सालार शाहू अलैहिर्रहमा युद्व कौशल में बड़े माहिर थे। वह गजनवी सेना के एक बहादुर सिपहसालार थे। सुल्तान को उन पर बड़ा भरोसा था। और वह उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखता था। सुल्तान महमूद गजनवी ने अजमेर का फतह करने के बाद वहां का प्रबन्ध मुजफ्फर खां, 2 के सुपुर्द कर दिया था। लेकिन पास पड़ोस के राजाओं की बार बार चढ़ाई और कूटनीतिक चालों से मुजफ्फर खां तंग आ गया और मजबूर होकर अपने आपको किले के अन्दर सुरक्षित कर लिया तथा सहायता के लिए चार लोगों का दल गठित करके सुल्तान की सेवा में गजनी भेजा। इन चार सदस्य दल ने वहां पहुंच कर बगावत तथा कूटनीतिक चाल चलने वालों के अत्याचारों की मुकम्मल कहानी सुल्तान को सुनाई और बताया राय भैरोन और सोभकरन ने अपने 44 बहादुर सदरारों के साथ मुजफ्फर खां को किले में घेर रखा है तथा मुसलमानों को हलाक व बर्बाद कर देने के दर पे हैं। यह सुनकर सुल्तान की रगे हमियत भड़क उठी और उसने वहां पहुंचे दल को भरपूर इत्मिनान दिलाया और मुजफ्फर खां की सहायता का पक्का

वादा किया। सुल्तान ने अपने एक खास मन्त्री हसन मेमन्दी और दूसरे सलाहकारों से मशविरा के बाद साज हजार दक्ष बहादुर सेना की एक बड़ी टुकड़ी हजरत सालार शाहू के अधीन करके और अच्छी तथा विशेष तलवारें, खन्जर और ईराकी घोड़े हिन्दुस्तान की तरफ रवाना किया।

हजरत सालार शाहू गजनी से कन्धार आये और सेना की यह बड़ी टुकड़ी लेकर नवीं जिलहिज्ज चार सौ एक हिजरी ठठ् के रास्ते चलते हुए अजमेर का रूख किया और मन्जिल ब मन्जिल तय करते हुए जब अजमेर के निकट पहुंचे तो तीन मन्जिल के फासले पर एक नदी के किनारे डेरा डाला।

हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम से मुलाकात (भेंट)

नदी के किनारे डेरा डालने के बाद हजरत सालार शाहू की मुलाकात हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम से हुई। हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम ने आपको एक नेक सआदतमन्द पुत्र पैदा होने और शत्रुओं पर फतह पाने की खुशखबरी सुनाई और फरमाया कि ताजा वजू करके दो रकअत नमाज नफिल इस तरह अदा करो कि हर रकअत में सूरह फातिहा के बाद ग्यारह बार इजा जा आ नस्रूल्लाहि आखिर तक पढ़ो फिर सलाम के बाद सजदे में सर रखकर सुब्हो कुद्दूसो रब्बना व रब्बुल मलायका वरन्नहु और तीन बार दुरूद शरीफ पढ़कर हक तआला से दुआ करो इन्शा अल्ला कुबूल होगी। इस अमल–ए–खास के बाद हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम ने आपसे एक वृक्ष की ओर इशारा करके फरमाया इस वृक्ष के पास जाओ जो मेवा हाथ लगे तोड़ लो और अपने पास सम्भाल कर रखो आधा स्वयं खा लेना और आधा अपनी पत्नी को खिला देना।

अजमेर की फतह

हजरत सालार शाहू जब खिज्र अलै0 से मुलाकात के बाद अपने खेमें में आये और उधर मुजफ्फर खां को हजरत सालार साहू के आने की सूचना मिली तो उसके हौसले बढ़ गये और खुशी के नक्कारे बजवाये!

शत्रु की सेना जिसने मुजफ्फर खां को किले में घेर रखा था समझा कि सुलतान महमूद आ पहुंचा है इस तरह दो तरफा हमले का खतरा महसूस करते हुए राय भैरोन और सोमकरन किले के घेरे से अपनी सेना हटा ली और सात कोस की दूरी पर खोकरह पहाड़ की आड़ में मोर्चा जमा लिया!

मुजफ्फर खां ने हजरत सालार शाहू का जोरदार स्वागत किया! हजरत सालार शाहू अपनी सेना के साथ हौज़े बहैकर के किनारे पडाव डाला मुजफ्फर खां से राय–मशवरा के बाद शत्रु के मुकाबले में सेना को मैदाने जंग में उतारा! तीन दिन तक घमासान जंग होती रही! दोनों ओर के हजारों लोग हताहत हुए! अन्त में मुसलमानोंने इतना जोरदार हमला किया कि शत्रु सेना के छक्के छूट गये! शत्रु सेना को हारकर पीछे हटना पड़ा! राय भैरोन और सोमकरन के पैर उखड़ गये और अन्य राजा महाराजा जो राजा भैरोन व राजा सोमकरन की सहायता के लिये आये थे उन्हें भी मुंह की खानी पड़ी और मैदाने जंग से भागना पडा ईश्वर ने साथ दिया सफलता पर सफलता मिलती गयी शत्रु पक्ष का बहुत सा माल व दौलत सालार शाहू के हाथ लगा जीत के बाद हजरत ने अपने शहीद जांबाजों को दफन किया फातिहा पढ़कर रात को अपने खेमें में आराम किया और सुबह को अजमेर आ गये! इसके बाद सबसे पहले जो काम किया वह यक कि किले के सामने एक आलिशान मस्जिद बनवाई खुतबे में सुलतान का नाम शामिल किया उसके नाम का सिक्का चलाया फिर अजमेर फतह करने की खुशखबरी सुनाने के लिए सुल्तान के पास दूत भेजा! अजमेर को फतह कर लेने की खुशखबरी सुनकर सुलतान बहुत खुश हुआ और दूतों के द्वारा बहुत सा इनाम–व– इकराम कुछ ईराकी घोड़े कपडे और बहुत सी चीजें सालार शाहू के लिए भेजा और आपके नाम विलायता हिन्दी का फरमान जारी किया और बीवी सतरे मोअल्ला शाही सुरक्षा में उनके पति हजरत सालार शाहू के पास अजमेर भेज दिया! चुनानचे 8 सव्वालुल मुकर्रम 404 हिजरी को सतरे मोअल्ला अजमेर पहुंच गयीं!

सैय्यद सालार मसऊद ग़ाजी रह0 का जन्म

जब हजतर सतरे मोअल्ला अजमेर पहुंची तो हजरत सालार शाहू ने वह मेवा जो हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम के हुक्म से एक वृक्ष से तोड कर अपने पास सुरक्षित रखा था उसक आधा स्वयं खाया और आधा अपनी पत्नी सतरे मोअल्ला को खिलाया! उसकी बरकत जाहिर हुई और उनके यहां एक चांद सा बच्चा 21 रजब 405 हिजरी बरोज इतवार सुबह के समय पैदा हुआ आप बहुत हसीन व जमील थे जनाब अकबर वारसी ने सन–ए–विलादत यूं नज्म किया है।

हुए पैदा जो गाजी मसऊद
जुल्मतों जहल हो गयी काफूर
अकबर वारसी पे हैं इल्हाम
लिख विलादत का साल–ए–मतला नूर
(405हिजरी)

आपके जन्म के बारे में पाक रूहें और नजूमी बहुत पहले से भविष्वाणी करते रहे! हजरत मोहम्मद साहब का सा जमाल व कमाल और चौथे खलीफा हजरत अली रजि–अल्लाह तआला जैसा जाहो जलाल आपमें दिखाई दे रहा था!

सर त ब कदम हैबत ए अब्बास अलमदार
सूरत सा आया दबदबा ए हयदरे करीर

हजरत सालार शाहू ने अपने बेटे के जन्म की खुशी में तीन दिन तक जश्न मनाया! यतीमों फकीरों मिस्कीनों में धन दौलत बांटा जरा जवाहर बतौर खैरात तकसीम किया और अपनी सेना को भी खूब इनाम व इकराम से नवाजा बेटे की खुशखबरी स सुनाने के लिए बहुत से हिन्दुस्तानी तोहफे देकर कुछ कासिदों को सुलतान महमूद के पास भेजा! सुलतान बहुत खुश हुआ कासिदों को इनाम व इकराम अता किया और एक विशेष शाही फरमान पर हस्ताक्षर करके रियासते हिन्द बनाम सालार मसऊद

मुबारक हो साथ ही यह हुक्म भी भेजा कि कन्नौज के राजा को समझा बुझाकर अपने आधीन कर लो और अगर वह तुम्हारी आधीनता स्वीकार न करें तो खबर करो! कन्नौज का राजा राय अजय पाल बहुत घमंडी और निरांकुश था! हजरत सालार शाहू के बार बार समझाने पर भी आधीनता स्वीकार न की उल्टे उसकी सर्कशी बढती चली गयी! अजमेर पर सालार शाहू के अधिकार के बाद वहां के ग़ैर मुस्लिम सरदार कन्नौज भाग गये और राजा कन्नौज के उक्सावे में आकर सुलतान के सीमावर्ती इलाकों में हमला करते रहे! राजा कन्नौज को सूलतान ने विरूद्व भडकाते रहते आखिर कार सरकार शाहू ने राय अजय पाल से तंग आकर सुलतान को सारे हालात से आगाह किया।

भांजे का दीदार

सुलतान को जब यह सूचना मिली कि कन्नौज का राजा आधीनता स्वीकार करने के बजाय सरकशी पर आमादा है तो सुलतान उसे कुचलने के लिए बहादुर सिपाहियों का एक लशकर लेकर अजमेर आया अपने प्यारे भांजे सैय्यद सालार मसऊद गाजी को देखा और बेहद खुश हुआ सैय्यद सालार मसऊद गाजी जाहिरी व बातिनी कमाल व जमाल और अशरफुल मखलूकात की जीती जागती तस्वीर थे । सुलतान उसे देखते ही समझ गया कि मेरा यह भांजा सूरज और चांद बनकर चमकेगा और इसी मर्द ए मुजाहिद क

हाथों हिन्द में इस्लाम की शमां रौशन होगी! इसलिए जब तक अजमेर में कयाम रहा प्यारे भांजे से दिल बहलाता और उसे निगाहों से ओझल न हाने देता! अजमेर के किले में कुछ दिन आराम के बाद सुलतान अपने जंगी मन्सूबों पर अमल करने की गरज से सेनाए तैयार की सालार शाहू व मुजफ्फर खां को सेनापति बनाकर कन्नौज पर चढाई की तैयारी कर दी पहले मथुरा पहुंचा ओर उसके चारों तरफ आस पास जहां जहां भी बागियों का पता चला उनको कुचलते हुए 406 हिजरी अर्थात 1015 ई0 में राजा कन्नौज के सर पर पहुंचा राजा मुकाबले की ताब न लाकर बगैर लडे भिडे फरार हो

गया, इसी हमले में सुल्तान ने और भी कई किले जीत लिए कन्नौज को जीत कर सालार शाहू को अपना नायब बनाकर हिन्दुस्तान के जीते हुए तमाम इलाकों का इन्तजाम शाहू के सुपुर्द कर दिया और खुद गजनी लौट गया। सालार शाहू ने अजमेर पहुंचकर जीते हुए तमाम इलाकों पर अधिकार बनाये रखने के लिए और प्रजा की देखभाल के लिए अनेक अधिकारी नियुक्त किये और स्वयं अजमेर के किले में जीते हुए इलाकों का इन्तजाम संभाला।

तालीम व तरबियत (शिक्षा-दीक्षा)

सुल्तान शोहदा हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी रह0 की उम्र जब चार साल चार माह चार दिन की हुई आपके पिता जिकादा चार सौ नौ हिजरी यानि 1018 ई0 में उस समय के सबसे महान व बुद्धिमान उस्ताद सैय्यद इब्राहीम बारह हजारी साहब की खिदमत में लाये उन्होंने अपने इस लायक शागिर्द की शफकत व मुहब्बत के साथ बिसमिल्लाह करायी। यानि पढ़ाना लिखाना शुरू किया। पिता ने इस खुशी में उस्तादे मुहतरम को 4 घोड़े और जरो जवाहर बतौर नजराना पेश किया। और खूब खैरात बांटी गरीबों, फकीरों और मिस्कीनों को मालामाल कर दिया। इस बच्चे को देख कर उस्ताद यह अच्छी तरह जान गये थे कि यह कोई मामूली बच्चा नहीं बल्कि यही बच्चा आगे चलकर आने वाली हिन्दुस्तान की तकदीर लिखेगा। उन्होंने खूब मेहनत करके बड़ी मोहब्बत व शफकत के साथ उसे हर तरह के उलूम से आरास्ता किया।

उरूजे आदमे खाकी से अन्जुम सहमे जाते हैं।
कि यह टूटा हुआ तारा मह–कामिल न बन जाये।।

अल्लाह रब्बुल इज्जत ने हजरत गाजी अलैहिरहमा को इल्मे लदुन्नी अता फरमाया था और विलायत की नेयमत से भी सरफराज फरमाया था। केवल 9 साल की उम्र में तमाम जाहिरी व बातिनी उलूम से आरास्ता होकर हद–ए–कमाल को पहुंच चुके थे। अर्थात् तमाम विद्या में दक्षता प्राप्त कर ली थी।

जौके इबादत और शब-व-रोज के मामूलात

(ईश्वर पूजा में रूचि और दिनचर्या)

हजरत सैय्यद सालारमसऊद गाजी रह0 बचपन से ही बड़े नेक धार्मिक विचारों वाले और एक ईश्वर की पूजा पाठ में आस्था रखते थे। उम्र बढ़ने के साथ.साथ आप की यह आस्था बढ़ती गयी। जब आप 10 साल की उम्र को पहुंचे तो उसमे और बढ़ोत्तरी होती गयी। आप पूरी पूरी रात इबादत में लगे रहते थे। और दिन में तिलावते कुरआन पाक अल्ला का जिक्र और दुरूद शरीफ पड़ा करते थे। नमाजे फज्र के बाद दिन निकलने के बाद नमाजे चाश्त भी पढ़ते थे। इन कामों से फुरसत के बाद वह दिवाने आम में तशरीफ लाते और धर्मगुरूओं, दर्वेशों और बुजुर्गों से मुलाकतें करते और उनकी बातें सुनते, फिर सबके साथ बैठकर दोपहर का भोजन करते और दोपहर के वक्त महल सराह में जाकर थोड़ी देर आराम करते। जोहर की नमाज के बाद दिवाने आम में तशरीफ लाते, अफसरों, अधिकारियों से मुलाकात करते हम उम्र शहजादों, अमीर जादों के साथ सैर व शिकार के लिए निकल जाते। नेजाबाजी, तीरनदाजी चौगान में शाम तक दिल बहलाते युद्ध के नये नये तरीके सीखते और महारत हासिल करते नये तरीके से जिहाद करने का अभ्यास करते।

साहिबे मिराते मसऊदी लिखते हैं–

रजब सालार हठीला जिनका नाम अजब सालार गाजी था, सतरे मुअल्ला के साथ गजनी से अजमेर आये थे। उस समय उनकी आयु 22 साल से ज्यादा थी। सैय्यद सालार मसऊद गाजी और आपके हम उम्र, उमरा, व बादशाहों के लड़के जमा होकर शिकार करते, घुड़सवारी, तीरन्दाजी, नेजाबाजी का हुनर उनसे सीखते थे।

सालार शाहू की काहीलर के बागियों की सरकूबी

जब सालार शाहू ने दस साल तक अजमेर में कयाम करके अमनो, अमान अर्थात शान्ति कायम कर ली और हिन्दुस्तान के जीते इलाकों पर अपना दबदबा बना लिया और विरोधियों पर पूरी तौर से गालिब आने के बाद मुतमईन हो गये, उनसे आसानी से लगान (खिराज) मिलने लगा तो उस समय सुल्तान महमूद गजनवी के पास नाजिम काहिलर मलिक छज्जू की ओर से यह शिकायत पहुंची कि दामने कोह के सरकस कुफ्फार एक संयुक्त मोर्चा बनाकर काहिलर के आस पास के इलाके को ताराज कर देने की कोशिश में लगे हुए हैं। सुल्तान उस वक्त खुरासान की मुहिम पर था। अतः उसने खबर पाते ही सालार शाहू के नाम सख्त अल्फाज में शाही फरमान लिखा कि आधी सेना अजमेर में छोड़ कर दूसरी आधी सेना लेकर तुरन्त काहिलर पहुंचों। बागियों की सरकूबी करके उन्हें उनके अन्जाम तक पहुंचा दो, मैं एक जरूरी मुहिम पर हूं वरना मैं खुद उनकी खबर लेता। काहिलर पर्वत कशमीर की घाटी में वाके था। उसका किला बड़ा ही आलीशान था। और मरकजी हैसियत रखता था। उस पर राय गुलचन्द का कब्जा था जो बड़ा दौलतमंद और मगरूर राजा था। जब सुल्तान ने कन्नौज पर चढ़ाई की थी तो अतराफे कशमीर में पहुंच कर उस समय बड़ी मुश्किल से राय गुलचन्द को 50 हजार सिपाहियों के साथ पराजित करके किले को फतह किया। और वहां अपना हाकिम नियुक्त किया। हजरत सालार शाहू, सुल्तान महमूद गजनवी का संदेश पाकर अजमेर का किला और अपने इकलौते पुत्र व पत्नी सतरे मुअल्ला को मीर सैयद इब्राहीम बारह हजारी, मुजफ्फर खां व अन्य योग्य एवं बहादुर उम्रा की निगरानी में सुपुर्द करके आधी फौज लेकर काहिलर की ओर रवाना हुये। अगर चे सरकार शाहू काहिलर पहुंचने में बड़ी तेजी दिखाई मगर बागियों ने नाजिम काहिलर को फुर्सत न दी। काहिलर को एक बड़ी फौज ने घेर लिया तो काहिलर के हाकिम ने अपने को एक किले में बन्द कर लिया हजरत सालार शाहू के पहुंचते पहुंचते शत्रु सैनिक

काहिलर को पूरी तरह लूट चुके थे और वहां से लौट रहे थे कि सालार शाहू ने उन्हें घेर लिया और युद्ध शुरू हो गया। इस्लामी सेना हालांकि अभी रास्ता और सफर की मुसीबतों को झेलते हुए भूखी प्यासी और थकी हारी थी एक दम सांस लेने का मौका भी नहीं पाया था लेकिन बहुत बहादुरी के साथ शत्रु सेना का मुकाबला किया कई दिन तक जंग जारी रही। आखिर कार अल्लाह के फजल से इस्लामी सेना को कामयाबी मिली। शत्रु सेना को मुंह की खानी पड़ी। इस युद्ध में हजारों आदमी मारे गये और शत्रु पक्ष के चालिस सरदार गिरफतार हुए। जीत की खुशखबरी सुन कर सुल्तान बहुत खुश हुआ और उसने एक फरमान के द्वारा काहिलर का जीता हुआ इलाका सालार शाहू को इनाम में दिया।

काहिलर की यात्रा और आपको जहर देकर मारने की कोशिश

जब हजरत सालार शाहू रह0 ने काहिलर जीत लिया। और उसका सारा इलाका आपके अधीन हो गया और जीत सुल्तान के आदेशानुसार आपने यहां कयाम किया तो आपने अपने सुपुत्र हजरत मसऊद गाजी रह0 और बीबी सतरे मुअल्ला को काहिलर बुलाया सैयद सालार मसऊद गाजी रह0 अपने पिता की आज्ञा पाकर अपने विशेष सैनिक टुकड़ी और वफादार सेवकों के साथ अपने माता को लेकर दूसरे दिन वे काहिलर को रवाना हुये। आप शैर व शिकार के बहुत शौकीन थे रास्ते में सैर करते शिकार करते और सफर की मुसीबतें झेलते हुए रावल कस्बा पहुंचे यहां आपको एक बहुत ही खतरनाक साजिश का सामना करना पड़ा।

ख्वाजा अहमद इब्ने हसन मेमन्दी जो सुल्तान महमूद गजनवी का खास वजीर था सलतनत के तमाम कामों में उसका बड़ा प्रभाव था वह मन ही मन आपसे जलता था वह समझता था कि इनके रहते हुए शासन में अधिक समय तक टिक पाना मेरे लिए असम्भव है। यही कारण था कि बाप बेटे दोनों के विरूद्ध वजीर और उसके दूसरे

संबन्धियों के सीनों में हसद (ईर्ष्या) की ज्वाला धहकने लगी और वह सदैव आपको हानि पहुंचाने और आपको नीचा दिखाने की फिक्र में रहने लगे। कस्बा रावल का बदनियत वजीर उनके दो साले शिव कर और विष्णु के आधीन था यह दोनों सैयद सालार मसऊद गाजी रह0 की बारगाह में आये और उनसे विनती की कि हुजूर कस्बे के अन्दर हमारे गरीब खाने पर चलकर आराम के साथ विश्राम करें। और हमें मेहमान नवाजी का मौका दें हम आपका बड़ा सम्मान करते हैं और आपकी सेवा करना चाहते हैं। किन्तु आपकी दिव्य दृष्टि ने उन दोनों का फरेब पहचान लिया और साथ वहां जाने से इनकार कर दिया।

रात कस्बा रावल से बाहर ही गुजारी और सुबह को काहिलर का रूख किया हजार इन्कार के बावजूद वहां से रवानगी समय उन दोनों ने 2 सौ मन मिठाइयां आपके साथियों के हवाले कर दिया। और कहा की यदि आप इन मिठाइयों को कबूल नहीं करेंगे तो हमारा दिल टूट जायेगा। हजरत सैयद सालार मसऊद गाजी रह0 ने उनकी चालें अच्छी तरह समझते थे कि मिठाइयों की आड़ में क्या साजिश रची जा रही है। मसलहतन उन्होंने मिठाइयों कुबूल की और आपने अच्छे अखलाक का प्रदर्शन करते हुए उन्हें रवाना किया उन दोनों के जाने के बाद आपने अपने साथियों को सख्त ताकीद की कि खबरदार मिठाइय को इस जबान पर मत रखें। कस्बा रावल से चलकर जब अगली मन्जिल पर पड़ाव डाला तो मिठाई एक कुत्ते को खिलाई गई कुत्ता फौरन ही मर गया। सारे काफिले वालों पर यह बात खुल गई कि अहमद बिन मेमन्दी उन बदनियत अजीजों ने सैयद सालार मसऊद गाजी रह0 के साथ धोखा और फरेब करके कत्ल करने की साजिश की। मगर जिसे अल्लाह रखे उसे कौन चखे। किसी कवि ने ठीक ही कहा है।

फानूस बनके जिसकी हिफाजत हवा करे।
वह शम्मा क्या बुझे जिसे रौशन खुदा करे।।

इतनी बड़ी खतरनाक साजिश पर प्रतिक्रिया होनी जरूरी थी आपके जानिसारे वफादारों ने गम व गुस्से की लहर दौड़ गई उन सबने यह फैसला किया कि ऐसे गद्दरों के साथ रहम करना और उनको यूंहि छोड़ देना मुनासिब नहीं वह रात लोगों ने बड़ी बेचैनी से गुजारी और सुबह को बदला लेने की भावना से सैयद सालार मसऊद गाजी रह0 के साथ लश्कर लेकर रावल पहुंचे शिवकन्द को जब यह सूचना मिली तो वह भी अपनी सेना लेकर युद्ध के मैदान में आ डटा। दोनों ओर की सेनाओं ने जोर दार मुकाबला हुआ बहुत से लोग हताहत हुए। शिवकन्द की हार हुई और उसे गिरफतार करके आपके सामने पेश किया गया। आपने उसे सम्बोधित करते हुए कहा क्यों ? शिवकन्द शेर के बच्चे से बाजी गिरी करता है क्या तुझे नहीं पता मैं असद उल्ला का पुत्र हूं। उस वक्त आपकी आयु केवल 10 वर्ष की थी यह उनके युद्ध का पहला अवसर था। जिसे आपने बड़ी बहादुरी व सफलता के साथ अन्जाम दिया। आपकी माता सतरे मुअल्ला ने खुदा का शुक्र अदा किया और अल्लाह के नाम पर खूब सदका खैरात किया। सेना को घोड़े व कपड़े धन दौलत इनाम में दिये गये।

सुल्तानुस्शोहदा ने इस घटना को विस्तार के साथ लिख कर एक एलची के द्वारा सुल्तानर के दरबार में भेजा और स्वयं काहिलर की तरफ कूच किया सुल्तान के पास एक एलची (पत्रवाहक) के पहुंचने के पहले शिवकन्द का भाई युद्ध भूमि से भाग कर गजनी अपने बहनोई वजीर अहमद बिन हसन मेमन्दी के पास पहुंचा और उसके सामने अपनी आप बीती दास्ताने गम से सुल्तान को सूचित किया कि सालार मसऊद ने बे कुसूर हमारे शहर और घर बार को लूट लिया। शिकन्द और उसकी पत्नी व बेटों को कैद कर लिया। यह समाचार सुनकर सुल्तान असमन्जस्य में पड़ गया। उसकी समझ नहीं आ रहा था कि क्या किया जाये। इसी बीच आपका एलची दरबार में पहुंच गया और सैयद सालार मसऊद गाजी रह0 द्वारा लिखा हुआ पत्र पेश किया जब सुल्तान हकीकत से आगाह हुआ तो उसकी आंखे खुल गयीं सख्त अफसोस किया सुल्तान ने सालार मसऊद को शिवकन्द के भाई द्वारा दी गयी जानकारी के बारे में सूचित किया और यह भी लिखा कि आपके पत्र से मेरी सारी गलत फैमी दूर हो गयीं गद्दारों द्वारा रची गयी साजिश से मुझे बड़ा दुख पहुंचा अब जब शिवकन्द और उसके स्त्री व

बच्चों को लेकर आओगे तो इसका न्याय होगा सुल्तान का यह पत्र आपको काहिलर पहुंचने से पहले रास्ते में मिला आप बेहद खुश हुए उधर हसन मेमन्दी के घर में शोक छा गया क्योंकि उसकी चाल उल्टी पड़ गयी और वह जो फूट डालना चाहता था उसमें कामयाब न हो सका।

हजरत सालार शाहू रह0 अपने इस नेक और बहादुर पुत्र से मुलाकात के लिए बेचैन थे और चाहते थे कि जल्दी मुलाकात हो जाये। जब लगभग एक कोस का फासला रह गया तो पिता ने खुद आगे बढ़ कर अपने बेटे से रास्ते में मुलाकात की बेटे की नजर जैसे ही अपने पिता पर पड़ी तो फौरन ही अपने घोड़े से उतर कर और अपने पिता के पैर छुए। सालार शाहू ने भी घोड़े से उतर कर पुत्र को गले लगाया था। चूमा और उसे युवराज घोषित किया। शाही वस्त्र पहनाये हीरे मोतियों से जड़ी टोपी सर पर रखी। सोने का पटका कमर पर बांधा और एक विशेष ईराकी घोड़ा सवारी के लिए भेंट किया। फिर पिता और पुत्र दोनों सवार होकर घर की ओर रवाना हुए। रास्ता चलते हुए जिन लोगों की निगाहें उन पर पड़ती उनकी सुन्दरता पर मुग्ध हो जाता। लोगों को ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे ईसाई धर्म प्रर्वतक हजरत ईसा अलै0 आकाश से धरती पर उतर आये हैं अथवा मोहम्मद मेहदी जिनका संसार के अन्तिम दिनों में जहूर होना है कहीं यह वही तो नहीं। आखिर ऐसे सुन्दर चेहरे वाले इस लड़के का सारा जहां दीवाना है। घर पहुंच कर कई दिनों तक खुशियां मनाई गई एवं खैरात बांटी गई और सेना को पुरस्कृत किया गया। सुल्तान हकीकत से आगाह हुआ तो उसकी आंखे खुल गयीं सख्त अफसोस किया सुल्तान ने सालार मसऊद को शिवकन्द के भाई द्वारा दी गयी जानकारी के बारे में सूचित किया और यह भी लिखा कि आपके पत्र से मेरी सारी गलत फैमी दूर हो गयीं गद्दारों द्वारा रची गयी साजिश से मुझे बड़ा दुख पहुंचा अब जब शिवकन्द और उसके स्त्री व बच्चों को लेकर आओगे तो इसका न्याय होगा सुल्तान का यह पत्र आपको काहिलर पहुंचने से पहले रास्ते में मिला आप बेहद खुश हुए उधर हसन मेमन्दी के घर में शोक छा गया क्योंकि उसकी चाल उल्टी पड़ गयी और वह जो फूट डालना चाहता था उसमें कामयाब न हो सका।

हजरत सालार शाहू रह0 अपने इस नेक और बहादुर पुत्र से मुलाकात के लिए बेचैन थे और चाहते थे कि जल्दी मुलाकात हो जाये। जब लगभग एक कोस का फासला रह गया तो पिता ने खुद आगे बढ़

Scanned by CamScanner

कर अपने बेटे से रास्ते में मुलाकात की बेटे की नजर जैसे ही अपने पिता पर पड़ी तो फौरन ही अपने घोड़े से उतर कर और अपने पिता के पैर छुए। सालार शाहू ने भी घोड़े से उतर कर पुत्र को गले लगाया था। चूमा और उसे युवराज घोषित किया। शाही वस्त्र पहनाये हीरे मोतियों से जड़ी टोपी सर पर रखी। सोने का पटका कमर पर बांधा और एक विशेष ईराकी घोड़ा सवारी के लिए भेंट किया। फिर पिता और पुत्र दोनों सवार होकर घर की ओर रवाना हुए। रास्ता चलते हुए जिन लोगों की निगाहें उन पर पड़ती उनकी सुन्दरता पर मुग्ध हो जाता। लोगों को ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे ईसाई धर्म प्रर्वतक हजरत ईसा अलै0 आकाश से धरती पर उतर आये हैं अथवा मोहम्मद मेहदी जिनका संसार के अन्तिम दिनों में जहूर होना है कहीं यह वही तो नहीं। आखिर ऐसे सुन्दर चेहरे वाले इस लड़के का सारा जहां दीवाना है। घर पहुंच कर कई दिनों तक खुशियां मनाई गई एवं खैरात बांटी गई और सेना को पुरस्कृत किया गया।

सैयद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमा का भारत आगमन

सुल्तान महमूद गजनवी वास्तव में एक वीर बहिम्मत, युद्ध कुशल, दबदबे वाले और दूरन्देश शासक थे जिन्हों ने बड़ी शान व शौकत के साथ शासन किया। एक बड़े विजेता के रूप में संसार में प्रसिद्ध हुए किन्तु अफसोस इस बात का कि उनके शासन के अन्तिम दिनों में पूरा गजनवी परिवार आपसी भेदभाव व फूट कर शिकार हो गया और गजनवी सल्तनत जो एक मजबूत हुकूमत बन चुकी थी उसकी बुनियादें हिलने लगी थीं और सुल्तान के महल में एक भूचाल सा आ गया।

तारीख फरिश्ता में है कि हक गोई व बेबाकी मसऊद का शेवा था। इस कारण वह अक्सर बातों में अपने पिता की हां में हां नहीं मिलाते थे और अपनी बात मनवाने के लिए पिता से हठकर बैठते थे इसी लिए सुल्तान महमूद उसे न पसन्द करते थे वह अमीर मोहम्मद को बहुत

चाहते थे, क्योंकि वह पिता की हर बात में हां मे हां मिलाते थे। मसऊद से महमूद की नफरत और अमीर मोहम्मद से मुहब्बत ने यहां तक तूल खींचा कि महमूद मसऊद की हर तरह से हक तलफी की और बगदाद के खलीफा से यह सिफारिश की कि शाही फरमानों और उपलब्धियों में अमीर मोहम्मद का नाम मसऊद से पहले लिखा जाये। तबकाते नासिरी के अनुवादक ने अबुनस्र मिस्काती के हवाले से यह बात नक्ल की है कि जब सुल्तान महमूद का सिफारिशी पत्र दरबार में पढ़ा गया तो उसको सुनकर तमाम दरबारियों को अफसोस हुआ और मसऊद की इस हकतल्फी को सभी ने न मुनासिब ख्याल किया। जब अमीर मसऊद दरबार से उठकर बाहर आया तो अबुनस्र भी पीछे-पीछे आया और उससे कहा कि तुम्हारी हकतल्फी पर मुझे और तमाम दरबारियों को बड़ा दुःख है। मसऊद ने उससे जवाब में कहा कि इसकी चिन्ता न करो। क्या तुमने बुजुर्गों का यह कौल नहीं सुना कि तलवार खत से ज्यादा सच्ची और मजबूत होती है। अर्थात इसका फैसला तलवार करेगी अतः सत्ता पर अधिकार की होढ़ और आपसी फूट ने गजनी सलतनत की नींव हिला दी। सारे लोग एक दूसरे को नींचा दिखाने की फिक्र में थे। सुल्तान महमूद के देहान्त से 5-6 साल पहले ही षड़यन्त्र रचा जाने लगा और एक दूसरे का विरोध इस हद तक बढ़ गया कि दरबारी दो गुटों में बंट गये। अतः महमूद की आंखे बन्द होते ही दोनों बेटों में दूरी इतनी बढ़ी दोनों एक दूसरे के खून के प्यासे हो गये चुनांचे बाहिकी ने एक स्थान पर लिखा है कि महमूद के जमाने में दो पार्टियां थी, जिनमें एक को महमूदी या पिदरी कहते थे और दूसरे को मसऊदी। सुल्तान महमूद ने अपने बेटे मसऊद से नाराज होकर कुछ दिनों के लिए उसको सुल्तान के किले में कैद कर दिया था यह एक पुख्ता ऐतिहासिक घटना है कि महमूद के बाद मसऊद ने सबसे अव्वल अपने भाई मोहम्मद को कैद करके अन्धा करवा दिया था फिर महमूदी पार्टी के आदमियों को चुन चुनकर सूली पर चढ़ा दिया। अपने बाप के तीसरे वजीर हनकमीकाईल को बागी होने का इल्जाम लगा कर फांसी दे दी औ सैयद सालार मसऊद गाजी के खानदान बैर रखने वाले वजीर अहमद

सैयद सालार मसऊद गाजी के खानदान बैर रखने वाले वजीर अहमद बिन हसन मेमन्दी को कैद से निकाल कर दोबारा वजीर बनाया।

स्वयं महमूद गजनवी की हुकूमत करने का ढंग जैसा कि साहिबे आबे कौसर लिखते हैं, मोहम्मद बिन कासिम के लगभग तीन सौ साल बाद सुल्तान महमूद गजनवी ने भारत भूमि पर कदम रखा और दूर–दूर तक के एक बड़े क्षेत्र पर अधिकार कर लिया, लेकिन महमूद की आंखें मन्दिरों के माल–दौलत व चांदी सोने की चमक से चौंधिया गयीं थी। उसने अपनी इस बड़ी विजय से माल व दौलत जमा करने के अलावा और कोई ठोस फायदा न उठाया और गुजरात, कच्छ, कन्नौज, कालिन्जर, कांगड़ा के राजाओं को पराजित करने के बावजूद उत्तरी भारत में इस्लामी हुकूमत की बुनियाद डालने का कार्य न किया। (आबे कौसर पृष्ठ 89)

हजरत सैयद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमा जिन्हें शासन करने या सत्ता पाने में कोई रूचि न थी। आपकी नजर केवल इस्लाम के प्रचार व परसार पर थी और शासन का बुनियादी मकसद भी आप धर्म का परचार व परसार ही समझते थे कुदरत ने आपको इस्लामी फिक्र व शऊर अता किया था इसी लिए सत्ता की रस्सा कशी और अप्रिय माहौल से दुःखी होकर अपना दामन बचाते हुए अपनी नौजवानों की एक छोटी सी टुकड़ी लेकर हिन्दुस्तान की ओर कूच किया ।

भारत में इस्लाम के परचार, परसार के लिए सुल्तान से आज्ञा लेना

जब सैयद सालार गाजी रह0 ने भरपूर महसूस कर लिया कि गजनवी परिवार में फूट बढ़ती जा रही है और इस अप्रिय माहौल में दीन–ए–इस्लाम के प्रचार व परसार का काम जो आपके जीवन का मुख्य उद्देश्य था पूरा नही हो सकता तो आपने तबलीग के लिए हिन्दुस्तान की ओ निकलने का पक्का इरादा कर लिया और अपने सुल्तान से आज्ञा मांगी। सुल्तान आपसे बेहद प्रेम करते थे वह आपके बिछड़ने के गम से परेशान हो गये और कहा कि प्यारे भांजे अगर

आपको यहां का माहौल रास नहीं आ रहा है तो दिल बहलाने के खातिर अपने मां बाप के पास काहिलर चले जाओ और सैर व शिकार करो फिर दिल बहल जाने के बाद मेरे पास लौट आना किन्तु जो मरदे मुजाहिद जज्बे इस्लामी से सराबोर हो मां–बाप के पास उसे कहां सुकून मिलने वाला था विशेष कर एक ऐसा मुजाहिद जिसके रग रग में वीरता कूट कूट कर भरी हो और हजरत अली का खून जिसकी रगो में दौड़ रहा हो।

"एकाबी रूह जब बेदार होती है जवानें में
नजर आती है उसको अपनी मन्जिल आस्मानों में"

सैयद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमा ने सुल्तान से कहा कि वाल्दैन के पास जाकर मैं क्या करूंगा अगर आज्ञा हो तो हिन्दुस्तान की ओर जाऊं और तौहीद का डंका बजाऊं इस्लाम का प्रचार व परसार करूं ताकि भारत भर में आपके नाम का खुतबा पढ़ा जाये।

सुल्तान ने हर मुमकिन कोशिश की कि आप फिलहाल हिन्दुस्तान की ओर निकलने का इरादा न करें, लेकिन उन्हें कामयाबी न मिली और वह अपने इरादे पर मजबूती से कायम रहे । ऐसे ही मौके के लिए अल्लामा इकबाल ने कहा है ।

"दो आलम से करती है बेगाना दिल को
शहादत है मतलूब, मकसूद मोमिन"

" अजब चीज है लज्जते आशनाई
न माल--ए–गनीमत न किश्वर कुशई"

सुल्तान ने न चाहते हुए भी उन्हे आज्ञा दे दी और कुछ विशेष कपड़े पांच इराकी घोड़े दो जंजीर मस्त हाथी उनके हवाले करके रुख्सत किया।

सुल्तान ने सालार शाहू को लिखा कि आपके पुत्र सालार मसऊद को कुछ दिनों के लिए एक मसलहत के तहत बाहर भेज रहा हूं। इनकी दिलजोई और इन पर निगाह जरूरी है। थोड़े दिनों के बाद

इन्हें फिर अपने पास बुला लूंगा सैयद सालार मसऊद गाजी रह0 वीरता पूर्वक शाही शान व शौकत से सुल्तान से जुदा होकर बाहर निकले। शहर से थोड़ा फासला तय करने के बाद खेमाजन हुए। आप चूंकि सुल्तान की आंखों के तारे तथा सालार शाहू की आंखों के तारे और शाही सेना से भी आपको बड़ा प्यार मिलता था। खुदा ने आपकी जात में कुछ ऐसी कशिश पैदा कर रखी थी कि ज्यों ही यह खबर फैली कि आप गजनी छोड़ कर भारत मे जिहाद करने जा रहे हैं तो शहर तथा उसके आस पास के बड़ी संख्या में लोग आपके साथ हो गये बहुत से बड़े सैनिक व अधिकारी भी आपकी लश्कर में शामिल हो गये। चुनांचे मलिक हसन अरब, अमीर अशरफ लाहौरी, मलिक नुसरतपुरी, मलिक संजर, मलिक अयाज, मलिक जांबाज, मलिक कैसर, मलिक सैदन, मलिक बैरम, मलिक दौलत, अमीर बाजाए, अपने दोस्तों व अजीजों के साथ लेकर बड़ी संख्या में आपके साथ चलने को तैयार हो गये। बहुत से जांबांज सरदार, व आम जनता अपने मित्रों व रिश्तेदारों को साथ लेकर नौकरियां छोड़ कर आपकी झण्डे के नीचे आ गये इस तरह देखते देखते 11 हजार का एक बड़ा लश्कर तैयार हो गया मीराते मसऊदी के हाथ से लिखी हुई पुस्तक पृष्ठ संख्या 64 पर है जिससे इसकी पुष्टि होती है।

आपके माता–पिता सुल्तान के खत के अनुसार काहिलर से चलकर आपकी लश्कर गाह में आए। मुलाकात के बाद जिहादे हिन्द से रोकने की बहुत कोशिशे की किन्तु आप तबलीग व जिहाद के जज्बे से इस कदर सराबोर थे कि माता–पिता का प्रेम भी उन्हे न रोक सका जब सालार शाहू और सतरे मुअल्ला ने देखा कि उनका प्यारा पुत्र अपने इरादे से बाज नहीं आ रहा है तो दोनों हजरात ने कहा कि यदि तुम नहीं रूक रहे तो हम दोनों भी आपके साथ चलेंगे। इस पर आपने कहा कि आप दोनों का मेरे साथ जाना मुनासिब नहीं, क्योंकि हमसे ईर्ष्या करने वालों और बुरा चाहने वालों को एक ऐसा अवसर हाथ लग जायेगा कि जिससे वह सुल्तान को हमारे खिलाफ करके भडका देंगे

और सुल्तान हमसे खफा हो जायें और यह समझ बैंठे कि यह दोनो बाप बेटे हुकूमत गजनी से बगावत करदे जा रहे हैं। अतः बेहतर यही है कि आप लोग हमें भारत में जेहाद करने के लिए जाने दें। अन्त में न चाहते हुए भी शाहू सालार ने उन्हें इजाजत दे दी और अपने करीबी अजीज सुल्तान महिबख्तियार की कमान में चुने हुए नौजवानों की एक सुसज्जित टुकड़ी आपके साथ कर दी और बहुत सा माल व असबाब व घोड़े देकर रुख्सत किया। सालार शाहू और बीबी सतरे मुअल्ला अपने प्रिय पुत्र की जुदाई का गम लेकर काहिलर लौट आये। अपने प्रिय पुत्र की जुदाई के गम में बीबी सतरे मुअल्ला के बेसुद कर दिया था और वह रोते रोते उनका बुरा हाल हो गया था।

सैयद सालार मसऊद गाजी रह0 मां बाप से आज्ञा लेकर अपने साथियों समेत पूरब की ओर चल पडे।

गैबी खजाने की प्राप्ति

हरजत सैयद सालार मसऊद गाजी रह0 कूच पर कूच करते हुए सैर व शिकार करते हुए सफर की परेशानियां झेलते हुए अपनी मन्जिल की तरफ बढ़ रहे थे। एक दिन मीर शिकार और कुछ दूसरे साथियों को साथ लेकर शिकार के लिए निकले बाज पक्षी को एक शिकार पर छोड़ा लेकिन बाज पक्षी जानवर पर हमला करने के बजाय एक पेड़ पर जा बैठा बाज की इस हरकत से आप सोंच में पड़ गये फिर स्वयं भी पेड़ के करीब पहुंचे घोड़े से उतर कर पेड़ के नीचे आकर आपने मुराकबा (ध्यानमग्न) फ़रमाया। मुराकबे के बाद दायं/बायें निगाह किया और मलिक हैदर से फरमाया कि बेलदारों को बुलाकर पेड़ को जड़ से खोद कर अलग कर दिया जाए। फिर आपने और गहरा खोदने का हुक्म दिया। जब और अधिक गहरा खोदा गया बेशुमार खजाना नजर आया। आपने उसे निकालने का हुक्म दिया। जब निकाला गया तो कई तोंदे खजाने के निकले आपकी यह करामत देखरक सारा लश्कर बहुत प्रभावित हुआ। जिससे उनके धर्मयुद्ध में आस्था और बढ़

गई उस स्थान पर कुछ दिन रूकने के बाद अफसरों को हुक्म दिया कि इस खजाने से नौ महीने का वेतन पुराने साथियों को और 6 महीने का वेतन तमाम लश्कर को और 5 महीने का वेतन पैदल दस्ते को और जो नये लोग भी लश्कर में शामिल हुये हैं उन्हें भी कुछ न कुछ दिया जाये। इतना देने पर भी उस खजाने में कोई कमी नहीं मालूम हुई खजाने को लेकर आपने उस जगह से कूच फरमाया और मलिक नेक बख्त को यह ताकीद की कि हमारे बावर्ची खाने में इस बात का पता चलता है कि आप सांसारिक माया मोह से परे थे और आपने खान पान पर अपने हलाल की कमाई ही खर्च करते थे।

सिन्धु नदी पार करना

दरियाए सिन्धु और दर्श खैबर वह रास्ता है जिनसे होकर प्राचीन कौमे भारत आती रहीं हैं। सैयद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमा भी बड़ी शान व शौकत के साथ सिन्धु नदी के किनारे पहुंचे। अमीर–ए–बहर (जल सेना अध्यक्ष) के लिए नावें लायी गयी। अमीर हसन अरब और अमीर बाजैद जाफर को हुक्म दिया कि पहले तुम दोनों पांच हजार सवारों के साथ सिन्धु नदी पार करके शिवपुर पर हमला कर दो। चुनान्चे उन्होंने ऐसा ही किा। राय अर्जुन जमीदार शिवपुर पहले ही अपना घर छोड़कर जंगल की ओर निकल गया। लश्कर–ए–अमीर हसन अरब ने जा कर उसका घर खोद डाला। पांच लाख सोने के सिक्के और बहुत ज्यादा माल व असबाब हाथ आए। दोनों अमीर सालार मसऊद की खिदमत में पहुंचे। आपने कहा कि यह तुम्हारा पहला आक्रमण है अतः यह धन दौलत तुम लोगों को ही इनाम में दिया जाता है। इसके बाद खुद भी लश्कर के साथ सिन्धु नदी पार करके उसके किनारे कुछ दिन के लिए ठहरे। क्योंकि सैर व शिकार के लिए यह स्थान मुनासिब था खुद शिकार के लिए खेलते और तुर्की बहादुर (उनकी सेना के लोग) पास पड़ोस के इलाकों में दौड़ धूप और शिकार करते फिरते। एक दिन एक महफिले जश्न (खुशी का समारोह) किया गया। तमाम लोगों को इनाम व इकराम दिये गये। फौजी अधिकारियों ने कहा कि यह मुल्क हमें खुदा ने अपनी मर्जी से अता फरमाया है। अल्लाह का शुक्र है कि यहां गजनी हुकूमत से बाहर और आजाद हैं। जहां चाहें रहें और जहां चाहें शिकार करें कोई रोकने वाला नहीं। यहां इबादत करने में भी बढ़ा मजा आता है।

सैयद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमा के कारनामें

मुल्तान की फतेहः— आपने सिन्धु नदी के किनारे कुछ दिन कयाम किया (यानी ठहरे) फिर अगली मंजिल की तरफ कूच किया। मंजिले तय करते हुए चन्द दिनों में मुल्तान जा पहुंचे। जबसे सुल्तान महमूद ने आखिरी बार 403 हिजरी 1012 ई0 में मुल्तान को ताराज किया था उस समय से अब तक वह वीरान ही था और जमींदार राजपाल जो औज के खित्ते में आकर आबाद हो गया था उसने आपके पास अपना कासिद भेजा कि राये देश में बे रोक टोक दाखिल हो गये हो यह बड़ी गैर मुनासिब और ने जेबा हरकत है। यहां सभी मेरी आज्ञा के मोहताज हैं कि तुम अपनी जिंदगी से आजिज आ गये हो।

आपने उसके एलची के हाथ लिख भेजा कि यह मुल्क खुदा का है किसी इन्सान का नहीं। वह जिसको चाहता है मुल्क पर काबिज कर देता है। हमारे पूर्वजों के जमाने से यह तरीका रहा है कि पहले हम काफिरों को एक ईश्वर की इबादत (पूजा) और मोहम्मद सलल्लाहो अलैहिवसल्लम की रिसालत की दावत देते हैं अगर उन्होंने अताअत कुबूल कर ली या ईमान ले आये तो खैर वरना फिर फैसला तलवार से होता है। आपने कासिद (एलची, पत्रावाहक) को खिल्लत देकर रूखसत किया और कहा कि मैं भी तुम्हारे पीछे—पीछे आ रहा हूं मौजूद रहना। आपने सुल्तान महिबख्तियार व अमीर हसन अरब व अमीर जाफर बाजैद व अमीरे तुर्कान व अमीर—ए—तकी की कमान में एक सुसंगठित सैनिक दसता अंगपाल पर तैनात किया जब यह दस्ता ओज के निकट पहुंचा तो देखा कि जंगपाल अपनी भारी सेना के साथ वहां खड़ा इन्तिजार कर रहा था। पह ुचते ही जंग छिड़ गई। देर तक घमासान की लड़ाई होती रही जिसमें दोनों दोनों तरफ के बेशुमार आदमी मारे गये किन्तु अन्त में अंगपाल पराजित हुआ मसऊदी लश्कर

ने नगर तक पीछा किया और ग्यारह लाख सोने के सिक्के माल–ए–गनीमत में लेकर सालर मसऊद की सेवा में भेंट किये। अपने सब अमीरों को खिलत व घोडे इनाम में दिये। अब चूंकि बरसात का मौसम आ चुका था इसलिए चार महीने मुल्तान में ठहर कर बरसात के बाद सेना को अजोधन की ओर रवाना किया।

अजोधन की कामयाबी

मुल्तान के बाद के आपने अजोधन की ओर कूच फरमाया। अजोधन बिना युद्ध किये फतह हो गया। यह बहुत ही हरा भरा इलाका था। हरी भरी वादियां अच्छी आब हवा आपको बहुत पसन्द आयी। सैर व शिकार के लिए भी बड़ी मौजें और अच्छी जगह थी। इसलिए आपने यहां नौ महीने पांच दिन यहां कयाम किया।

अब दूसरी बरसात आ गयी अतः यह बरसात भी वहीं गुजार कर देहली की तरफ चल पड़े।

अजोधन का दूसरा नाम पट्टन शरीफ है। यहां हजरत फरीद उद्दीन शकर रह0 का मजारे मुकद्दस हैं। यहां से देहली जाने वालों के रास्ते में भटिन्डा पड़ता है। यह रियासत पटियाला में है और यह स्थान है जिसको सुल्तान महमूद गजनवी ने 399 हिजरी यानी 1008 ई0 में फतह किया था और यहां के राजा विजय राय ने आत्म हत्या कर ली थी और यहां महमूद का अधिकार हो गया था। आजकल भी मुल्तान से देहली का पाक–पट्टन भटिन्डा होते हुए सड़क गयी है। यहां जैसा कि पहले लिखा जा चुका है हयाते मसऊदी ब हवाला इण्डियन एण्टीक्वारी भाग '8' पृष्ठ 209 पर सर विलियम लीवर ने मेव कौम की बाबत रियासत अलवर के जिसपर हाल में बगावत का इल्जाम लगाया गया था । एक स्थानीय रोचक खायत लिखी है वह कहते हैं कि उन लोगों में सैयद सालार मसऊद गाजी का झण्डा रहता है और वह महमूद गजनवी के भांजे थे भतीजे थे उनकी मजार बहराइच में है। उन्होंने यहां के नौ सौ नवासी किले फतह किये और जो राजपूत उनके

जामने में मुसलमान हुए वो मेह कहलाए। पहले यह लोग सैयद सालार मसऊद के झण्डे को पूजते थे मगर जब मौलवियों के प्रचार से यह बात खत्म हो गयी है। सो क्या तअज्जुब की बात है कि भटिण्डा से गुजरते हुए नारायनपुर थाना गाजी सालारपुर वगैरह उन्हीं की यदगार हों और उधर के धावे में अधिक समय व्यतीत करके इस्लाम की तबलीग की है। उनके इस तरीके से भी मालूम होता है कि जब उनको उस जगह इस्लाम की तबलीग सफल हो जाती थी तो वह आग बढ़ जाते थे और अपने कुछ साथियों को वहां आबाद कर जाते थे।
(आईना–ए–मसऊदी पृष्ठ 65)

देहली की कामयाबी

दिल्ली भारत का केन्द्र था, जिसका राजा महिपाल राय था ।उसकी सैनिक शक्तिबहुत अधिक थी। तमाम पड़ोसी रियासतें और विदेशी आक्रमणकारी भी उसका सामना करने से घबराते थे। स्वयं सुलतान महमूद ने लाहौर हमला करके उसे क़बज़े मे तो कर लिया किन्तु दिल्ली की ओर रूख करने की उसे फुरसत न मिली। तारीख फरिश्ता मे है कि विजय थनेसर के बाद सुलतान महमूद ने दिल्ली पर आक्रमण करने का फैसला किया किन्तु अमीरों और वजीरों ने उसे यह सुझाव दिया कि दिल्ली को उसी समय जीता जा सकता है जबकि सारे पंजाब प्रान्त पर मुसलमानों का अधिकार हो जाए और आनन्दपाल की ओर से कोई खतरा बाक़ी न रहे। सुल्तान महमूद ने अमीरों, वज़ीरों के इस मश्विरे को कुबूल किया और दिल्ली विजय करने का इरादा छोड़कर ग़ज़नी वापस चला आया लेकिन जो काम बाप न कर सका वह बेटे ने कर दिखाया की कहावत सच हुई। सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी रह0 ने अजोधन से दिल्ली की तरफ रूख किया और कुछ ही समय में दिल्ली के निकट पहुंच गये। वहां से लगभग बारह कोस के फासले पर राय महिपाल भी सूचना पाकर एक बड़ी सेना लेकर मुक़ाबले के लिए आया। आपने ने भी अल्लाह का नाम लेकर

मुजाहिदीन–ए– इस्लाम के लश्कर को सुसज्जित किया और उसे और उसे ठीक प्रकार से तरतीब देकर युद्ध की घोषणा कर दी। युद्ध शुरू हुआ दोनो ओर की सेनाओं ने बहादुरी के जौहर दिखाए।शाम तक युद्ध होता रहा, थोड़ा अंधेरा होने पर युद्ध रूका दोनों ओर की सेनाओं ने रात भर आराम किया सुबह को फिर युद्ध शुरू हुआ, तलवार और नेज़े चमकने लगे और इन्सानी रंग कट–कट कर धरती पर गिरने लगे। चालीस दिन तक युद्ध होता रहा किन्तु हार जीत का फैसला न हो सका। मुस्लिम सेना के अनेक सैनिक शहीद हो गये। उधर हिन्दू राजा के हज़ारों सैनिक मारे गये। लाशों के ढेर लग गये। परदेश में एक छोटी सी मुस्लिम सेना का मुक़ाबला एक बड़े लश्कर से था। युद्ध लम्बा खिंचता चला गया। सफलता की कोई सूरत नज़र नहीं आ रही थी। ऐसी दशा में सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी रह0 बहुत चिंन्तित हुए। आपने सजदे में गिर कर खुदा से इल्तिजा की कि ऐ खुदा अब मेरी इज़्ज़त व ज़्त्रिल्लत तेरे हाथ है मेरी लाज रख और मदद फरमा। अभी आप दुआ ही में मशरूफ थे कि अमीर सैफउददीन, सालार , महिबख्तियार, मीर सैय्यद अज़ददीन, मलिक दौलत शाह और सालार रज़ब जैसे बहादुर लोग भी ग़ज़नी से चलकर आपके लश्कर में आकर शमिल हो गए। ऐसे जांबाज़ लोगों के आने से आप बेहद खुश हुए। इस्लामी लश्कर का हौसला बढ़ गया और उनके अन्दर नया जोश पैदा हो गया। शत्रु सेना पर डर खौफ छा गया। चालिसवें दिन हज़रत सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी रह0 सैफउल मलिक से कुछ मश्विरा कर रहे थे कि महिपाल का लड़का गोपाल घोड़ा बढ़ाकर आपके निकट पहुंचा और गदा से आप पर हमला कर दिया, बड़ी फुर्ति से आपने सर को बचाया मगर आप के सामने के दो दांत शहीद हो गये। सरफुल मलिक ने इसके जवाब मे अपनी तलवार से ऐसा ज़ोरदार हमला किया कि गोपाल ज़मीन पर ढेर हो गया। सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी रह0 ने अपने ज़ख्म पर मरहम पटटी कर के शेर की तरह शत्रु पर हमला कर दिया।

घमासान का युद्ध हुआ। इस्लामी सैनिकों ने शफों की शफें उलट कर के रख दीं स्वयं शहादत का जाम पिया। और दुश्मनों को मौत के घाट उतारा। शाम के समय फिर युद्ध बन्द हो गया। जब अगले दिन युद्ध शुरू हुआ तो मीर सैय्यद अज़दीन जो हरावल दस्ते मे थे, बड़ी बहादुरी से लड़ रहे थे उनके गले में शत्रु का एक तीर लगा और आप शहीद हो गये। हज़रत ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा को जब उनकी शहादत की खबर मिली तो आप बेचैन हो गये। आप की बेचैनी तुर्क बहादुरों से देखी नहीं गयी। वह भूखे शेर की तरह शत्रु पर टूट पड़े। आकमण इतना भयानक था कि शत्रुओं को भागने का मौका न मिला। रायमहिपाल व श्रीपाल दोनो मारे गये। इस्लामी लश्कर को सफलता मिली और दिल्ली पर आप का अधिकार हो गया। आराम का जीवन त्याग कर घर से निकलने का आपका उददेश्य तख्त– ताज नहीं बल्कि भारत में इस्लाम की रौशनी फैलाना आपका मकसद था। आपने फरमाया मैं जिहाद तख्त व ताज के लिए नहीं कर रहा हूं यह मेरे और मेरे अल्लाह के दरमियान एक राज़ है जिसे वह खूब जानता है।

आपने अमीर जाफर बाज़ैद को दिल्ली के तख्त पर बिठा कर ताजपोशी की रस्म अदा की और सख्त हिदायत फरमायी कि रियाया के साथ मुरव्वत व हमदर्दी का बर्ताव करना। बे कसों व मजबूरों की सहायता करना। उनकी परेशानी समझना और सबके साथ न्याय करना और इन्तिज़ामी कामों को ठीक ढंग से करने के लिए तीन हज़ार सवार आप की कमान में दिया और फरमाया कि पांच छ हज़ार सवार और नियुक्त कर लो। मीर सैय्यद अज़ददीन को दिल्ली ही में दफन किया गया और उनका निहायत सुन्दर रौज़ा तामीर कराकर उसमें चराग़ बत्ती और साफ सफाई के लिए चन्द लोगों को नियुक्त कर दिया।

हज़रत ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा ने एहतियातन छः महीने तक दिल्ली में क़याम फरमाया ।

मेरठ की ओर प्रस्थान

सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमां दिल्ली से छः माह 16 दिन के बाद लगभग 420 हिजरी /1029 ई0 के मध्य में मेरठ की ओर प्रस्थान किया। मेरठ व उसके आस–पास के राजाओं को जब यह सूचना मिली कि सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी रह0 एक सैनिक टुकड़ी लेकर मेरठ आ रहे हैं तो लोग बहुत घबराये क्योंकि उन्हों ने आप की बहादुरी के किस्से सुन रखे थे कि मसऊद बड़ी से बड़ी शक्ति के सामने सीना सिफर हो जाते हैं। और कभी हार नहीं मानते।सारे राजाओं ने दूर अन्देशी से काम लेते हुए अपनी भलाई इसी मे समझी कि उनकी अधीनता स्वीकार कर ली जाए। अतः सारे राजाओं ने मिलकर अपने–अपने एलचियों(दूतों)को आपकी सेवा मे बहुत से मूल्यवान तोहफे देकर भेजा और कहलाया कि देश आप का है। हम सब आपकी आधीनता स्वीकार करते हैं। सालार मसऊद उन राजाओ के इस व्यवहार से बहुत प्रभावित हुए और उन एलचियों को कुछ तोहफे और माफी नामे अता फरमा कर वापस भेजा। इस बात से अचदी तरह अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि जब तक कोई आपके रास्ते में रूकावट न पैदा करता, बिला वजह आप उससे छेड़ छाड़ न करते और किस क़द्र आप सुलह जू अर्थात शान्ति प्रिय थे।

मेरठ के राजा के नर्म रवैये की एक और वजह भी है। डाक्टर फू–हरर अपनी किताब आकियोलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया की भाग दो पृष्ठ11 पर ब– हवाला इलियट भाग दो पृष्ठ 219 पर लिखते हैं कि ग्यारहवीं सदी ई0 के प्रारम्भ में बरन के राजा हरिदत्त ने मेरठ फतह कर लिया था। और यहां बड़ा मज़बूत किला बनाया था। यह हरिदत्त डोर राजपूत वही राजा है जिसने बरन (बुलन्द शहर) पर आक्रमण के समय सुल्तान महमूद ग़ज़नवी की आधीनता स्वीकार कर ली थी और दस हज़ार साथियों समेत इस्लाम धर्म कुबूल कर लिया था (जीवनी सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमा पृष्ठ111)

डाक्टर फूहरर अपनी पुस्तक के भाग दो पृष्ठ 12 पर लिखते हैं कि कुतबुददीन ऐबक ने 1194 ई0 में मेरठ में सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी की याद में एक मकबरा बनवाया यही रवायत डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर मेरठ ने भी लिखी है। इसके यह मायने हुए कि तारीखे फिरोज़ शाही सफर नाम इब्ने बतूता और मिरात–ए– मसऊदी से पहले यहां पर सालार मसऊद से सम्बनिधत स्थानीय रवायत मौजूद थी क्योंकि कुतबुददीन ऐबक और सालार मसऊद के बीच 150 सौ साल का अन्तर है। डाक्टर फू–हरर ने यह भी लिखा है कि मेरठ की जामा मस्जिद को महमूद के वज़ीर अहमद इब्ने हसन मेमन्दी ने तैयार कराया था। 409 हिजरी /1019ई0 में अगर यह सही है तो सालार मसऊद के आने से पहले मेरठ में मुसलमानों का वजूद साबित है।

जीवनी सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी प 111

मेरठ और कन्नौज के मध्य आने वाले इलाके

मेरठ से कन्नौज पहुंचने के लिए गंगा नदी पार करना ज़रूरी है। मेरठ से चलकर सालार मसऊद ने गंगा को गढ़ मुकेसर के स्थान पर पार किया होगा जो आजकल भी हिन्दुओं का तीर्थस्थान है। यहां बहुत बड़ा मेला होता है।उस जगह दरिया पार कर के ज़िला मुरादाबाद की मौजूदा तहसील हसनपुर और व सम्भल होते हुए ज़िला बदायूं के कस्बा गिनूर और सहसवान से गुज़र कर बदायूं आ जाता है। इस रास्ते के करीब ज़िला मुरादाबाद में कई मक़ामात सालारपुर के नाम से मशहूर हैं और सम्भल के क़रीब नेज़े का मेला आज तक मसऊद ग़ाज़ी की याद में होता है। सम्भल में जिसका पुराना नाम सम्भलेश्वर था।और हमेशा से शिव की पूजा का केन्द्र रहा है। और इसी आम रास्ते से गुज़र कर क़स्बा गिनूर पहुंचे इसका पुराना नाम बमनपुरी था। मगर एक मुसलमान बुज़ुर्ग गिन्नूर स्थित मुल्क–ए– ईरान से यहां आकर रहने की यादगार में गिन्नूर कहलाया इस क़स्बे में सालार बारी के नाम से एक मोहल्ला है। और एक बुजुर्ग ताजउददीन तुर्क का यहां मज़ार है।

जो सालार मसऊद के साथियों में से बताए जाते हैं डा0 फू- हरर आर्कियोलियोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया भाग दो पृष्ठ 6 पर लिखते हैं कि सैयद सालार मसऊद गाज़ी ने 420 हिजरी/1029 ई0 में धुंध गढ़ मौजूदा डुबाई ज़िला बुलन्दशहर के राजपूतों को वहां से निकाला यह स्थान क़स्बा गिन्नूर के महाज़ में ग़गा नदी के दूसरे छोर पर और वहां से 8- 10 मील की दूरी पर है इसी रवायत का वर्णन किताब मुसन्निफा में बिल-डफ मिसेज़ डब्लू आर रेकमर ने अपनी पुस्तक कुरोनोलोजी ऑफ इण्डिया में पृष्ठ 115 पर किया है। इससे मालूम होता है कि गिन्नूर को केन्द्र बनाकर या तो सिपह सालार मसऊद खुद डुबाई गए या और कोई तबलीग़ी मिशन वहां भेजा। गिन्नूर से चलकर आम रास्ते पर क़स्बा सहसवान ज़िला बदायूं आता है। यह पुरानी जगह है अलाउददीन खिलजी की बनाई हुई मस्जिद यहा मौजूद है। इस रास्ते पर एक मौज़ा सालार निंगला है। सहसवान के क़रीब में भी सालार मसऊद के साथियों में से एक साहब का मज़ार बताया जाता है। अब बदायूं पहुंचे जिसका पुराना नाम बूढ़ामेवता था लखनपुर के कुतुबे के अनुसार हज़रत मसऊद ग़ाज़ी के ज़माने में एक राठौर खानदान की राजधानी थी। उससे 1030 ई0 में हल्की झड़प होकर सुलह हो गयी थी बदायूं के करीब मौजा लखन पुर में एक खतीरा है। कहा जाता है उसमें सालार मसउद ग़ाज़ी की उंगली दफन है मगर यह बात विश्वास से परे है।मुमकिन है उस जगह सालार मसऊद गाजी ने कुछ दिन के लिए पडाव डाला हो या राजा से बदायूं से बाहर खतीरा के निकट जंग हुई हो आपकी यादगार में वहां एक मेला भी होता है जिस जमाने में बहराइच में होता है और एक खतीरा उस रास्ते पर जो बदायूं से कन्नौज को जाता है मोजा गजवाई में है यहां मेला भी लगता है उसी फरूखाबाद वाली सडक कस्बा असीत के निकट तहसील दाता गंज जिला बदायूं में एक मौजा मसूद पुरा है एक स्थानीय कहावत के अनुसार सहसवान और गिन्नूर के बीच गंगा पार करके वर्तमान जिला अलीगढ में एक सडक दादौन होती हुई अलीगढ को जाती है इस सडक के निकट और मौजा भीखम से लगा हुआ एक मजार सैयद

अली में एक सड़क दादौन होती हुई अलीगढ़ को जाती है। इस सड़क के निकट और मौजा भीखमपुर से लगा हुआ एक मज़ार सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी के साथियों में से बताया जाता है और कहा जाता है कि यह हज़रात यहां आकर शहीद हुए (जीवनी सैय्यद सालार मसऊद ग़ाजी)

कन्नौज आगमन

सैयद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां बदायूं से आगे चलकर गंगा नदी पार करके वर्तमान फरूखाबाद का जिला शुरू होता है यहां से निकलते ही उत्तर भारत की पुरानी राजधानी कम्पला शहर जो अब उजड चुका है और जहां द्रोपदी के किस्से मशहूर हैं वहां से वर्तमान कायम गंज फरूखाबाद हाते हुए कन्नोज पहुंचे उस जमाने में कन्नौज उत्तर भारत की राजधानी थी आस पास के तमाम राजा महाराजा उसके अधीन थे और उस वक्त तहायक का राजा जयपाल था आप गंगा नदी के किनारे पहुंचे चूंकि पहले सुलतान महमूद ने रायजयपाल जो कन्नौज का राजा था उसे जिला वतन कर दिया था किन्तु सालार शाहू अलवी कि सिफारिश से उसे क्षमा करके पुनः कन्नौज की हुकूमत दे दी थी इस एहसान के कारण उसने जब सालार मसऊद के आने की खबर सुनी तो अपने बडे लडके के साथ तोहफे भेजे ओर सुलह शांति की प्रार्थना की आपने उसकी प्रार्थना कुबूल कर ली आपने उसको एक घोडा व कुछ सहायक अता फरमाया और सम्मान के साथ रूखसत कर दिया ओर नाव का प्रबंध करने के लिए कहा जब नावें आ गईं तो इस्लामी लश्कर ने नदी पार की और नदी के दूसरे छोर पर डेरा डाल दिया राजा जयपाल आपकी सेवा में हाजिर हुआ और आपकी अधीनता स्वीकार कर ली आपने राजा राजयपाल को गले से लगाया और करीब बैठाया उसे हर प्रकार से निशचिन्त करके विशेष बहूमूल्य पोशाक दस ईराकी घोडे अता फरमायें और उसे रूख्सत किया और फरमाया कि इस आपसी प्यार मोहब्बत और भाईचारगी बनाए रखना हमारे लश्कर के वास्ते रशद भेजते रहना आने जाने वालों के द्वारा खैर खैरियत से जानकारी लेते देते रहना।

कन्नौज से सतरिख तक रास्ते के मुक़ामात

मिरात–ए– मसऊदी ने ज़िला हरदोई, लखनऊ व बाराबंकी के अन्य स्थानों की बाबत कोई ज़िक्र नहीं किया मगर उन ज़िलों के डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर और डाक्टर फू– हरर की पुस्तक के भाग दो के अनुसार कई एक जगह इस प्रकार की स्थानीय रवायतें हैं।

उन मुक़ामों में सान्डी जिला हरदोई मंउयावा, अमेठी व जिला लखनऊआदि भी शामिल हैं। मलावां जिला हरदोई की बाबत डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर ने लिखा है कि यह कस्बा लम्बे समय तक सालार मसऊद ग़ाज़ी की यादगार में ग़ाज़ीपुर कहलाता था।

मिरात7ए– मसऊदी में लिखा है कि सैय्यद सालार कन्नौज से सतरिख दस दिन में पहुंचे। सतरिख कन्नौज से लगभग सवा सौ मील होगा। इस हिसाब से दस पन्द्रह मील रोजाना के हिसाब से सफर हुआ। कन्नौज से सतरिख जाने के लिए सीधा रास्ता बलगराम, मलानवा, संडीला, मलिहाबाद, ज़िला हरदोई और बिजनौर, अमेठी ज़िला लखनऊ होकर है। इसी लिए इन स्थानीय रवायतों का सच होना ठीक जान पड़ता है। उस ज़माने में उत्तर भारत की तरह यहां इस्लाम अच्छी तरह नहीं फैला था। क्योंकि महमूद गज़नवी कन्नौज और बारी (मौजूदा बारी जिला सीतापुर) से आगे नहीं बढ़ा और जनरल अहमद नियालतगीन दो, एक साल बाद आया। इसीलिए इन स्थानों पर तबलीग़ की ज़रूरत थी इसीलिए जगह–जगह फौजी मिशन भेजे गये। आजकल के जमाने से जबकि दो एक पादरी दो एक मौलवी, दो एक पण्डित अकेले जाकर बाज़ ओर लेक्चर दे आते हैं। उस ज़माने में ऐसा नहीं था। और इसी गरज से हर मोबल्लिग (प्रचारक) छोटा या बड़ा फौजी दस्ता जाता था। ऐसे मौक़ों पर पहले की तरह अब भी एक केन्द्र स्थापित करके आस–पास मिशन पर रवाना किए जाते हैं।

वेदप्पा भाग तीन पृष्ठ 3ñ69 और अन्य इतिहासकारों से

मालूम होता है कि महमूद गजनवी के जमाने से लेकर 1200 ई0 तक उत्तर भारत में जगह जगह मुसलमानों की बस्तियां बस चुकी थी ये बस्तियां स्थापित करने वाले महमूद गजनवी सालार मसऊद गाजी और अहमद नयाल तगीन के साथियों में से थे ये हजरात जब एक स्थान से दूसरे स्थान को प्रस्थान करते थे तो कुछ भले लोगों को इस्लाम की शिक्षा देने के लिए उसी स्थान पर छोड देते थे यह तैनात किए हुए लोग कभी एक लंबे समय तक शत्रुओं से बचे रहे और किसी जगह अपने सरदारों के रवाना होने के कुछ दिन बाद ही तबाह कर डाले गये

(जीवनी सैयद सालार मसऊद गाजी व हयाते मसऊदी)

सतरीख आगमन और पड़ाव डालना

सतरिख बाराबंकी जिले में एक मशहूर कस्बा है जो उस समय भारत का एक केन्द्रिय स्थल था और गैर मुस्लिमों का बहुत बडा तीर्थ स्थल था एक स्थानीय कहावत यह है कि यहो राम और लक्ष्मन जी ने शिक्षा पाई और सप्तत्रटषि पड़ा। फिर धीरे धीरे अधिक बोलचाल में आने के कारण इसका नाम सतरिख हो गया और डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ने इसकी वजह ये यह लिखी है कि यहां सौ त्रटषि लोगों के स्थान थे बाबा सैरिश मुनि यहो रहते थे।

सैयद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां कन्नौज से बलग्रम मलावां सन्दीला मलीहाबाद जिला हरदोई और बिजनौर अमेठी जिला लखनऊ हाते हुए दस दिन में सतरिख पहुंचें। मिराते मसऊदी के कथनानुसार जब सैयद सालार मसऊद गाजी सतरिख में आये तो उनकी आयु लगभग 18 वर्ष की थी या यूं कहिए कि 422 हिजरी 1031 ई0 था 423 हिजरी मुताबिक 1032 ई0 में वो वहां आये।

सतरिख एक आबाद सुन्दर तथा हरा भरा इलाका था। सैर व शिकार के लिए अच्छी जगह थी इसी लिए यह इलाका आपको बहुत पसंद आया और आप यहां पर ठहर गये। फिर यहीं से आस पास के इलाकों में इस्लाम के प्रचार प्रसार के लिए टुकडियां भेजीं जैसे कि कस्बा बिजनौर जिला लखनऊ में मलिक अम्बर अमेठी में मलिक यूसुफ और मडियावां में आदम का शहीद होना और वहीं दफन होना बताया जाता है। (आइने मसऊदी व जीवनी सैयद सालार मस्ऊद गाजी व हयाते मसऊदी)

धुंधगढ़ के किले में घिरे हुए दोस्त मोहम्मद की मदद

एक दिन सतरिख में मुजफफर खां नायब अजमेर के भेजे हुए एलची मियां अब्दुल्लाह इस बात की प्रार्थना लेकर पहुंचे कि रांय दीन दयाल व जयपाल और अजमेर के आस पास के अनेक राजाओं ने उपद्रव मचा रखा है और सरकशी कर रहे हैं। सेनापति दोस्त मोहम्मद को धुंधगढ़ के किले में घेर रखा है। चारों तरफ मुकाबले के लिए सेनाऐं जमा हो रही हैं इसलिए आपसे विनती है कि मदद फरमाई जाये।

हजरत सैयद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां पीड़ित लागों की सहायता के लिए सदैव तैयार रहते थे और किसी प्रकार की जुल्म व ज्यादती को ब्रदाश्त न करते थे। भारत में आपके आने का उददेश्य भी यही था कि जहां भी इन्सानियत पर जुलम व ज्यादती हो रही है उससे उनको निजात दिलाई जाये दीने इस्लाम जो अमन व शान्ति का मजहब है जो न बराबरी और ऊjp uhp ds भेदभाव को मिटाकर सबको बराबरी का हक देता है उस दीने रहमत की शिक्षाओं का खूब प्रचार प्रसार किया जाए।

इसलिए ज्योंहि अपने मजलूम भाई मुजफफर खां व दोस्त मोहम्मद पर आक्रमणों की खबर मिली आपने फौरन मुजाहिद साथियों की एक मीटिंग बुलाई और सुलह मश्विरा किया। जिसमें हजरत सैयद इब्राहीम बारह हजारी और अपके दूसरे रिशते दारों के साथ साथ मीर हाशिम व नजमुल मलिक व आयना उल मलिक मियां रजब सालार वगैरह शरीक हुए। आपस में सलह व मश्विरह के बाद यह तय हुआ कि सैयद इब्राहीम जो अजमेर के इलाके से अच्छी तरह परिचित हैं अपनी कमान में एक फौजी टुकडी लेकर वहां जल्द पहुंचे और उन तमाम सरकश राजाओं को उनके किए की सजा दें। सैयद इब्राहीम बारह हजारी बारह हजार की सुसज्जित फौज की टुकड़ी के साथ सैयद बदीउददीन सैयद महमूद अहमद व सैयद हमीद को साथ लेकर अजमेर

व धुंधकण के राजाओं की सरकूबी (दमन) के लिए रवाना हुए यह इस्लामिक लश्कर बडी तेजी के साथ अपना रास्ता तय कर रहा था कि रास्ते में हलविया सना के स्थान पर बडी चालाकी और होशियारी से शत्रु की बीस हजार सेना ने इस्लामी लश्कर को घेरे में ले लिया। शत्रुओं ने यह सोचा कि धंधगढ़ के किले तक पहुंचने से पहले ही रास्ते ही में इस्लामी लश्कर की कमर तोड़ दी जाए ताकि यह अजमेर पहुंचने की हिम्मत न कर सकें लेकिन उन्हें क्या मालूम कि गाजियाने इस्लाम हैं जो अपना सर हथेली पर रखकर जिहाद के लिए निकलते हैं और मौत को जिन्दगी पर तरजीह देते हैं उन्हें बड़ा से बड़ा लश्कर और बडी से बडी शक्ति उन्हें अपने मकसद से रोक नहीं सकती किसी कवि ने ठीक कहा है।

काफिर है तो शमसीर पर करता है भरोसा
मोमिन है तो बे तेग भी लड़ता है लड़ाई

हजरत सैयद इब्राहीम और शेर दिल मुजाहिददीन शत्रुओं के उस भारी टिडडी दल लश्कर को खातिर में न लाते हुए जम कर मुकाबला किया और इस जोर से हमला किया कि शत्रु की फौज मैदान से भाग खड़ी हुई। बहुत से लोग मारे गये और कुछ लोग मैदान छोड़ कर भाग निकले इस्लामी सेना के भी कुछ लोग शहीद हुए और हुछ जख्मी हुए। शहीद होने वालों में मियां दजीजुददीन भी थे। उनको जलेसर में दफन किया गया।

सैयद इब्राहीम बारह हजारी ने जलेसर से अमीर बाजैद जाफर जो देहली में ठहरे हुए थे उनसे फौजी मदद का मुतालबा करते हुए एक खत लिखा अमीर मौसूफ ने खत पाते ही फौरन दो हजार जांबाज मुसल्लह सवारों का दस्ता आपकी सेवा में भेज दिया अभी आप जलेसर में हुछ आगे ही बढ़े थे कि अमीर वाजेद की भेजी हुई कमक आपसे आ मिली मुसलमानों के हौसले बढ़ गये। लश्करे इस्लाम तेजी से आगे बढ़ता हुआ धुंधगढ़ के करीब जा पहुंचा और एक मुनासिब मुकाम पर पड़ाव डाला।

सैयद इब्राहीम बारह हजारी ने नायब ए अजमेर मुजफफर खां को अपनी और लश्करे इस्लाम की पहुंचने की सूचना दी और लश्कर चूंकि सफर की मुसीबतों को झेलने की वजह से थका हारा था इसलिए उसे रात भर आराम करने का मौका दिया और खुद एक गोशे में बैठकर रात भर इबादतें इलाही में मश्गूल रहे। सुबह को नमाजे फजिर अदा करने के बाद लश्करे इस्लाम को तरतीब देकर दुश्मन के मुकाबबले में उतारा शत्रुओं की दो लाख फौज किले को चारों ओर से घेरे हुए थी। लश्करे इस्लाम ने एक जोरदार हमला किया शाम तक घमासान की जंग होती रही घोड़ों की टापों और बहादुरों की हा&हू ने कयामत का माहौल पैदा कर रखा था तलवारों की टक्कर जख्मियों की चीख पुकार से पूरा मैदान गूंज रहा था। सर घर की बाजी लग रही थी मंजाहिदाने इस्लाम ने अपनी ईमानी ताकत और फौलादी बाजुओं से दुश्मन के टिडडे दल लश्कर के होश व हवास गुम कर दिए थे तलवार की काट ऐसी थी कि जो जद में आया वह दो टुकड़े हो गया पूरा मैदान दुश्मनों की लाश से भर गया। दीनदयाल और अजयपाल ने जब अपने लश्कर को गाजर मूली की तरह कटते हुए देखा तो उनकी हिम्मत जवाब दे गयी और और वह सब मैदान छोड़ कर भाग खड़े हुए।उन्हें बुरी तरह हार का मुंह देखना पड़ा और लश्कर–ए–इस्लाम को अज़ीम फतह नसीब हुई। सैय्यद इब्राहीम बारह हज़ारी बड़ी शान के साथ क़िले में दाखिल हुए और शेख दोस्त मोहम्मद जो घिरे हुए थे उनसे मुलाक़ात की। उनके तमाम मुलाज़मीन को तसल्ली दी और अपने रब की बारगाह में दो रकात नमाज़ शुक्राना अदा की। एक हफ्ते तक क़िले में क़याम फरमाया, दीन दयाल जो बुरी तरह हार कर भागा था। चैन से नहीं बैठा फिर एक ताज़ा दम लश्कर लेकर मैदान में आ डटा । सैय्यद इब्राहीम भी क़िले से बाहर निकलकर पूरब की ओर मैदान में एक ऐसे तालाब के किनारे जो दोनो फौजों के बीच में था फौजें अपनी सजाई दानो

फौजों में बड़ी ज़ोरदार जंग हुई मैदान में लाशें बिछी पड़ी थीं । इस खूनी जंग में दो हज़ार मुसलमान शहीद हुए और दुश्मनों के दस हज़ार आदमी मारे गऐ और शेष ने भाग कर तेजपाल के साथ दीन दयाल के क़िले में जा घुसे और क़िले के बुर्जों पर तोपें लगा कर युद्ध करने लगे इधर सैय्यद इब्राहीम भी अपने सैनिकों को समेट कर क़िले को घेरे में ले लिया ।

क़िले में रनसद का सामान बिल्कुल नहीं था और बाहर से भी रसद पहुंचने की कोई सूरत नहीं थी तीन दिन तक सख्त घेरा रहा जिससे शत्रु तंग आ चुके थे मजबूरन चौथे दिन सुबह को तेजपाल बीस हज़ार फौज के साथ क़िले से निकल कर मुक़ाबले के लिए आ डटा। यह मुक़ाबला पहली जंगों की अपेक्षा इतना सख्त था कि मुसलमानों के अपने सर धड़ की बाज़ी लगानी पड़ी। सुबह से दोपहर तक दस हज़ार मुसलमान शहीद हो चुके थे लेकिन दुश्मनों को भी भारी क़ीमत चुकानी पड़ी कि उनके अकसर फौजी मौत के घाट उतार दिए गए केवल तेजपाल और चन्द हज़ार फौजी अपनी जान बचा कर भागने में सफल हुए। मुसलमान शोहदा में सैय्यद महमूद बदीउददीन और उनके कुछ साथी भी शामिल थे। जो जहां शहीद हुआ था उसे वहीं दफन भी कर दिया गया क़िले के चारों तरफ की ज़मीन गंजे शहीदॉ बन गयी। गाज़ियान–ए– इस्लाम ने क़िले की ईंट से ईंट बजा दी और दुनिया से उनका नाम–व– निशान तक मिटा डाला ग़ाज़ियान–ए– इस्लाम ने क़िले के पश्चिमी दिशा पर तालाब के किनारे डेरा डाला। तालाब का नाम मीर सरोवर रखा और उसके ऊपर एक दमदमा बनाकर हज़रत सैय्यद इब्राहीम की इबादत के लिए एक खेमा नसब किया गया आप जब उस दमदमे में दाखिल हुए तो बहुत खुश हुए और फरमाया इससे मुझे मुहब्बत की खुशबू महसूस हो रही है तबीयत को इतमिनान व सुकून मिल रहा है आज मैं बडे इतमिनान के साथ अपने मालिक की इबादत में मशरूफ रहूंगा। कोई हमारे डेरे के अन्दर आने की हिम्मत न करे फौज

के सारे लोग आराम करें। दिन के थके हारे मुजाहिदीन आराम करने लगे ऐसी गहरी नींद सोए की दुनिया की सुध न रही और उधर सैय्यद इब्राहीम अपने खुदा की इबादत में मशगूल हो गए। किसी को क्या ख़बर कि दुश्मन घात में है राय तेजपाल जो लोमड़ी की चाल चलना खूब जानता था रात के समय एक हज़ार फौज के साथ सोए हुए निहत्थे मुजाहिदीन पर अचानक हमला कर दिया। तेजपाल का भाई करनपाल दबे पांव हज़रत के इबादत खाने में दाखिल हुआ आप इबादते इलाही में मशगूल थे। सजदे की हालत में आप पर तलवार का वार करके शहीद कर दिया और मौक़ा पाकर आप के बिरादरे हक़ीक़ी सैय्याद इस्माईल को भी शहीद कर दिया यह हादसा सत्तरह सव्वालुल मुकर्रम 420 हिजरी को पेश आया ।

सैय्यद इब्राहीम और सैय्यद इस्माईल अलैहिर्रहमां की शहादत से इस्लामी फौज में एक शोर और कोहराम बरपा हो गया ग़म व गुस्से से सभी भर गये। तूफानी जोश–व– खराश के साथ मुसल्लह होकर बे तहाशा बिफरे हुए शेर की तरह काफिरों को काटना शुरू कर दिया। करनपाल जो हज़रत का क़ातिल था उसे भी मौत के घाट उतार दिया। तेजपाल जान बचा कर भाग निकला इधर भी चन्द सवार और मियां अलाउददीन शहीद हो गए।

हज़रत के खाला ज़ात भाई हज़रत हमीद--उददीन और नाना शेख़ दोस्त मो0 और इस्लामी फौज के बाक़ी मॉदा सवारों ने शोहदा की तजहीज़--व–तकफीन यानी आखरी रस्म अदा करने के बाद तेजपाल का सुराग लगाते हुए तुज्जारा पहुंचे जहां तेजपाल और उसके साथी छुपे हुए थे मुसलमानों ने मौज़ा तुज़्ज़ारा को घेरे में ले लिया। मौजा वाले अन्जाम से बे खबर हो कर तेजपाल की हिमायत में मुसलमानों से युद्ध करने लगे मगर जज़्बे शहादत से सरशार मौत को ज़िन्दगी पर तरजीह देने वाले मुसलमानों के सामने बातिल परस्तकब तक टिकते थोड़ी ही देर में मुक़ाबले के बाद मौजे के लोग ज़ेर हो गये और तेजपाल मुसलमानों के हाथों गिरफ्तार हुआ। इस लड़ाई में चार मुसलमान सवार शहीद हुए।

सैय्यद हमीदउददीन के हुलकूम (गला) मुबारक पर एक तीर लगा जिससे गहरा ज़ख्म आया। ग़ाज़ियाने इस्लाम और शेख़ मोहम्मद सैय्यद हमीदउददीन को ज़ख्मी हालत में लेकर तेजपाल को भी साथ लेकर रवाना हुए।सैय्यद हमीद उददीन ज़ख्म की ताब न ला सके रास्ते में ही इन्तिक़ाल हौ गया। वही कोट कासिम में आप को दफ्न किया गया फिर यह लश्कर–ए–इस्लाम शोगवार हालत में साय तेजपाल को लेकर हज़रत सैय्यद इब्राहीम बारह हज़ारी रह0 के आस्ताने पर हाज़िर हुआ। यहां शेख दोस्त मोहम्मद ने तेजपाल को सख्त से सख्त सज़ाऐं देकर उसे उसकी सरकशी का मज़ा चखाना चाहा मगर उसने उसी वक्त इस्लाम कुबूल कर लिया तो आपने आईने इस्लाम के पेशे नज़र उसके तमाम जुर्मों को माफ कर दिया, और उसका इस्लामी नाम जलाल खां खानाज़ाद रखा इस्लाम कुबूल कर लेने के बाद जलाल खां ने निकाह किया और पूरी ज़िन्दगी उस ज़िले की ज़मीदारी पर क़ायम रहे। कहा जाता है कि रेवाड़ी के अकसर मेवाती जलाल खां की औलाद में हैं। शेख दोस्त मोहम्मद अपनी अहिलिया(पत्नी)अपनी एक बेटी और सैय्यद इब्राहीम बारह हज़ारी रहमत–उल्लाहअलैह की वालिदा मोहतरमा के साथ सैय्यद इब्राहीम रहमत–उल्लाह अलैह के मज़ारे अक़दस पर सुकूनत अखतियार की और यहां के हालात शुरू से आखिर तक लिख कर हज़रत सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमां के पास सतरिख भेजा। यह खत हज़रत गाज़ी अलैहिर्रहमां के पास उस वक्त पहुंचा जब आप इबादते इलाही में मसरूफ थे उसी हालत में दिले गिरफ्तार होकर ज़ारो क़तार रो रहे थे।तमाम सरदार और खादिमान आपकी यह हालत देखकर हैरान व परेशान हो गये। तश्वीश में पड़ गये कि इलाही यह क्या मामला है ज्योंहि आप की नज़र खत के लिफाफे पर पड़ी अपने जांनिसारों से मुखातिब हो कर फरमाया इस मकतूब में खैर नहीं मालूम होती, क्योंकि मैंनेख्वाब देखा है कि सैय्यद इब्राहीम रहमत उल्लाह अलैह एक तख्त पर बैठे हैं और मेरा इन्तिज़ार कर रहें हैं। खत पढ़ा गया, इसमें सैय्यद इब्राहीम रहमत उल्ला अलैह और आप के साथ शहीद होने वाले तमाम शोहदा की शहादत की पूरी कहानी लिखी थी। हज़रत ग़ाज़ी अलैहिर्रहमां और तमाम हाज़रीन को बड़ा गहरा सदमा हुआ। सब्र से काम लेते हुए अल्लाह का शुक्र अदा किया।

सतरिख से तबलीगी मुहिम पर सालारों की रवानगी

हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमा के भारत यात्रा का उद्देश्य इन्सानों को ईश्वर की पूजा की दावत देना था और मजलूम इन्सानों को जालिमों के पंजे से आजाद कराना था न कि भ़ारत पर आक्रमण करके यहां धन दौलत को लुटाना। इसी कारण उन्होंने कहीं अपना शासन स्थापित नहीं किया। जबकि वो ऐसा करने में सक्षम थे। इस जमाने में इस्लाम का प्रचार व प्रसार कोई आसान काम नहीं था। हक की आवाज को बुलंद करने के लिए फौजी ताकत का इस्तेमाल भी न गुजीर था अर्थात जरूरी था इस लिए सतरिख में कयाम करने के बाद सबसे पहले आपने सालार सैफ उद्दीन थानी सुरखुरू साल़ार को और उनके साथ मीर सैयद नसरुल्लाह जो अपनी कौम के सरदार थे और कोतवाल लश्करे सालार रजब को आपके मिजाज सनाश, खाश खिदमतगार और बहादुरी में बेनजीर थे। एक सैनिक टुकड़ी देकर बहराइच की ओर रवाना किया और कोतवाल के ओहदे पर सालार रजब के बेटे को नियुक्त किया। हालांकि वह कम उम्र थे लेकिन बाप के तरह ही बहादुर थे, सालार सैफउद्दीन अलैहिर्रहमा ने बहराइच पहुंच कर हजरत गाजी अलैहिर्रहमा के पास यह खबर भ़ेजी कि यहां जंगल ही जंगल है, रसद का इन्तिजाम करना बड़ा मुश्किल काम है आप वहां से गल्ले का प्रबन्ध करके भेज दें वरना लश्कर हलाक हो जायेगा। सैय्यद सालर मसऊद गाजी ने खबर पाते ही हुक्म जारी फरमाया कि परगनों के तमाम चौधरियों और मुखियों को हाजिर किया जाय। साथ–आठ परगनों के चौधरी व मुखिया हाजिर हुए। नासिन नामक चौधरी सिद्धौर जिला बाराबंकी और मुजहर नामक चौधरी अमेठी हाजिर किये गये दोनों को पास बुलाया समझाया कि खेती बाड़ी में ध्यान दें उनमें उनका और प्रजा का दोनों का फायदा है और यह भी फरमाया कि हमसे रूपया लो और हमारे लिए गल्ले का प्रबन्ध करो उन्हों ने अर्ज़ किया कि पहले हम गल्ला ला दें फिर रूपया ले लेंगे मगर

आपने मुबलिग दो लाख रूपये नक़द चौधरियों को गल्ले के लिए पेशगी दे दिए और पान वगैरह से उनकी खातिर की। सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी का यह बर्ताव न महज राजनीतिक बुद्धिमत्ता और दूरअन्देशी पर आधारित था बल्कि इससे उनकी ईमानदारी और दयानतदारी का पता चलता है। लूटमार आपका मकसद होता तो यक़ीनन बिना क़ीमत अदा किये हुए बहुत गल्ला मयस्सर हो जाता। गल्ले का वादा करके चौधरी लोग जब वापस होने लगे तो हजरत गाजी अलैहिर्रहमां ने मलिक हैदर को साथ में लगा दिया ताकि जल्द हो सके गल्ला आ जाए और मलिक फिरोज उमर को एक फौजी दस्ते के साथ दरियाए सरयू के रास्ते पर पड़ाव डालने का हुक्म दिया कि जैसे –जैसे गल्ला आता जाए बहराइच सालार सैफ उददीन सुरखुरू के पास भेजते जाएं।

तबलीगी मुहिम पर अतिरिक्त सैनिक टुकड़ियों की रवानगी

हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां का भारत आने का मकसद न हुकूमत हासिल करना था सैर व तफरीह करना था बल्कि उस तबलीग़ की मकसद से आए थे कि पूरे हिन्दुस्तान में इस्लाम की रोशनी फैल जाए और यहां का हर व्यक्ति एक ईश्वर का पुजारी बन जाए। इसलिए आप जहां भी कयाम फरमाते वहां से तबलीगी मिशन भेजते। चुनांन्चे सालार सैफ उददीन सुरखुरू अलैहिर्रहमां को बहराइच भेजने के बाद आपने महिवख्तियार को जो आपके रिश्ते दार थे एक सैनिक टुकड़ी देकर विलायत फिरदोस्त की ओर भेजा। दस्तूर के मुताबिक रवानगी के समय महिवख्तियार को आपने नसीहत फरमायी कि हमने तुम्हें खुदा के सुपुर्द किया जाओ पहले अपने तरीके के मुताबिक गैर मुस्लिमों को दीने इस्लाम की दावत दो अगर कुबूल करें और सुलह व अम्न व शान्ति से पेश आयें तो तुम भी उनके साथ प्रेम का बर्ताव करना वरना आखिरी रास्ता जिहाद का प्रयोग करना फिर सुलतान महिबख्तियार को गले से लगाया कि आज की मुलाकात के

बाद खुदा जाने कब और कहां मिलना नसीब हो। रूख्सत होते समय दानों हजरात की आंखों में आंसू झलक रहे थे सूलतान महिबख्तियार सतरिख से चलकर विलायत फिरदौस्त का अधिकांश इलाका जीत लिया शहर कन्नौज तक बढ़ते गये और वहीं पर जामे शहादत नौश फरमाया आपकी मजार भी वहीं है। हजारों लोग आपकी जियारत के लिए आते हैं इसके बाद आपने अमीर हसन अरब की दक्षिण में कसबा महोबा की तरफ रवाना किया और मीर सैय्यद इज्जुद्दीन को जो अब लाल पीर के नाम से मश्हूर हैं गोपामऊ की तरफ मलिक फैसल को एक लश्कर देकर बनारस मलिक रहमान शाह को भागिन्गर की ओर रवाना किया मलिक आदम हजरत के उस्ताद लखनऊ में शहादत पाई जिनका मजार शोहबतियां बाग राजा बाजार में है।

हजरत गाजी अलैहिर्रहमां का यह दसतूर था कि जिस किसी को महाज पर भेजते उसे अपने तरीके कार की नसीहत जरूर फरमाते सबसे पहले इस्लाम की दावत दी जाए अगर कुबूल कर लें या सुलह या अम्न व शान्ति से पेश आएं तो ठीक है वरना अगर तुम्हारे मुकाबले में आऐ तो तुम भी कदम पीछे न हटाओ जिहाद करो। इन दस्तो की रवानगी के बाद सतरिख ही में आपका कयाम रहा और शेर व शिकार में मश्गूल रहे।

कड़ां व मनिक पुर के राजाओं की धमकी

सतरिख में आपके कयाम से कटरा ओर मानिक पुर के राजाओं को यह चिन्ता हुई कि कहीं यह व्यक्ति हमारे लिए खतरा न बन जाए इस लिए उन राजाओं ने तरह तरह की शरारतें और शर अंगेजियां करनी शुरू कर दीं कि आप परेशान होकर सतरिख से निकल जाऐ लेकिन जब उन्हो ने देखा कि हमारी शरअंगेज़ियों का कोई असर नहीं हो रहा है और यह यहां से जाने का नाम नहीं ले रहा है तो उन्हों ने धमकी देने की ग़रज़ से एक रोज़ आपने एलची के जरिऐ जादू कर के दो जीन और लगाम बतौर तोहफा आप की खिदमत में भेजा और कहलाया कि यह देश प्राचीन काल से हमारे बाप दादों के क़ब्ज़े में रहा

है इस लिए हम किसी का हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं कर सकते हमारे इतिहास में लिखा है कि सुल्तान सिकन्दर जुल्करनैन रूमी ने इधर का इरादा किया था मगर कन्नौज पहुंच कर गंगा पार न कर सका और राय क़ैद से सुलह करके वापस चला गया। यहां अब तक कभी भी किसी मुसलमान ने क़दम रखने की हिम्मत नहीं की सुल्तान महमूद गजनवी और तुम्हारे पिता शाहू सालार भी अजमेर कन्नौज गुजरात तक आऐ मगर इधर का रूख नहीं किया एक तुम हो कि बड़ी बेबाकी से हमारे देश में दाखिल हो गये शायद तुम्हें अपने अंजाम की खबर नहीं या तुम अपनी जिन्दगी से उकताए हुए हो। अगर तुम्हें अपनी जान अजीज हो तो हम तुम्हें मश्विरा देते हैं तुम यहां से चले जाओ हमें इस बात का भी लिहाज है कि तुम अपने मां बाप के इकलौते बेटे हो होश व हवाश से काम लो कही और जाने की फिक्र करो वरना सोच लो कि हमारे पास नौ लाख का लश्कर है और बहराइच के आस पास के राजाओं के पास भी कुछ कम कम फौज नहीं अगर दोनों ओर की फौज तुम पर चढ़ाई कर दें तो तुम्हें बचके निकल जाना बड़ा मुश्किल होगा। धमकी आमेज यह बात सुनकर सैय्यद मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां ने गुस्से से आक्रोशित होकर फरमाया कि अफसोस तू एलची ठहरा अगर कोई और होता तो उसके परखचे उड़ा देता लिहाजा तुम जाओ और जाकर अपने राजाओं से कह दो कि इस देश का असली मालिक तो खुदा है सब कुछ उसी के कब्जे में है वह जिसे चाहता है मुल्क अता करता है हम यहां केवल सैर व तफरीह की गरज से नहीं आये हैं बल्कि इस मुल्क को अपना वतन बनायेंगे खुदा के हुक्म और उसकी सहायता से शिर्क और कुफ्र की जड़ें उखाड़ फेकेंगे और इंशा अल्लाह वह दिन दूर नहीं जब यहां इस्लाम का उजाला फैलेगा और कुफ्र व शिर्क का दूर हो जायेगा। हम यहां जंग करने या कत्ल व ग़ारत गरी के लिए नहीं आये हमारी ग़रज यहां इस्लाम की तबलीग़ करना है अगर ज़बर दस्ती हम पर जंग थोपी गई तो हम भी अल्लाह के फज़्ल से बचाव की शक्ति रखते हैं और जवाबी कार्यवाही में हम भी पीछे नही हटेंगे। कुछ सोच समझ कर ही हमने इस कुफ्रिस्तान में कदम रखा है।

कुछ समझ कर ही हुआ हूं मौजे दरिया का हरीफ
वरना मैं भी जानता हूं आफियत साहिल पे है

हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां ने जादू किया हुआ जादू जैन व लगाम वापस कर दिया एलची से पूछा कि तुम्हारे राजाओं का क्या नाम है एलची ने बताया कि राजा का कटरा का नाम देवनारायन और मानिक पुर के राजा का नाम भोजनीर।

एलची ने वापस जाकर राजाओं से जिन्हें जवाब का बड़ी शिददत से इन्तिजार था आपकी बे बाकाना गुफ्तुगू और व अपने तासुरात बयान किए कि यह नौ जवान कोई मामूली इन्सान नहीं बल्कि एक साहसी और हिम्मत वाला इन्सान है उसे ताकत व जंग की धमकी देकर उसके इरादे से बाज नहीं रखा जा सकता वह तो एक शेर दिल बहादुर इन्सान मालूम होता है। तुम्हारी नौ लाख फौज की कुछ भी परवाह न करेगा। एलची की बात सुनकर राजाओं के होश उड़ गये उनके चहरे पर उदासी छा गई। राजाओं को बहुत अधिक चिंतित और भयभीत देखकर एक नाई जो उस समय मोजूद था कहा कि इस कद्र फिक्रमंद होने की क्या बात है अगर आज्ञा हो तो मैं अपनी कूटनीति से उस लड़के का काम तमाम कर आऊं। राजाओं ने कहा अगर वाकई तुम इसके लिए कोई तदबीर कर सकते हो तो हमारी तरफ से इजाज़त है इसके बदले में तुम्हें एक गांव इनाम में दिया जाएगा।

जहर में बुझी हुई नहरनी (नाखुरनी)

कहते हैं कि लालच इंसान को अंधा कर देती है और इस लालच में आकर इंसान घटिया से घटिया हरकतें करने में ज़रा भी हिचक महसूस नहीं करता और इन्तिहाई नीचपन पर उतर आता है। वह नाई भी इसी तरह का एक लालची तबियत का इंसान था। इनाम व इकराम की लालच में राजाओं के दरबार से घर आकर उनसे किये गये वादे के अनुसार एक नहरनी जहर में बुझाकर और खूब तेज करके अपने पास रखी और सतरिख के लिए चल दिया। इधर सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां शिकार से वापस आकर जुहर के वक्त

सतरिख में वापस आऐ तो यह नाई भी आपकी खिदमत में पहुंचा आदाब बजा लाया और आपकी खिदमत में रहने की इच्छा जताई और भेंट स्वरूप जहर में बुझी हुई नहरनी पेश की। आपने मुरव्वत नहरनी लेली और उससे पूछा कि अब तक तुम किसकी खिदमत में थे उसने कहा कि चन्द रोज तक मुसलमानों की खिदमत में था लेकिन इधर कुछ दिनों सें हिन्दुओं की खिदमत में लगा हूं। आपने उसके अन्दर खुलूस का ज़ौहर नहीं पाया। सोने के चन्द सिक्के देकर उसे वापस कर दिया। उसके जाने के बाद आपने उसकी नहरनी से हाथ की उंगली के नाखून तराशना चाहा नहरनी बहुत तेज थी वह नाखून पार करके गोश्त में उतर गई। जख्म गहरा लगा नहरनी का जहर असर करने लगा आप सख्त बेचैन हो गये उंगली में सख्त जलन होने लगी और पूरा जिस्म बुखार से जलने लगा धीरे-धीरे जहर पूरे जिस्म में फैल गया आपके चहरे से परेशानी जाहिर हो रही थी। आपके साथी और खिदमतगार तश्वीश में पड़ गये किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर माज़रा किया है बहुत देर में हकीकत का पता चला और परेशानी व बेचैनी का सबब मालूम हुआ कि नहरनी हज्जाम दे गया था उससे आपने अपने नाखून तराशे हैं वो वास्तव में जहर में बुझायी गयी थी उंगली में जख्म आने से उसका ज़हर पूरे शरीर में फैल गया था। फौरन लोगों ने जहर मोहरा पानी में धोकर पिलाया आर जहर मोहरा आपके मुंह में रखा दो तीन मर्तबा उसका लुआब आपने पिया। शरीर की हरारत कम होना शुरू हुई और थोड़ी ही देर में जहर का असर जाता रहा आपको आराम मिलने पर सारे लश्कर ने खुदा का शुक्र अदा किया खुशी मनाई और सदाक़त तक्सीम की ताकि उनका बुरा चाहने वालों को बदअमनी और फसाद फैलने का अवसर न मिल जाए। आपने मुंशी को हुक्म दिया कि सरहदों के अमीरों के पास खुतूत लिखकर मेरे स्वस्थ्य हाने की इत्तिला दी जाय कि खुदा के फज्ल से मैं शत्रुओं की फितनाअंगेजी से महफूज़ रहा और मैं हर तरह बखैर व आफियत हूं। खुतूत देकर कासिदों को इधर-उधर सरहदों की तरफ रवाना किये गये अपने वालिदैन के पास भी आपने कासिद भेजा।

आपकी वालिदा मोहतरमा का इन्तिक़ाल पुरमलाल यानी माता का स्वर्गवास

जब एलची आपका पत्र लेकर सालार शाहू के पास पहुंचा तो उसे देखकर सालार शाहू बहुत खुश हुए। और एलची को गले लगा कर खुशी का इज़हार किया। किन्तु जब उन्हें आप पर नाई की जहर आलूद अर्थात विषैली नहरनी के जहरीले असर और आपकीतकलीफों की खबर हुई तो उन्हें बहुत कष्ट हुआ। और उनपर बेहोशी तारी हो गई कुछ समय बाद जब आप को हाश आया और घर के अन्दर जाकर बेटे का हाल मां को सुनाया तो वो भी बेहोश होकर गिर पड़ीं जब ज़रा होश आया तो सालार शाहू ने तसल्ली देते हुए फरमाया कि इस क़दर परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। ज़हर का असर बिल्कुल ख़त्म हो चुका है। और हमारा बेटा कुशल से है तब उन्हें कुछ इतमिनान हुआ। किन्तु बेटे की जुदाई के ग़म और सदमे ने उन्हें हमेशा के लिए मरीज़ बना दिया। तमाम दवा इलाज के बावजूद उसी ग़म में 421 हिजरी यानी 1030 ई0 में इस संसार से चल बसीं।

(देखा इस बीमार–ए– दिल ने आखिर काम तमात किया)

पूरे सम्मान के साथ आप के जनाज़े को महमूद ग़ज़नवी के पास ग़ज़नी भेज दिया गया। और वहीं पर उन्हें दफन किया गया। हज़ार–हज़ार रहमतें नाज़िल हो उस अजीम मां पर जिसने अपनी आगोश में एक ऐसे बच्चे को पाल पोस कर बड़ा किया। जिसने अपने सर धड़ की बाज़ी लगा कर हिन्दुस्तान में इस्लाम का दीपक रौशन कर दिया।

सालार शाहू का सतरिख आगमन

हज़रत बीबी सतरे मोअल्ला के इन्तिक़ाल के कुछ ही दिन बाद सुल्तान महमूद ग़ज़नवी का इन्तिक़ाल बक़ौल फरिश्ता और रौज़तुस्सफ़ा वग़ैरह के अनुसार रबीउलआखिर 421हिजरी यानी सन् 1030 में हुआ और सालार शाह अपनी धर्म पत्नी के मरने के फौरन बाद सतरिख आए। इस लिए अनुमान यह है कि सुल्तान महमूद ग़ज़नवी के इन्तक़ाल से कुछ दिन पहले या बाद में सतरिख आए।

सालार शाहू का सतरिख आने का मुख्य कारण

एक शरीफ और पाकीज़ा सिफात धर्म पत्नी का उनके जीवन में ही साथ छोड़ कर चल बसना एक पति के लिए कितना कष्ट दार्या हुआ होगा इसे आसानी से समझा जा सकता है। इस असहनीय सदमे और गम को भुलाने के लिए अपने प्रिय–पुत्र के पास सतरिख आने का ख्याल पैदा हुआ होगा। लेकिन इसी के साथ साथ यह बात भी सोचनी ग़लत न होगी कि सालार शाहू चूंकि महमूदी पार्टी के आदमी थे। और महमूद के आखरी दौर में बेटों के बीच इक़्तेदार की जंग छिड़ चुकी थी। फिर सुल्तान महमूद अहमद बिन हसन मेमन्दी को जिसे हज़रत सालार शाहू और हज़रत सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी से हसद और पुरानी अदावत थी। मंत्री पद से हटा कर कै़द कर दिया था मसऊद जब तख्त पर बैठा तो उसे पुनः मंत्री पद पर बहाल कर दिया। बहुत मुमकिन है कि उन्हीं हालात ने सालार शाहू को काहिलर छोड़ने पर मजबूर किऐ हो। और सालार शाहू अपने इकलौते बेटे से मिलने सतरिख आए हों। सालार शाहू का़हिलर का प्रबन्ध कुछ भरोसे के लायक़ चुने हुए लोगों को सुपुर्द कर के एक विशेष सैनिक टुकड़ी लेकर हिन्दुस्तान के लिए रवाना हुए। जब सतरिख के पास पहुंचे तो सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी ने आगे बढ़ कर अपने पूज्य पिता का सम्मान किया। और अपने साथ उन्हें क़याम गाह पर लाए आप के आने की खुशी में तीन दिन तक जश्न मनाया गया।तमाम लश्करियों और सरहदी अमीरों में खुशी की लहर दौड़ गई उनके हौसले बढ़ गए इस्लामी लश्कर की ताक़त में इज़ाफा हौ गया। आस–पास के राजा महाराजा जो सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी के वजूद को बर्दाश्त नहीं कर रहे थे अब सालार शाहू के आ जाने से बहुत घबरा गए। चन्द दिन के बाद मलिक फिरोज़ उमर जिन्हें सरयू नदी के तट पर इस लिए लगाया गया था कि जो गल्ला उन तक पहुंचे वह बहराइच हज़रत सैफउद्दीन सुरखुरू सालार रहमत उल्लाह अलैह के पास भेजते जाऐं। इसी बीच उन्हें तीन ऐसे व्यक्ति मिले जिन पर दुश्मन के जासूस होने का शक हुआ उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

जब यकीन हो गया कि वाकई यह लोग जासूस ही हैं तो उन्हें सतरिख भेज दिया गया। खादिमों ने उन्हें पहचान लिया कि उनमें दो जासूस वो हैं जो कटरा और मानिक पुर के राजाओं की ओर से ज़ीन और लगाम लाए थे और एक वो नाई है जो जहर में बुझी हुई नहरनी लाया था हजरत सालार शाहू ने उनके फितने की वजह से गुस्से में भरकर फरमाया कि तीनों का फांसी दे दी जाए। बाद क्षमादान देते हुए वो केवल नाई को फांसी दे दी गयी। उनके पास से वो खुतूत मिले जो कटरा और मानिक पुर के राजाओं ने बहराइच के आस– पास के राजाओं के नाम लिखे थे। उनमें तहरीर था कि विदेशियों का लश्कर हमारे हमारे तुम्हारे मुल्क में आकर बे खौफ व खतर जमा हुआ है कभी भी हमें उनसे खतरा हो सकता है। मुतमईन हाकर खामोश रहना अकलमंदी नहीं है। अतःइससे पहले कि वह हम पर चढ़ाई करें इधर से तुम चलो और हम उधर बढ़कर उनको घेर लें। और उनका सफाया कर दें। खतूत पढ़कर जब उन राजाओं के नापाक इरादों की जानकारी हुई सालार शाहू रहमत उल्लाह अलैह ने गुस्से में आकर फरमाया कि दुश्मनों के नापाक इरादों को हम खाक में मिला देंगे अत; उसी समय कटरा और मानिक पुर के राजाओं की नक्लो हरकत की जानकारी के लिए उनके पीछे दो मुखबिरों को लगाया जासूसों ने वापस आकर बताया कि दानों राजा इस समय हमारी ओर से बिलकुल बेफिक लड़के और लड़कियों के विवाह समाराह में लगे हुए हैं।सालार शाहू रहमत उल्लाह अलैह बड़े यूद्ध कौशल थे आपकी फौजी महारत के सबूत के लिए यही क्या कम है कि आप सुल्तान महमूद ग़ज़नवी जैसे फातेह आजम की सेना के एक सफल सिपा सालार थे। जंगी हिकमते अमली से खूब वाकिफ थे आपने तुरन्त युद्ध का नक्कारा बजवा दिया अपने पुत्र सैय्यद सालार को सतरिख में छोड़कर खुद सवार हुए और एक बड़ी सैनिक टुकड़ी लेकर कटरा और मानिक पुर की ओर चल पड़े। मानिक पुर अब जिला प्रतापगढ़ में है और कटरा जो दरिया के उस पार है जिला इलाहाबाद में शामिल है ।

(कड़ां और मानिकपुर की फतह)

सालार शाहू अलैहिर्रहमां ने करीब पहुंचकर अपनीसेना को दो भागों में बांट दिया। फौज का ण्क दस्ता कटरा की ओर और दूसरा दस्ता मानिकपुर की ओर रवाना किया। दोनों दस्त अपने –अपने स्थान पर पहुंचकर युद्ध के लिए तैयार थे दुश्मन की सेना भी अपनी पूरी तैयारी के साथ मुकाबले में आई घोर युद्ध हुआ इसलामी सेना ने अपनी बहादुरी के जौहर दिखाए दुश्मन के हजारों लोग मारे गये इस्लामी सेना विजयी हुई देवनारायण और भोजनेर को जिन्दा गिरफ्तार करके सालार शाहू अलैहिर्रहमां की सेवा में हाजिर किया आपने उसी समय बेड़ियां डालकर उन्हें सतरिक भेज दिया सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां को लिखा कि इन कैदियों को सख्त निगरानी में रखा जाए। हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां ने उन्हें हजरत सैफुददीन सुरखुरू सालार अलैहिर्रहमां के पास बहराइच भेज दिया।

सालार शाहू रहमत उल्लाह अलैह ने उन दोनों इलाकों पर पूर्ण रूप से कब्जा जमाने के बाद मलिक अब्दुल्लाह को कुछ फौज देकर कटरा की निगरानी सुपुर्द कर दी और मानिकपुर प्रबंध मलिक कुतुब हैदर को सौप कर खुद शान व शौकत के साथ सतरिक वापस आए।

(डालमऊ रायबरेली की फतह)

डिस्ट्रिक्ट गजेटियर रायबरेली के अनुसार सालार शाहू ने डालमऊ जिला रायबरेली को भी फतह करके मलिक अब्दुल्लाह की मातहती में दिया। शायद कटरा मानिकपुर से वापसी पर वह इस तरफ़ तशरीफ लाए होंगे इस्लाम की तबलीगी टुकड़ियां दसरे स्थानों पर भी भेजी गयीं जैसे देवो एचोली महेन्द्र जिला बाराबंकी कि जिनकी बाबत स्थानीय रवायते जिला बाराबंकी के डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ने दर्ज की हैं (जीवनी सय्यद सालार मसऊद गाजी)

कड़ां और मानिकपुर में आप के साथियों के मज़ारात

उन स्थानों पर दूसरे स्थानों की तरह से सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमां के बारे में बहुत सी स्थानीय रवायतें हैं जिनका वर्णनं अब्दुल्ला खां अलवी ने अपनी पुस्तक तारीखे कटरा में मौजूद हैं जिनमें से एक बुज़ुर्ग का नाम हाजी जमाल था। मानिकपुर में एक स्थानीय रवायत ये है कि सैय्यद सालार मसऊद गाज़ी अलैहिर्रहमां की शहादत के बाद यहां के राजा ने जो भड़ जाति का था आपके एक साथी मलिक इमामउद्दीन के साथ गुस्ताख़ी करनी चाही तो उनकी दुआ से जमीन फट गई। मलिक इमामउद्दीन और उनकी लड़की उसके अन्दर समा गए और उसी समय से लोग उस क़ब्र पर नज़्र–ओ नियाज़ पेश करते हैं उसी पुस्तक में यह भी लिखा है कि अब्दुल्ला खां अलवी उस मज़ार की मरम्मत के बाद बादशाह देहली ने कराई।

शेर से मुक़ाबला

सतरिख में क़याम के दौरान हज़रत सालार शाहू रहमतउल्लाह अलैह और सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमां घोड़े पर सवार हो कर सैर व शिकार पर निकले। शिकार खेलने के बाद नमाज़े ज़ोहर अदा करके बाप–बेटे दोनो अपनी क़याम गाह की तरफ लौट रहे थे कि सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमां की नज़र एक शेर पर पड़ी जो एक पेड़ के नीचे बैठा था आपने शेर के बारे में पिता से कुछ न कहा और उन से कहा कि आप क़याम गाह पर तशरीफ ले चलें मैं अभी थोड़ी देर में आ रहा हूं।जब पिता जी आगे बढ़ गए तो आप तेज़ी से घोड़ा बढ़ाकर शेर की ओर चले जब आप शेर के निकट पहुंचे तो उससे आंखें चार हुईं शेर आप को देखकर गुर्राया और ज़ोरदार गरज के साथ छलांग मार कर आप पर ज्यों ही हमला किया आपने बड़ी बहादुरी और हुनर मन्दी से उस शेर पर ऐसा वार किया कि पलक झपकते ही शेर दो टुकड़े होकर ज़मीन पर ढेर हो गया। शेर की चिहाड़ सुनकर सालार शाहू अलैहिर्रहमां पलट कर अपने पुत्र के क़रीब आए तो देखा कि शेर दिल बेटे ने एक शेर बबर को पछाड़ा है।

वह बहुत खुश हुए और उनकी बहादुरी की बड़ी तारीफ की।

हज़रत सैय्यद सालार मसऊद ग़ज़ी अलैहिर्रहमां की वीरता का यह एक छोटा करिश्मा है वरना तो आपका पूरा जीवन बहादुरी के कारनामों से भरा पड़ा है वीरता और बहादुरी तो आपको अपने पूर्वज हज़रत शेरे खुदा अली मुर्तुज़ा रज़ी0 से विरासत में मिली थी किसी ने क्या खूब कहा है।

अली का घर भी वो घर है कि जिस घर का हर एक बच्चा।

जहां पैदा हुआ शेरे खुदा मालूम होता है।

उस समय सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमां कि आयु लगभग 18 साल थी।

हज़रत सैफुद्दीन सुरखुरू सालार रहमतुल्लाह अलैह की दरख्वास्त

सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमां ने सुल्तान महमूद ग़ज़वी से ये वादा करके भारत आए थे कि सैर व शिकार से दिल बहला कर बहुत जल्द वापस आ जाऊंगा किन्तु भारत आने के बाद तबलीगी मिशन का सिलसिला तूल पकड़ गया और हालात ने वापसी का मौक़ा ही नहीं दियाइसके बाद माता का स्वर्गवास और पिता की आमद वापसी के ख्याल पर प्रभाव डालने लगे और भारत में लगातार तबलीग का ख्याल दिलों में समा गया भारत में आपकी मंशा केवल दीन की तबलीग थी। तबलीग के सिलसिले में आपने कभी तलवार उठाने में पेश क़दमी नहीं की मगर जब आपके तबलीगी मिशन को धमकी या लड़ाई से रोकने की कोशिश की गई तो आपने और आपके साथियों ने अपनी रक्षा के लिए तलवार उठाई और हमले किए।

इसी लिए जब कटरा और मनिकपुर के राजाओं ने । बहराइच के राजाओं को हमले के लिए उकसाया तो आपने जंगी मसलिहत के पेशे नज़र (तौर पर)बहराइच के राजाओं की हरकतों पर नज़र रखने और पेश क़दमी रोकने की गरज़ से सैफुद्दीन सुरखुरू सालार अलैहिर्रहमां को एक फौजी दस्ता देकर बहराइच रवाना किया था।

कटरा और मानिकपुर के राजाओं की गिरफ्तारी से आस–पास के राजाओं में बेचैनी फैल गई उन्हें फिक्र हुई कि मुसलमान गैर मुल्क से आकर हमारे मुल्क में पैर जमा लिए हैं हमारे लिए मुस्तकिल ख़तरा बन चुके हैं उन्हें यहां से भगाना आवश्यक है। चुनान्चे तमाम राजा अपनी–अपनी सैनिक टुकड़ियों के साथ बहराइच पहुंचे और चारों तरफ से सैफुद्दीन सुरखुरू सालार रह0 को घेर लिया। सुरखुरू सालार रह0 ने सतरिख सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमां की खिदमत में कहला भेजा कि दुश्मनों ने चारों तरफ से घेर लिया है। हमारे बचने की कोई राह निकालिए और हमारी सहायता कीजिए अब सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमां के पास इसके सिवा और कोई चारा न था कि आप खुद बहराइच जाएें।

सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमां की बहराइच आमद

हज़रत सुरखुरू सालार रहतुल्लाह अलैह के प्राथना पत्र पर विचार करने के बाद सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमां ने यही फैसला लिया कि ऐसी खतरनाक सूरते हाल से निपटने के लिए मेरा खुद बहराइच जाना ज़रूरी है पिता की सेवा में हाज़िर हुए और बहराइच की सूरते हाल से बा खबर करते हुए इजाज़त चाही पिता को एक छंण के लिए भी बेटे की जुदाई गवारा न थी लेकिन बहराइच की खतरनाक सूरते हाल के कारण पिता ने उन्हें बहराइच जाने की आज्ञा दे दी पिता से आज्ञा पाकर 27 रमज़ानुल मुबारक 423 हिजरी जब आपकी उम्र 18 वर्ष थी बहराइच के रवाना हुए।

जंग के बादल छंट गये

सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमां अपने पिता से आज्ञा लेकर हजरत सैफुद्दीन सुरखुरू सालार रहमतुल्लाहे अलैह की सहायता के लिए एक विशेष सैनिक टुकड़ी लेकर बहराइच पहुंचे जब आपकी बहराइच पहुंचने की सूचना उन राजाओं को मिली जिन्होंने हज़रत सैफुद्दीन सुरखुरू सालार रहमतुल्लाहे अलैह को घेर रखा था उनके दिलों पर पहले से ही आपकी बहादुरी और रोब का दबदबा छाया हुआ थाआपके मुक़ाबले से उनकी हिम्मत जवाब दे गई बिना युद्ध किए

मैदान छोड़कर अपने–अपने इलाक़ों की ओर वापस हो गए। बहराइच जंगली इलाक़ा था यहां शिकार की कमी न थी आप शिकार के शौकीन थे बे फिक्र हो कर सैर व शिकार में मशगूल हो गए।

पिता का देहान्त

सैय्यद सालार मसऊद गाज़ी अलैहिर्रहमां को बहराइच आए हुए लगभग दो महीने हुए थे कि सतरिख से अब्दुल मलिक, फिरोज़ का एक क़ासिद खत लेकर आया सबसे पहले क़ासिद की मुलाक़ात मोअज्ज़म खान से हुई क़ासिद को परेशान हाल देखकर उन्होने हाल दरयाफ्त किया कासिद ने बड़े गमगीन लहजे में हज़रत सालार शाहू रहमतुल्लाहे अलैह के इन्तिक़ाले पुरमाल की खबर सुनाई और खत पेश किया माअज़्जम खान ने खत अपने पास रख लिया और मना कर दिया कि किसी और जगह ये न बयान करना।

दूसरे दिन मोअज़्ज़म खान सरफुल मलिक, निज़ामुलमलिक, ज़हरूल, मलिक मलिक नेक बख्त और दूसरे बड़े वज़ीर सब एक स्थान पर जमा होकर अब्दुल मलिक फिरोज़ का खत हज़रत ग़ाज़ी अलैहिर्रहमां की खिदमत में पेश किया। खत का मजमून कुछ इस तरह था कि बतारीख 11 सव्वाल 423 हिजरी में मृत्यु के बाद आपका वहीं दफन कर दिया गया। सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां अपने सफीक बाप की मौत की खबर सुनकर बेहाल हो गये मारे ग़म और सदमें के आप पर बेहोशी छा गई कुछ समय के बाद जब आपके हाशे हवाश वजह हुए सब्र व शुक्र से काम लेते हुए आपने फरमाया कि अल्लाह के फैसले से हम राजी हैं।

पिता की मौत पर एक बेटे को ग़म ओर सदमा होना एक फितरी बात है फिर ऐसा बेटा जिसके दिन रात मैदाने जंग में गुजर रहे हो जहां कदम कदम पर एक तजुरबा कार फौजी सरदार के मश्विरा की जरूरत हो ऐसे समय में हजरत बाजी अलैहिर्रहमां के दिल पर पिता की मृत्यु से क्या कयामत टूटी हागी उसे हर कोई आसानी से समझ सकता है मगर कुरबान जाइए उस जवांसाल मर्दे मुजाहिद पर कि जो माता पिता जो दानों के साये से महरूम हो गया हो लेकिन मुजाहिदाना हौंसले पस्त न हुए और इन मुसीबत की घड़ी में शीशा पिलाई हुई दीवार की तरह जमे रहे ऐ गाजी तेरी जवां मर्दी को सलाम।

जो जितने महान होते हैं उन्हें उतनी ही बड़ी मुश्किलों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है

सय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां को अपने पिता की मृत्यु के बाद जब कुछ इतमिनान हुआ तो अब्दुल मलिक फिरोज को सतरिख का राज काज सौंप दिया घोड़ा कीमती पोशाक देकर तसल्ली दते हुए कहां कि सब्र व शुक्र से काम लीजिए और खुदा पर भरोसा करके अपना काम अंजाम देते रहिये।

आप सैर व शिकार के बड़े शौक़ीन थे किन्तु पिता की मौत के बाद गम से इतना निढाल हुए कि दस दिन तक सैर व शिकार के लिए नही गये धर्म गुरूओं आलिमों और बुजुर्गों के साथ बैठते उठते सदका व खैरात करते कुरआन की तिलावत करते और गरीबों का ज्यादा से ज्यादा दान देते दस दिन गुजर जाने के बाद आप शिकार के लिए निकले और तबलीगी मिशन की ओर ध्यान दिया यानी धर्म प्रचार में लग गये बहराइच की भूमि पर कदम रखने के बाद अकसर आप यह फरमाते कि ऐ दोस्त जबसे हम हिनदुस्तान में आए हैं हमें एक पल के लिए भी चैन व सुकून नसीब नहीं हुआ एक दिन भी बगैर तकलीफ और बे फिक्री के साथ नहीं गुजारा खास कर बहराइच जहां जंगल और बीराना बीराना है एक घड़ी भी इतमिनान नसीब नहीं हुआ इसके बावजूद भी हमारा दिल इसकी तरफ मायल है। इस भूमि से प्यार मुहब्बत की खुश्बू महसूस हो रही है यहां की मिटटी और जलवायु में एक अजीब कशिश है आपकी ऐसी हसीन गुफ्तुगू सुनकर लोग अच्छी तरह समझने लगे कि आप इशारों इशारों में क्या कहना चाहते हैं उनके गमज़दा चहरों से सारे आसार नुमाया होने लगे फिर अपने लोगों के चहरों से वो बातें पढ़ लीं जिससे वह फिकर मन्द और गमजदा हो रहे थे अपने बात का रूख दूसरी बातों की ओर मोड़ दिया आप हमेशा रसूलल्लाह स0 की हदीस पाक के मुताबिक मौत की फिक्र में रहते।

ख्वाबे शहादत (शहादत का ख्वाब देखना)

मनुष्य का जीवन दुख तकलीफ आराम खुशी व गमी से भरपूर है सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रमां नें यूं ही दो तीन महीने रन्ज व खुशी में बिताए जब मुहर्रम का चांद देखा गया और नया साल 424 हिजरी यानी 1030 ई0 का सूर्य उदय हुआ आपने प्रात; काल एक बड़ी सभा करके तमाम लश्करियों को जमा किया उन्होंने खाना खिलाया और इतरों इनाम अता करके रूख्सत किया। और खुद ताजा वजूह करके दोपहर के समय फरमाने लगे आंख लग गई आंख लगते ही ख्वाब देख रहे हैं कि दरयाए गंगा के किनारे प्रिय पिता का खमा लगा हुआ है खूब सजावट है हर तरफ खुशी का समा है आप खेमें में दाखिल होते हैं क्या देखते हैं कि प्रिय रहमदिल माता फूलों का खूबसूरत सहरा लिए हुए किसी की प्रतीक्षा में खड़ी है और उनका नूरानी चहरा खुशियों से चमक रहा है। आपको देखकर उनकी खुशियों की इन्तिहा न रही कहने लगी बेटे मसऊद जल्दी आओ हमने बड़े अरमान से तुम्हारी शादी रचाई है आप भी खुशी में झूमकर मां के निकट पहुंच गये मां ने अपने प्यारे बेटे के सर पर सहरा बांध दिया। फिर सादियाने बजने लगे चारों तरफ खुशी का माहौल था शोर व गुल होने से अचानक आपकी नींद खुल गई हैरत ज़दह होकर सेवकों से पूछा कि क्या समय है उन्हें बताया गया कि जोहर का वक्त है आपने फौरन वजू करके नमाज़े जोहर बा जमाअत अदा की फिर दुरवेशों आलिमों और सलाह कारों को तलब किया उनसे अपना ख्वाब ब्यान कर ताबीर पूछी सभी लागों ने एक जबान होकर यही ताबीर बताई कि आप शहादत से सरफराज़ हांगे अर्थात आप धर्म के नाम पर शहीद हो जायेंगे ख्वाब की ताबीर सुनकर आपने एक सर्द आह खींची और खुदा का शुक्र अदा किया व उपस्थित लोगों ने आपकी ओर एक हसरत भरी निगाह डाली और उनके मुंह से निकलने वाली कुरआन की उस आयत को गौर से सुना जिसका अर्थ ये निकलता है कि हर जीव को मौत का मज़ा चखना है उस व्यक्ति की खुशनसीबी का क्या कहना जो शहादत का जाम पीकर जिन्दा व जावेद हो जाएगा खुदा की बारगाह में मैं यही दुआ करता हूं कि हक खुदा मुझे और मेरे साथियों को शहादत की नेमत से सरफराज फरमाएं।

बहराइच के राजाओं का पैगाम-चेतावनी

हजरत सैय्यद सालार गाजी अलैहिर्रहमा ने बहराइच आते समय पिता से यह वादा करके आये थे कि जल्द ही वापस आ जाऊंगा लेकिन हालात ने इस मोड़ पर पहुंचा दिया कि अब वापसी का ख्याल दिल से निकल गया। माता पिता के स्वर्गवासी होने और गजनी दरबार से सम्बन्ध टूट जाने के कारण वह अब और आजाद ख्याल और लापरवाह हो गये कि बहराइच में रहना खतरनाक है या यहां से चला जाना मुनासिब है।

आप पूरी आज़ादी के साथ बेखौब व खतर बहराइच में सैर व शिकार में मसरूफ रहने लगे यह बात यहां के राजाओं को खटकने लगी कि कहीं यह नौजवान यहां पैर न जमा ले। और आगे चलकर हमारे लिए खतरा बन जाये। क्योंकि वह लोग सुल्तान महमूद गजनवी आपके पूज्य पिता और खुद आपकी वीरता से भली भांति परिचित थे और भारत के कई युद्धों में उनकी बहादुरी के जौहर देख और सुन चुके थे। इस लिए बहराइच के चारों तरफ के तमाम राजाओं ने आपस में मशवरा करके एक संयुक्त मोर्चा बनाया । और एक जुट होकर आपके पास एलची भेजा उस एलची की मुलाकात आपके एक साथी मलिक हैदर से हुई। उन्होंने उस एलची की मुलाकात आपसे करायी एलची ने राजाओं का खत आपकी सेवा में पेश किया। उन्होंने अपनी ताकत की गुरूर में लिखा था कि तुम यहां चढ़कर आये हो तुम्हें इस मुल्क का हाल मालूम नहीं यह तराई का क्षेत्र है यहां शत्रु टिकने नहीं पातें अतः खूब अच्छी तरह सोच विचार लो और यहां से जाने की फिक्र करो।

हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमा ने एलची से पूछा कि कौन—कौन से राजा जमा हैं। और उनके नाम क्या हैं। एलची ने राजाओं के नाम कुछ इस तरह गिनाए—(1) राय रायब (2) राय सायब (3) राय अर्जुन (4) राय भीखन (5) राय किंग (6) राय कल्याण (7) राय निगुरू (8) राय सिघरू (9) राय करन (10) राय बीरबल (11) राय अजय पाल (12) राय श्रीपाल (14) हरपाल (15) राय हरकुन (16) राय हरखू

(17) राय निरहू (18) राय गिरजाधारी (19) राय देव नारायण (20) राय नरसिंह।

एलची ने राजाओं के नाम गिनाने के बाद कहा कि यह तमाम राजा आठ लाख सवार और तीन लाख पैदल फौज के साथ जमा हैं और युद्ध का प्लान बना चुके हैं। आपने लिखित रूप में जवाब न दिया बल्कि एलची के साथ मलिक नेक दिल को सात सवारों के साथ राजाओं के पास भेजा मलिक नेक दिल को राजाओं के पास भेजने का एक मकसद यह भी था कि शत्रु की जंगी ताकत का अंदाजा लगाया जा सके। मलिक नेक दिल ने तमाम राजाओं के सामने रस्मी बात चीत के बाद यह कहा कि हमारे सरदार ने आपका मिजाज पूछा है। और फरमाया है कि हम तो यहां की तारीफ सुनकर शिकार खेलने के लिए आये हैं। हमें अच्छी तरह मालूम है कि यह जंगल और वीरान जगह है, हम यहां बसने के लिए नहीं आये। कुछ दिन शिकार और सैर व तफरीह करके लौट जायेंगे अगर आपलोग हमसे कोई खतरा महसूस करते हैं तो इस थोड़ी सी मुद्दत के लिए एक आरजी सुलह नामा लिखवा लिया जाये। और दोस्ताना माहौल में रहकर मुल्क को आबाद किया जाय। यह एक माकूल बात थी मगर उन राजाओं ने इस बात पर भरोसा न किया और उसके जवाब में यह कहा कि जब तक हमारे तुम्हारे बीच युद्ध न हो जाये सुलह शान्ति बेकार है तुम लोग जबरन हमारे मुल्क में आकर डेरा जमाये हो अब तक हम नजर अंदाज करते (टालते) रहे मगर अब अधिक देर तक तुम्हारा यहां रहना हमें बर्दाश्त नहीं। अगर तुम अपनी खैरियत चाहते तो अपना रास्ता लो और सर्यू नदी के उस पार निकल जाओ नहीं तो आज ही कल में जंग छिड़ सकती है उन राजाओं में राय कल्याण कुछ प्रसिद्ध बुद्धिमान और संजीदा व्यक्ति था उसने कहा हे रायों तुम्हारी मत मारी गयी है आखिर तुम लोग क्या सोच कर युद्ध के लिए बजिद हो क्या तुम लोग यह समझ रहे हो कि सैय्यद सालार मसऊद गाजी हमसे डर कर सुलह करना चाहते हैं। अगर यह सोच रहे हो तो सरासर यह भूल है यह गौर करने की बात है कि कल का लड़का जो बड़ा बीर और

बहादुर है वह किसी ताकत के सामने सर झुका दे यह सम्भव नहीं क्या तुम लोगों को नहीं मालूम कि सुल्तान महमूद गजनवी की आंख का तारा होने के बावजूद जरा सी बात पर शाही ऐश व आराम को लात मारकर गजनी से चल दिया माता पिता का प्रेम भी उसे घर से निकलने से बाज न रख सका। वीरता और साहस का यह हाल कि थोड़ी सी फौज लेकर बड़ी बड़ी शक्तियों को हराता हुआ हिन्दुस्तान के अधिकांश के भाग पर कब्जा जमा लिया। पिता सतरिख में चल बसा और माता पुत्र की जुदाई का दुख सहते सहते दुनिया से चल बसी लेकिन धुन से पक्के और हिम्मत वाले इन्सान ने किसी की पर्वाह न की अगर वह हमसे सुलह की बात करता है तो केवल इंसानियत के नाते वरना मैं तो यही समझता हूं कि वह हम सबका मजाक उड़ा रहा है अतः मेरा यह मशवरा है कि वाकई अगर वह सुलह पर तैयार है तो हमें उसे ठुकराना न चाहिए। राय कल्याण की बातें सुनकर तमाम राजा उस पर बरहम हो गये और उसको बुजदिल ठहराने लगे उसने अधिकांश लोगों को अपने विरूद्ध पाया तो मौन धारण कर लिया अर्थात खामोशी अख्तियार कर ली। अनेक राजाओं के विरोध के कारण सुलह की कोई राह निकलती नजर न आयी आखिर में मलिक नेक दिल को यही उत्तर दिया गया कि तुम अपने सालार से कह दो कि उनके लिए यही बेहतर है कि हमारे मुल्क से खामोशी के साथ निकल जायें वरना फिर हमारे और उनके दरमियान तलवार ही फैसला करेगी। मलिक नेक दिल ने उन राजाओं के नापाक इरादों को अच्छी तरह समझ लिया और आकर सैय्यद सालार सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमा को उनके विचारों से अवगत कराया।

बहराइच की धर्ती पर आपकी आमद

हिमालय की गोद में तमाम राज्यों के राजा अपनी अपनी सैनिक टुकड़ियों के साथ मोर्चा बनाकर मुसलमानों को इस संसार से मिटा देने की नियत से पूरे असलहों से सुसज्जित होकर जंगल में भखला नदी के तट पर डेरा जमा लिया।

इस्लाम की यह शिक्षा है कि जो तुम्हारे मानव अधिकार छीनने की कोशिश करे तुम पर जुल्म व सितम ढाये तुम्हारे ईमान व आस्था पर आक्रमण करे और तुम्हारी आजांदी छीन ले, तुम्हें अपने धर्म के अनुसार जीवन बिताने से रोक य ऐसा करने के लिए लड़ाई पर अमादा हो कि तुम इस्लाम के मानने वाले हो तो उसके मुकाबले में हर्गिज कमजोरी न दिखाओ और अपनी पूरी ताकत उसके इस जुल्म को मिटाने में लगा दो।

(कुरआन की एक आयत का अनुवाद)

जो लोग तुमसे लड़ते हैं उनसे खुदा की राह में जंग करो मगर लड़ने में हद से तजाउज न करो यानि जुल्म पर न उतर आओ।

हजरत सैय्यद सालार सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमा ने इसी इस्लामी जंगी तालीम के पेशे नजर जब आपकी सुलह की तजवीज को ठुकरा दिया गया और जंग की धमकी दी गयी तो आपने सुरक्षात्मक युद्ध के लिए आपस में सलाह मशवरा किया। तमाम अमीरों के सामने आपने एक छोटो सा भाषण देते हुए कहा कि शत्रु हमसे लड़ाई पर आमादा है और हमें संसार से मिटा देने के लिए तैयार बैठे हैं। उन्होंने हमारी सुलह की बात ठुकरा दी है और हमें युद्ध के लिए मजबूर कर रहे हैं। अब हमारे पास इसके सिवा कोई चारा नहीं कि अपनी सुरक्षा के लिए युद्ध करें आप लोग अपनी अपनी राय दीजिए कि जंग कैसे लड़ी जाये क्या हम अपने ठिकाने ही को युद्ध का मैदान बनायें या शत्रु पर चढ़ कर हमला करें ? कुछ अमीरों ने मशवरा दिया कि दुश्मन को और आगे बढ़ आने का मौका दिया जाय मगर अधिकांश लोगों की राय हुई कि दुश्मन को आगे बढ़ने का अवसर दिये बगैर चढ़कर हमला कर दिया

जाय। सब इस पर राजी हो गये और लश्कर को तैयार होने की आज्ञा दे दी गई।

शत्रु सेना भखला नदी के किनारे डेरा डाले थी, इस्लामी लश्कर शाम को मगरिब की नमाज अदा करने के बाद भखला नदी की ओर चल पड़ी। रातों रात सफर करके प्रातःकाल उनके मुकाबले में पहुंच गये। इस्लामी लश्कर थका हारा था राजाओं ने उनकी थंकन से फायदा उठाया और उसी समय मुकाबले केलिए डट गये। सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां भी जंग के लिए तैयार हो गये जबकि युद्ध के नियम के अनुसार दिन और रात गुजार कर मुकाबला होना चाहिए था मगर वो लोग जो एक खुदा के बन्दे हों और उसके प्रचार के लिए सर पर कफन बांधकर निकले हों उनको रात दिन जंगल और रेगिस्तान सब एक जेसे लगते हैं।

दश्त तो दश्त है,दरिया भी न छोड़े हमने

बहरे जुलमात में दौड़ा दिए घोड़े हमने

युद्ध तो होना ही था क्योंकि शत्रु उनको मैदान में बुला रहा था। एक रात क्या हजारों रातों के जागे और लगातार सफर किए हुए होते तो भी जंग से मूंह ना माड़ते।

सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रमां ने लश्कर को कुछ इस तरह तरतीब दिया कि सालार सैफुददीन सुरखुरू को हरावल दस्ता दिया और अमीर नसर उल्लाह व सालार रजब नसीर उददीन, बहाउददीन, अमीर खिज्र को मुकदमतुल जैश बनाया और स्वंय बीच की कमान हाथ में लेकर हमला कर दिया।

सालार सैफुददीन सुरखुरू से दो घंटे तक मुकाबला होता रहा कभी शत्रु पक्ष का पल्ला भारी पड़ता, मुसलमानों को पीछे हटना पड़ता और कभी मुसलमान आगे बढ़ जाते और उन्हें पीछे हटना पड़ता। हार जीत के आसार नज़र नहीं आ रहे थे तो सालार रजब, अमीर नसर उल्लाह और अमीर खिज्र ने दाहिनी ओर से और अमीर अहमद, अमीर मोहम्मद बल्खी, अमीर तुर्क व अमीर जाफर बाज़ैद ने बायीं तरफ से घोड़े बढ़ा दिये और एक साथ एक बड़ा हमला कर दिया फिर तो घमासान का युद्ध हाने लगौ

दानों ओर के वीर अपनी वीरता के जौहर दिखा रहे थे। अन्त में मुसलमानों की फतह हुई, शत्रु हारे और उनमें भगदड़ मच गई कई राजाओं ने जब अपनी फौज के पांव उखड़ते देखे तो स्वंय तलवारें ले–लेकर मैदान में आ डटे, किन्तु कोई भी चाल उनके काम न आ सकी और उखड़े हुए पांव पुनः जमा न सके। फतह मुसलमानों के हाथ लगी एक लाख से अधिक लाशें छोड़कर शत्रु सेना भागने पर मजबूर हो गई लगभग पचास हजार मुसलमानों ने भी जामे शहादत नोश फरमाया। इतने साथियों का प्रदेश में छुट जाना कुछ कम दुखः की बात न थी मगर वह खुद ही राह में शहीद हुए थे। एक साथ इतने लागों का शहीद होना मुसलमानों के लिए इतना बड़ा और शदीद ग़म होना फितरी बात थी लेकिन इस बात से खुद ही राह में मरने या शहीद होने वाले मरकर मिटटी में नहीं मिलते बल्कि वह अपनी कबरों में जिंन्दा रहते हैं और खुदा उनको राजी देता है जिसकी शहादत कुरआन ने दी है। यही बात सोचकर उन्हें कुछ सुकून मिलता था।

सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां ने एक सप्ताह तक मैदान ही में ठहर कर शहीदों की लाशों को दफनाया और आठवें रोज बहराइच वापस हुए गर्मी का मौसम था गरम हवा चल रही थी और सुबह से एक लम्बा सफर तय करने के लिए चल रहे थे थकन का काफी एहसास हो रहा था लिहाज़ा सूरज कुण्ड तालाब के निकट आकर एक महुवे के वृक्ष के नीचे आराम करने के लिए ठहर गए आपको यहां कुछ सुकून महसूस हुआ और आप कुछ देर उसी महुवे के पेड़ के नीचे आराम फरमा रहे।

पहले मुकाबले का कारण

सबसे अहम बात यह है कि फारसी की ये कहावत सादिक आई अर्थात सत्यता प्रतीत करती है कि तंग आमद बजंग आमद अर्थात तंग व्यक्ति जंग पर आमादा हो जाता है सैय्यद मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां के मिशन इज़्जत व हिम्मत ने इस बात की इजाज़त न दी कि राजाओं की धमकी से डरकर यहां से चले जाते बल्कि अपनी ओर से उन्हें सुलह की

बात रखी जिसमें दानों पक्षों की भलाई और लड़ाई से बचने का रास्ता मिलता था किन्तं जब उनकी यह बात न मानी गई तो चले जाने पर लड़ाई की ओर बुज़दिली पर मौत को वरीयता दी यदि हिन्दु खुददार सूरमा इस हालत पर होते तो शायद वो भी नहीं करते। इतिहास में इसकी तमाम उदाहरण मिलते हैं कोई ऐतराज कर सकता है कि सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां ने पहले हमला करके जारेहाना कार्यवाही की न की अपना बचाव किया मगर यह सोचना गलत होगा। क्योंकि युद्ध में कोई मर्तबा बजाय शत्रु के आक्रमण का इन्तिजार करने के उसकी दिशा और मौके का लिहाज़ करके उसके आक्रमण को रोकने की ग़रज़ से पहले चढ़ाई कर दी जाती है। अतः पहली लड़ाई का नतीजा भी यही साबित करता है कि सैय्श्द सालार मसऊद गाजी की यह कार्यवाही सही साबित हुई ।

पहला मुकाबला कहां हुआ

अब्बास खां शेरवानी लिखते हैं–

अब प्रश्न यह उठता है कि वर्तमान भुगोल और नक्शे के अनुसार लड़ाई किस स्थान पर हुई कथला नदी, भक्ला नदी से ही निकलती है। अर्थात उसकी शाख बनकर आगे बह चली जो आजकल तहसील नानपारा जिला बहराइच उत्तर पश्चिम काने में जंगल में चौदह, पन्द्रह मील बहकर राप्ती नदी में मिल जाता है। मिराते मसऊदी के हठीले वाले नुस्खे में हमको इस जंगल का नाम तारामणी मिला किन्तु किसी ओर पुस्तक में ये नाम नहीं पाया। वर्तमान काल में इस नाम का काई जंगल बहराइच के जंगलों में से नहीं है।मगर ये ज़रूर है कि बहराइच और नेपाल की सीमा से उत्तर चश्चिम में पच्चीस तीस मील की दूरी पर जंगल मं एक स्थान तारामाल प्रसिद्ध है। हो सकता है कि उस ज़माने में कोई हिन्दु बुज़र्ग फक़ीर तारामुनी हो जो यहो अपना स्थान जमाये हुए हो यह जंगल का नाम तारावन है। और पुस्तक की गल्ती से तारामुनी को गया हो। भक्ला नदी वर्तमान पर्गना चर्दा तहसील नानपारा में एक तालाब से निलता है ।

जिसको बुजबुजा कहते हैं। प्राचीन गांव चर्दा बहराइच से छब्बीस मील दूर से डाक्टर फूहरर की द्वितीय पुस्तक पेज संख्या दो सौ तिरान्नवे के अनुसार चरदा में राजा शहूर देव या सुहेलदेव एक किला बनवाया था और ये वही राजा है। जिसका वर्णन आगे आएगा। और जो इसके बाद की लड़ाइयों में सैय्यद सालार मसऊद गाज़ी से युद्ध किया दूरी के अनुसार रात भर सफर के अनुसार भक्ला नदी के अनुसार यही ख्याल पैदा होता है। कि पहला युद्ध पर्गना चरदा में कथला नदी से दक्षिण में हुआ। यह कहना मुश्किल है कि उस समय खुली जगह जो युद्ध के लिए उपयुक्त थी। कहां – कहां थी और जंगल किन –किन स्थानों पे थे। इसकी इतनी विस्तार से जानकारी हजारों वर्ष पश्चात हो जाना क्या कम आश्चर्य हैं।

जुमला पर्वत के आस-पास के राजाओं का आप की आधीनता स्वीकार करना

मुठठी भर परदेशी मुसलमानों ने जब पहली लड़ाई जीत ली तो चारो ओर उनकी बहादुरी और वीरता की धाक जम गई। और जो राजा इस युद्ध में शरीक नहीं थे वो भी उनसे डरने लगे जैसे कि जमला पर्वत के राजाओं जोगी दास और गोविन्द दास ने एक एलची के द्वारा सैय्यद सालार मसऊद गाज़ी अलैहिर्रहमां की खिदमत में कुछ तोहफे भेजे और उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की आप ने दोनों राजाओं को उनके एलची के द्वारा कहला भेजा कि आप लोग हमसे कोई खतरा महसूस न करें यदि आप ने आधीनता स्वीकार कर ली है तो निश्चिन्त रहिऐ और रही मिलने की बात तो आप लोग जब चाहें बे खटक यहां आ जा सकते हैं। और हमसे मिल सकते हैं किन्तु आवश्यक तकलीफ उठाने की कोई आवश्यकता नहीं है। आप लोग अपने देश पर काबिज़ रहें।

जमला पर्वत के राजा के एलची के आने का कारण ये भी हो सकता है कि उस काल के भूई नस्ल के लोग अपने धर्म में इतने पक्के हिन्दू न थे जैसे कि कोह घाटी के और मैदानी क्षेत्रों के जमला पर्वत एक समय में तिब्बत का ही एक भू भाग था और यहां के भूई जाति के लोग तिब्बत के बुद्ध धर्म और हिन्दुस्तान के हिन्दू धर्म के प्रभाव के अन्तर्गत

आते थे। वो गोरखों की विजय से महफ़ूज़ रहे अर्थात बचे रहे और इसी कारण से कुमाइयूं गढ़वाल की तरह यहां पर हिन्दू धर्म पूरी तरह से न पनप सका। मिराते मसऊदी ने लिखा है कि सहर देव राजा गोण्डा और उन राजाओं का परिवार एक ही था मगर इससे यह नतीजा अवश्य निकलता है कि पहले युद्ध में पासा पलट जाने पर यत प्रभाव ज़रूर दिखा कि सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी अलैहिर्रहमां का सिक्का लोगों के दिलों में बैठने लगा वरना इस खुसामद की क्या आवश्यकता थी ।

दूसरा मुकाबला

पहले युद्ध में हारने के कारण हिन्दू राजाओं को बड़ा अपमान सहन करना पड़ा क्योंकि मुठठी भर मुसलमान एक बड़ी हिन्दू सेना को हराने में कामयाब हो गऐ थे अतः हिन्दू राजाओं ने मुसलमानों से बदला लेने के लिए देश भर के अनेक हिन्दू राजा महाराजाओं को पत्र लिखे कि यदि समय रहते हमारी सहायता न की गयी तो पूरा देश गुलाम बन कर रह जाएगा।

मिराते मसऊदी अपनी फारसी की एक पुस्तक में लिखते हैं जिसका हिन्दी अनुवाद यह है

वह राजा-- महाराजा जो युद्ध में हार चुके थे उन्होंने अपमानित हो कर अपने तमाम राजाओं को पत्र लिखा कि यह देश हमारे तुम्हारे बाप–दादाओं का है इस लड़के ने बल पूर्वक इस पर अधिकार कर लिया है निवेदन है कि जितनी जल्दी हो सके हमारी सहायता करो वरना यह देश हमारे हाथों से निकल जाएगा। इस पर तमाम हिन्दू राजाओं ने एक होकर कहा कि हम बहुत जल्द तुम्हारी सहायता के लिए पहुंच रहे हैं। तुम लोग भी युद्ध की तैयारी बनाए रखो राय सहर देव सुजौली से और बहर देव सुमबलोन से एक बड़ी सेना के साथ दूसरों से पहले ही हिन्दू सेना से आ मिले। ..

सुल्तान सुबकतगीन और सुल्तान महमूद ग़ज़नवी की बहादुरी और भारत में उनकी विजयों से प्रभावित हो कर यहां के राजाओं के दिलों पर एक डर छाया हुआ था इसी कारण भारत के तमाम राजाओं ने

मिल कर बहराइच के राजाओं के पत्र पर उनकी सहायता के लिए विचार करने के लिए इकटठा हुए और यह सोच कर उनकी सहायता का यक़ीन दिलाया कि सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी को तो एक कमसिन नौजवान हैं किन्तु वीरता और बहादुरी में अपना जवाब नहीं रखते।

बड़ी से बड़ी ताक़त के सामने वह सर झुकाने पर मौत को तरजीह देने का हौसला रखता है। यदि हमने उसको प्रथम चरण में अपनी पूरी शक्ति से उसके हौसले व हिम्मत पर चोट नहीं की तो वह हमारे लिए एक बड़ा संकट पैदा कर देगा और उसे पार करना मुश्किल हो जाएगा और कोई बात बनाए न बनेगी इसी विचार से तमाम हिन्दू राजा बहराइच के एक प्लेटफार्म पर जमा हुए उन राजाओं में तीन राजा ऐसे हैं जो भारत के इतिहास में प्रसिद्ध थे।

(1)गंग देव (2)करण देव (अर्जुन)

राय गंग और राय करण को स्थानीय राजा नहीं थे बल्कि गंग देव काला छुरी राज्य छेदी का राजा था और करण देव उसका बेटा अगरचे गंग देव के काल में थोड़ा बहुत अन्तर पाया जाता है मगर उसके और उसके पुत्र के आलेखों के द्वारा गंग देव का काल ग्यारहवीं शताब्दी के पहली रबी से लेकर तीसरी रबी तक माना गया है। इतिहासकार विन्सेट के अनुसार गंग देव ने 1015 ई0 से 1080 तक राज्य किया किन्तु ए0 पी0 ग्रेफिया इण्डिका पुस्तक के भाग दो पृष्ठ संख्या,297,तथा 304 के करण देव का शासन 1042 से 1080 ई0 तक था बहरहाल इन दोनों की रूह से गंग देव और सिपाह सालार मसऊद ग़ाज़ी का ज़माना एक ही समय था। इनके अतिरिक्त इतिहासकार देहकी के अनुसार पृष्ठ 494 से 497 ई0 तक बनारस जिसे आजकल वाराणसी कहते हैं। राजा गंग देव के राज्य में शामिल था जबकि महमूद ग़ज़नवी के जनरल अहमद न्याल तगीन ने बनारस पर हमला किया यह हमला 1033 ई0 में हुआ।गंग देव का वर्णन अबुल रेहान अलबरूनी ने भीअपनी पुस्तक तहक़ीके मलहिन्द में किया है। करण देव के लेखों से यह बात साबित है और इस सबूत की बिना पर इतिहासकार वेदप्पा ने अपनी एतिहासिक

पुस्तक तीसरा भाग के पृष्ठ 129 ता 188 पर लिखा है कि गंग देव और करण देव दोनों तुर्कों से लड़े राजा अर्जुन बकौल प्रोफेसर कील हार्न(ए0पी0ग्रेफिया इण्डिका जिल्द 8,पृष्ठ) (248)के महमूद ग़ज़नवी के ज़माने में कछुवाहा राजपूत ग्वालियर का राजा था। और उसने सुल्तान महमूद की अधीनता स्वीकार कर ली थी। जब मध्य भारत और कन्नौज के राजा सुबकतगीन और महमूद ग़ज़नवी से लड़ने के लिए पेशावर तक पहुंचे । तो बनारस से गंग देव और करणदेव का बहराइच पहुंचना क्या आश्चर्य की बात है। विशेषकर ऐसी दशा में जबकि करणदेव मुल्के केरा (कांगड़ा पंजाब) तक गया। कुतबा अनुवाद (लेख) ए0 वी ग्रफिया इण्डिका दूसरा भाग पृष्ठ 297 से तीन सौ पांच तक इतिहास ने अपने आप को दोहराया अभी महमूद गजनवी की याद ताज़ा थी इसलिए बहराइच में मुसलमानों के कदम न जमने देने की कोशिश हिन्दु राजाओं के लिए एक स्वभाविक प्रयास था।

बहराइच पहुंचने वालक राजाओं में सबसे पहले राजा सहरदेव सुजौली से और राय बहर देव सुम्बलोना से बहराइच पहुंचे पहले युद्ध के परिणाम को सामने रखते हुए आपस में विचार विमर्श किया उस युद्ध में हारने पर जो शर्मिन्दगी उठानी पड़ी उसके उपायों पर बात करते हुए शहरेंव ने कहा युद्ध केवल सैनिक शक्ति से नहीं जीते जाते इसके लिए बड़ी होशियारी चालाकी और बुद्धि से काम लेना होगा और काई ऐसी जंगी चाल चले बिना कि जिससे शत्रु को अधिक से अधिक हानि पहुंचाकर परेशान न किया जा सके युद्ध में विजय प्राप्त करना आसान न होगा। इसलिए जंगी चालों के तौर पर मेरा यह मश्विरा है कि शत्रु के मुकाबले में आने से पहले ज़हर में बुझायी हुई लोहे की कीलें पूरे मैदान में गाड़ दी जायें क्योंकि तुर्की लोग अपने घोड़े बे तहाशा दौड़ाते हैं जब वह लोग अपने घोड़े दौड़ाते हुए मैदान में आऐंगे और जहरीली कीलें घोड़ों के पैरों में चुभेगीं वह लड़खडाऐंगे सवार धरती पर आ गिरेंगे इस प्रकार हम उनका आसानी स काम तमाम कर देंग। इसके अतिरिक्त बारूदीगोले भी काफी संख्या में तैयार किए जाएं। इन बारूदी गोलों से भी हम तुर्की को काफी नुक्सान पहुंचा सकते हैं। जंग और ईश्क में सब कुछ जायज़ है।

अलबरूनी ने भीअपनी पुस्तक तहक़ीके मलहिन्द में किया है। करण देव के लेखों से यह बात साबित है और इस सबूत की बिना पर इतिहासकार वेदप्पा ने अपनी एतिहासिक पुस्तक तीसरा भाग के पृष्ठ 129 ता 188 पर लिखा है कि गंग देव और करण देव दोनों तुर्कों से लड़े राजा अर्जुन बकौल प्रोफेसर कील हार्न(ए0पी0ग्रेफिया इण्डिका जिल्द 8,पृष्ठ) (248)के महमूद ग़ज़नवी के ज़माने में कछुवाहा राजपूत ग्वालियर का राजा था। और उसने सुल्तान महमूद की अधीनता स्वीकार कर ली थी। जब मध्य भारत और कन्नौज के राजा सुबकतगीन और महमूद ग़ज़नवी से लड़ने के लिए पेशावर तक पहुंचे । तो बनारस से गंग देव और करणदेव का बहराइच पहुंचना क्या आश्चर्य की बात है। विशेषकर ऐसी दशा में जबकि करणदेव मुल्के केरा (कांगड़ा पंजाब) तक गया। कुतबा अनुवाद (लेख) ए0 वी ग्रफिया इण्डिका दूसरा भाग पृष्ठ 297 से तीन सौ पांच तक इतिहास ने अपने आप को दोहराया अभी महमूद गजनवी की याद ताज़ा थी इसलिए बहराइच में मुसलमानों के कदम न जमने देने की कोशिश हिन्दु राजाओं के लिए एक स्वभाविक प्रयास था।

बहराइच पहुंचने वाले राजाओं में सबसे पहले राजा सहरदेव सुजौली से और राय बहर देव सुम्बलोना से बहराइच पहुंचे पहले युद्ध के परिणाम को सामने रखते हुए आपस में विचार विमर्श किया उस युद्ध में हारने पर जो शर्मिन्दगी उठानी पड़ी उसके उपायों पर बात करते हुए शहरेंव ने कहा युद्ध केवल सैनिक शक्ति से नहीं जीते जाते इसके लिए बड़ी होशियारी चालाकी और बुद्धि से काम लेना होगा और काई ऐसी ज़ंगी चाल चले बिना कि जिससे शत्रु को अधिक से अधिक हानि पहुंचाकर परेशान न किया जा सके युद्ध में विजय प्राप्त करना आसान न होगा। इसलिए जंगी चालों के तौर पर मेरा यह मश्विरा है कि शत्रु के मुकाबले में आने से पहले ज़हर में बुझायी हुई लोहे की कीलें पूरे मैदान में गाड़ दी जायें क्योंकि तुर्की लोग अपने घोड़े बे तहाशा दौड़ाते हैं जब वह लोग अपने घोड़े दौड़ाते हुए मैदान में आऐंगे और जहरीली कीलें घोड़ों के पैरों में चुभेगीं वह लड़खडाऐंगे सवार धरती पर आ गिरेंगे इस

प्रकार हम उनका आसानी स काम तमाम कर देंग। इसके अतिरिक्त बारूदीगोले भी काफी संख्या में तैयार किए जाएं। इन बारूदी गोलों से भी हम तुर्की को काफी नुक्सान पहुंचा सकते हैं। जंग और ईश्क में सब कुछ जायज़ है। इस फारमूले को अपनाते हुए राजाओं ने अपनी जंगी तैयारियां मुकम्मल कर लेने के बादएक बहुत बड़ी सेना लेकर भकला नदी के किनारे डेरे जमाए। और अपना एक एलची सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां के पास भेजा। एलची ने आकर कहा कि तुम्हें खबरदार किया जाता है। कि तुम अपनी और अपने लोगों की खैर चाहत हो तो सरयू नदी पार कर चले जाओ और बहराइच का क्षेत्र खाली कर दो इसी में तुम्हारी जान की सलामती है। सैय्यद सालार मसऊद गाजी ने वहीपहला जवाब दिया। और एलची द्वारा कहला भेजा कि मुल्क खुदा का है जिसको चाहता है उसको देता है एलची ने वापस जाकर हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी की वीरता से ओत–प्रोत विस्तृत जानकारी राजाओं का दी सारे राजा उनके इस उत्तर से हैरत में पड़ गये और कहने लगे कि ये नौजवान तो बड़ा बेबाक और निडर है जवाब देने में ज़रा भी नहीं दबता हैं।

एलची के वहां से जाने के बाद आपने समझ लिया कि अब बिना युद्ध के छुटकारा नहीं।

अतः आपने मलिक "दर से फरमाया कि सैफुददीन अमीर नसरूल्लाह अमीर खिज्र अमीर सैय्यद इब्राहीम नजमुल मलिक सरफुल मलिक जहीरूल मलिक रैनुल मलिक सरफुल मलिक निजामुल मलिक कयामुल मलिक वह नसीरूल मलिक व मलिक रजब को जलद जमा करो। जब सब जमा हो गये तो आपस में सुलह मश्विरा के बाद ये तय हुआ कि शत्रुओं का यहां चढ़कर आना ठीक नहीं।बल्कि हम आगे बड़कर चढ़ाई करें इन्शा अल्लाह फतह हमारी होगी। और दूसरे दिन हमले की तैयारियां हो रही थीं कि उसी समय खबर मिली कि शत्रु हमारे लश्कर के जानवर खोलकर ले गये हैं। इस खबर ने ज़ख्म पर नमक का काम किया हजरत मसऊद गाजी शेर की तरह बिफरे और

जोश में आकर जंग का नक्कारा बजवा दिया खुद हथियारों से लैस होकर सवार हुए फौजों का सुसज्जित करके फौरन चढ़ाई के लिए कूच कर दिया। जब दानों ओर की फौजें आमने सामने हुई तो घमासान का युद्ध छिड़ गया मुसलमान पूरे जोश व खरोश के साथ लड़ रहे थै हजरत ग़ाजी अलैहिर्रहमां खैबर सिकन हजरत अली शेरे खुदा रजी0 की वीरता और बहादुरी के सच्चे वारिस और अमीन थे बहरदुरी उन्हें विरासत में मिली थी बड़ी दिलेरी के साथ शत्रु सेना में घुसकर अपनी तलवारी हैदरी से ऐसा वार करते थे कि शत्रु पक्ष पर बिजली सी गिरती मालूम होती थी। शत्रु घबरा– घबराकर भाग रहे थे। जबकि युद्ध के मैदान में जहरीली कीलें जड़ी हुई थीं और बारुदी गोलों का भी सामना करना पड़ रहा था जिससे मुसलमानों की भी भारी जानी क्षति उठानी पड रही थी फिर भी मुजाहिदीने इस्लाम (इस्लामी लड़ाके) हिम्मत नहीं हारे और पूरी शक्ति को समेट कर शत्रु पक्ष पर आक्रमण करते रहे जिसके कारण दुश्मनों के टिड्डी दल फौज को मैदान छोड़कर भागना पड़ा शत्रुओं की सारी योजनाऐं और जंगी चालें खाक में मिल गयीं सफलता मुसलमानों के हाथ लगी। शत्रुओं से मैदान खाली हो चुका था हजरत गाजी अलैहिर्रहमांमैदान में ही रहे और दूसरे अमीरों ने दूर तक दुश्मनों का पीछा किया। जब मुसलिम लड़ाके पीछा करके वापस आये तो आपने मैदान से चलकर भकला के किनारे डेरा डलवाया और लश्कर के शहीदों की गिन्ती करने का हुकम दिया। गिन्ती से मालूम हुआ कि कुल सैनिकों का एक तिहाई भाग शहीद हो गया और तिहाई सैनिक बाकी बचे आपने तीन दिन वहीं ठहर कर शहीदों की तदफीन की। शहीदों को दफन करने के बाद चौथे दिन आप बहराइच वापस आए।

मिराते मसऊदी हस्त लिखित पुस्तक पृष्ठ संख्या 50 पर ह

अपने प्रिय साथियों के बिछड़ने का ग़म

अब तक के तमाम युद्धों में मुसलमान अपनी वीरता और बहादुरी के कारण सफलता प्राप्त करते रहे। सालार मसऊद गाजी की कमान में जो लश्कर गजनी से चलकर भारत पहुंचा था फिर बहराइच पहुंचने तक उसे कई युद्धों का सामना करना पड़ा। और उनकी संख्या चाहे जितनी रही हो कुछ न कुछ मुजाहिद अपने सर धड़ की बाजी लगाकर जामे शहादत नौश फरमाते रहे। विशेषकर बहराइच के उन दो युद्धो में उनके बहुत से अपने करीबी दोस्त अहबाब व अन्य मुस्लिम लड़ाके शहीद हो गये थे। जिसका बहुत अधिक प्रभाव हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां पर हुआ। ऐसे प्रिय साथियों मित्रों दास्त अहबाब जिन्होंने कदम कदम पर आपका साथ दिया और समय आने पर अपनी जानें भी खुदा की राह में कुर्बान कर दीं। और संसार में हजरत गाजी से अपनी वफादारी की जिन्दा मिसाल छोड़ गये। ऐसे प्रिय जानिसारों की जुदाई का ग़म होना ऐ फितरी बाल थी।

दिल ही तो है न संग व खस्त दर्द से भर न आए क्यों

साहब मिराते मसऊदी लिखते हैं जिसका उर्दू अनूवाद इस प्रकार है

चूंकि अधिकांश पुराने मित्र इस युद्ध में शहीद हो गये थे हजरत सालार गाजी गम से निढाल रहते थे अपना रन्जो ग़म दूर करने के वास्ते अक्सर सवार होकर बाग देखने जाते थे क्यारियां और रास्ते बनाये जाते थे। कभी आप स्वंय अपने हाथ वृक्ष लगाते थे महुवे के वृक्ष के नीचे ऐ [illegible] चबूतरा था आप वहीं बैठते थे और ये महुवे का वृक्ष सूरज कुण्ड के निकट ही लगा था बालार्क की मूर्ती तालाब के किनारे थी अक्सर गैर मुस्लिम सूरज कुण्ड में स्नान करके इस मूर्ती को पूजते थे और जिस समय सालार की दृष्टि इस मूर्ती और सूर्य कुण्ड पर पड़ती तो आप कुछ सोच में पड़ जाते।

मलिक रजब बड़े सोख और मिज़ाज सनास थे कयास से उसने अपने मलिक का मिज़ाज समझकर के अर्ज किया आका अब इस स्थान पर बाग तैयार हो गया है और अक्सर सैर व तफरीह के लिए आया करते हैं और स्थान पर नमाज़ें भी अदा फरमाते हैं। ये स्थान दारूल स्लाम हो चुका है अगर आज्ञा हो तो इस मूर्ती का नाम व निशान मिटा दूं।इस पर अपने फरमाया कि तुम्हें नहीं मालूम मुझको खुदा से एक राज है जिसको कहा नहीं सकता यह स्थान मुझको कुछ दूसरी तरह से दिखलाया गया है जैसा कि ज़ाहिर होगा चन्द ही दिनों में खुदा के हुक्म से फरिश्ते इस शान से कुफ्र का अंधकार दूर करेंगे। और यहां इस्लाम की रौशनी फैलेगी और देखा जाए तो कुफ्र और शिर्क यहां से दूर भी हो चुका है मुझे खुदा की तरफ से जितना हुक्म होता है उतना प्रयास करता हूं मेरा ध्यान ण्केश्वरवाद की ओर है यहां से अनेक केश्वरवाद की बू आती है लोग बुतों की पूजा की ओर आकर्षित हैं जो मेरे मिज़ाज के मुआफिक नहीं इसके बाद हज़रत सालार मसऊद ग़ाज़ी के चेहरे का रंग बदलने लगा और आप पर हालाते जज़्ब छाने लगा। मलिक रजब ये देखकर बहुत घबराए और पयोमां होकर प्राथना की कि मैंने अपनी समझ के अनुसार प्राथना की थी किन्तु आप जैसी आज्ञा दे वही मुनासिब हो गा। थेड़े समय के बाद जब आपको सुकून हुआ तो घोड़े पर सवार होकर अपने स्थान पर आये और तीन महीने तक अल्लाह की याद और ज़िक्र में लगे रहे कोई विशेष वाकिया पेश नहीं आया।

मलिक रजब

कुछ लोंगों ने मलिक रजब को हज़रत सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी को भांजा बताया गया है जब कि अब्दुल रहमान चिश्ती ने इसकी तरदीद (इन्कार)करते हुए लिखा है कि आम लोग मलिक रजब के हक में उनकी शहादत के बाद कुछ नामुनासिब बातें करते हैं और कहते हैं कि मलिक रजब सालार के भांजे थे ये सब ग़लत है और कुछ लोगों ने उनका नाम बदल दिया है कि रजब सुल्तान फिरोज़ शाह के बाप का नाम है और ये

वही रजब है यह भी सरासर ग़लत है मलिक रजब हज़रत सालार के अदना खदिमों में से थे ये बड़े नेक दिल थे और लोगों से कम मिलते और बातें भी कम करते उनका कोई विशेष महत्व न था।

तीसरा और अन्तिम मुकाबला

मुठठी भर निहत्थे मुसलमान जो केवल अल्लाह केदीन के प्रचार व प्रसार के लिए ग़ज़नी से चलकर भारत आए और वहां से चलकर बहराइच पहुंचे यहां के तख्त व ताज पर अधिकार जमाना उनका उंद्देश्य न था। बहराइच की ओर प्रस्थान तो केवल सैर व शिकार के लिए था इस जंगली भू–भाग ने उन्हे अपनी ओर आकर्षित किया था। किन्तु शक्ति और संख्या के नशे में चूर बहराइच के राजा महाराजा अम्न पसंद और सुलह शान्ति का संदेश देने वाले मुसलमानों को अपने यहां ठहरना बर्दाश्त नहीं कर पा रहे थे। जबकि मुसलमान केवल यहां दीन के प्रसार व प्रचार में लगे थे। और समय पाकर सैर व शिकार भी कर लिया करते थे फिर भी मुसलमानों को बहराइच से चले जाने की धमकी देते मुसलमानों ने अपनी सुरक्षा में दो जंगें लड़ी और दोनों युद्धों में सफलता प्राप्त की। एक ओर भारत के नामी गिरामी राजाओं का संगठन और उनमें एक से बढ़कर एक युद्ध कुशल लड़ाके भारी सैन्य शक्ति और इसपर कदम --कदम पर पूरे देश से उन्हेंसहायता भी मिल रही थी उनके पास मज़बूत क़िले सुरक्षित ठिकाने और भरपूर सैनिक साजो सामानउनसे मुक़ाबला करना कोई आसान काम न था।

दूसरी ओर मुठठी भर निहत्थे मुसलमान अपने वतन से बहुत दूर कहीं से सहायता मिलने की कोई आश नहीं। कि कोई किला और कोई सुरक्षित ठिकाना नहीं किसी बादशाह और राजा की पुष्त पनाही भी हासिल नहीं उनका कमाण्डर एक उन्नीस साला नौजवान जिसकी कम उम्र का देखते हुए ये भी नही कहा जा सकता कि उसे बहुत अधिक जंगी तजुर्बा था और अपनी किसी जंगी चाल से सफ़लता प्राप्त करता है हकीकत यह है कि जो लोग अल्लाह के दीन के प्रचार व प्रसार के लिए

लिए निकलते हैं अल्लाह तआला ऐसे लोगों की सहायता स्वंय फरमाता हैं।

लगातार दो युद्धों में हार का मूंह देखने से हिन्दु राजाओं की नींदें हराम हो गईं। शर्मिन्दी व निदामत का तौप उनकी गर्दनों में पड़ चुका था अपनी हार को सोच – सोचकर दांतों तले उंगलियां दबाते थे। बदले की भावना की आग उनके सीनों में भड़क रही थी इन्हीं सब कारणों से तीसरे युद्ध के बादल मण्डराने लगे।

दो युद्धों से लगातार हारे हुए राजाओं से मदद की अपील करके भारी सैन्य जमा कर लिया। और अपने – अपने राज्यों में ये ऐलान कर दिया कि हर घर के दस आदमियों में से नौ को युद्ध के मैदान में जाना जरूरी है। क्योंकि हमारा देश ओर स्वंय हम लोग एक बड़े खतरे से झूझ रहे हैं। अगर इस बार हमने हिम्मत व बहादुरी से काम नहीं लिया तो हमारा देश हमेशा के लिए मुसलमानों का गुलाम हो जायेगा। और हमारी गर्दनें झुकी की झुकी रह जायेंगी। इस ऐलान के बाद देश भर से बेशुमार फौजी का सैलाब उमट पड़ा नेपाल की सीमा से लेकर दर्याये घाघरा तक फौज ही फौज नजर आ रही थी।

हजरत सैय्यद सालार गाजी का अपने लोगों को इकठ्ठा करके आखिरी भाषण देना

हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी को जब ये सूचना मिली कि शत्रु हमें निस्त व नाबूत कर देने की कसम खाकर बहुत बडी संख्या में और भरपूर जंगी तैयारी के साथ हम पर आकमण करने वाले हैं जबकि पिछली जंगों में आपके अधिकांश साथी शहीद हो चुके थे। शेष बची कुची फौज भारतीय राजाओं की टिडडी दल फौज के मुकाबले में बहुत कम और न काफी थी। फिर भी यं मर्दे मुजाहिद(मुसलिम लड़ाके) पूरी हिम्मत के साथ डटे रहे और इतनी बड़ी सैन्य शक्ति से मुकाबले के बावजूद हिम्मत नहीं हारे जैसे ही सैय्यद सालार मसऊद गाजी का हुक्म होता है सारे सरदार और फौजी एक स्थान पर जमा हो जाते हैं फिर आप उनके बीच जाकर एक पुर्जोश खुतबा देते हैं कि ऐ मेरे जांनिसार

दोस्तों यकीनन तुम्हारी जांनिसार और अहदे वफादारी बेमिसाल है। तुम सबका मेरे ऊपर बड़ा एहसान है। कि गजनी से लेकर हिनदुसतान तक तुम लोगों ने मेरा साथ दिया। तरह– तरह के कष्ट उठाए और बड़ी वीरता से शत्रुओं का मुकाबला किया। अल्लाह तअला का हम पर यह खास फ़ज़्लो करम रहा है कि हमने कभी हार का मुंह न देखा और बड़े से बड़े दुश्मन के मुकाबले में हमेशा फतह पायी। लेकिन आज हम एक ऐसे नाजुक मोड़ पर पहुंचे हैं कि हमारी संख्या बहुत थोड़ी है और शत्रु एक बड़ी सेना के साथ हमें संसार से मिटा देने की कसम खाकर हमारे सर पर खड़ा है। अब आगे हमारी क़िस्मत में क्या लिखा है खुदा ही जाने। मगर दोस्तों इस लम्बी मुद्दत तक साथ – साथ रहने के दौरान मुझसे तुम्हें कष्ट भी पहुंचा होगा। मुझसे कुछ कोताही भी हुई हो गी और कभी मेरे मुंह से ऐसी कोई बात भी निकली होगी जिससे तुम्हारे दिलों को ठेस लगी होगी। लिहाज़ा तुम में से जिस किसी को मुझसे तकलीफ पहुंची हो खुदारा माफ कर दे हम में से जो कोई भी वतन लौटना चाहता है वह बखुशी जा सकता है मुझे उसके जाने पर कोई तकलीफ नहीं होगी और न एतराज़ होगा।

कुदरत ने मुझे वह हिम्मत और हौसला बख्शा है कि बड़ी से बड़ी ताक़त मुझे डरा नहीं सकती और पुरखे कभी युद्ध से मुंह नही मोड़ते थे। अतः हम अपनी बात पर अड़े रहेंगे मगर हम किसी को मजबूर भी नहीं करते कि वह युद्ध में हर हाल में हमारा साथ दे हज़रत सालार ग़ाज़ी की यह तक़रीर इतनी प्रभावशाली थी कि पत्थर दिल इंसान भी मोम हो जाए। आप के साथी जो जो अपने अहद के (कौल) के पक्के और सच्चे वफादार थे कैसे न प्रभावित होते आप को छोड़ कर जाना उन्हें कब गवारा हो सकता था वह लोग तो अपनी जानों को हथेली पर रखकर और सर पर कफन बांध कर ही घर से निकले थे। यह शेर (कविता)इस बात की अक्कासी करता है कि–

मेरी ज़िन्दगी का मक़सद तेरे दीं की सरफराज़ी
मैं इस लिए मुसलमां , और इसीलिए हूं ग़ाज़ी।

सभी साथियों ने एक ज़बान हो कर कहा कि ऐ हमारे सालारे आज़म हम बुज़दिल नहीं जो आपको तने तनहा छोड़कर अपनी जान बचा कर कहीं और लौट जाए हम आपके ज़ेरे कमान रहकर बहादुरी के जौहर दिखाना चाहते हैं। कि शत्रु भी हमारी तारीफ किए बगैर न रह सकेगा हम अपने शरीर के खून का एक –एक क़तरा इसलाम के लिए बहा देंगे हमें घर का ऐशो आराम नहीं बल्कि तीर व तलवार की छांव रास आती है। फिर भला क्यों कर हम आपका साथ छोड़ सकते हैं।

हज़रत सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी की तकरीर सुन कर हर लश्करी का दिल जां निसारी से लबरेज़ था और आंखों में आंसू छलक आए आपने सारे लोगों का शुक्रिया अदा किया और दुआऐं दी। फिर आपके पास जो कुछ था वह सब फौज को दे दिया और एक दस्ते को बतौर हरावल के नियुक्त करके आज्ञा दी कि वह बहराइच की दो कोय की दरी पर फौजी की चौकी कायम करें ओर स्वंय इबादते इलाही में मशगूल हो गये। उसी समय से आपने खाना पीना छोड़ दिया केवल पान खाते और इत्र का बा कसरत इस्तेमाल करते और जयूं–ज्यूं समय गुजरता आपका जौके शहादत बढ़ता जाता।

13 रजब 424 हिजरी सन् 1033 ई0 को प्रातः काल शत्रुओं ने अपनी पूरी शक्ति के साथ मुसलमानों की उस फौजी चौकी पर जो बहराइच से दो कोश की दूरी पर थी जहां मुसलमानों का हरावल दस्ता तैनात था हमला कर दिया। मुसलमान जज़्बए शहादत से सरशार खड़े थे मुकाबले में डट गये घमासान की लड़ाई होने लगी जब सालार मसऊद को इस जंग की खबर मिली तो आपने फौरन नक्कारए जंग बजवा दिया तमाम सरदार अपने अपने असलहो से लैश होकर लशकर के साथ हाज़िर हो गये। आपने सालार सैफुददीन सुरखुरू अलैहिर्रहमां को चौकी की दसते की मदद के भेजा और स्वंय गुस्ल करके कपड़े बदले इत्र लगाया फज्र की नमाज अदा की तलवार बांधी लेकिन आज खिलाफे आदत अपना जिसमानी सुरक्षा कवच पहने बिना अपनी विशेष सवारी अरुपे नीली घोड़ी(घोड़ी का नाम) पे सवार होकर अपनी विशेष

टुकड़ी को लेकर शहर से बाहर निकले लश्कर को मुकदमा मैमना मैसरा अकब में तरतीब देकर रवाना हुए। सूरज कुण्ड पर अपने लगाए हुए बाग में पहुंचे तो बे पनाह खुश हुए आपको अपने मदफन(दफ्न होने का स्थान)का गैबी इशारा हो चुका था अतः जब भी महुवे के वृक्ष के पास पहुंचते बहुत खुश होते और वहां थोड़ी देर अवश्य ठहरते। हमेशा की तरह इस बार भी उसी महुवे के वृक्ष के नीचे आकर ठहरे आपके साथी दुश्मनों पर बाज की तरह झपट पड़े मुसलमान मुजाहिदीन जान से बे परवाह होकर सर पर कफन बांधकर बड़ी बहादुरी के साथ लड़ रहे थे उनकी तलवारों की काट ऐसी थी कि जो सामने आया दो टुकड़े हुए। हिन्दुस्तान के राजाओं की संगठित सेना के मुकाबले में अगरचे मुसलमान दाल में नमक की तरह थे लेकिन हक के प्रस्तार रज़ाए इलाही के तलबगार हजरत गाजी अलैहिर्रहमां के जानिसार सुब्हान अल्लाह ।अल्लाह की सद हजार रहमतें हों उन पर काबिले सद आफरी था उनका मुजाहिदाना किरदार पूरे जोशे जिहाद के साथ बड़ी बेजिगरी के साथ लड़ रहे थे शत्रु पक्ष की कमान शहरदेव और बहरदेव के हाथ में थी जिन्हें अपनी बड़ी सेना पर गर्व था। मुठठी भर मुसलमानों की बहादुरी का मन्जर देखकर अचम्भित रह गये। शाम तक घमासान जंग का सिलसिला जारी रहा दोनों ओर के बहुत से लोग जंग में काम आये मगर काई फैसला न हो सका आखिर रात हो गई फिर भी दानों लश्कर मैदान में ही पड़े रहे कोई मैदान खाली करके नहीं हटा।

हिन्दु फौज की तादाद इस बार बहुत ज़्यादा थी उनके मुकाबले में मुसलमानों की तादाद बहुत थोड़ी थी सुबह का उजाला फैलते ही जंग का नक्कारा बजा दोनों ओर की फौजों में नक्लो हरकत शुरू हो गई युद्ध छिड़ गया मुसलमान लड़ाके अपने सर धड़ की बाजी लगा रहे थे बढ़ बढ़ कर हमले कर रहे थे उनकी तलवारे बिजली बनकर दुश्मनों पर गिर रही थीं इतनी बड़ी सेना का मुकाबला काई आसान काम न था। हिन्दुराजाओं की संगठित सेना भी पहाड़ की तरह मैदाने जंग में जमी रही दापहर तक दो तिहीई मुसलमान शहीद हो गये जिनमें सालार

सैफुददीन सुरखुरू अलैहिर्रहमां सालार मसऊद के मुशीरे खास (विशेष सलाहकार) और राजदा थे उनकी तलवारों से हजारों कुफ्फार जहन्नुम रसीद हुए अर्थात (नर्क) में पहुच गए इसके पश्चात आपने भी शहादत का जाम नौश फरमा लिया।हजरत गाजी अलैहिर्रहमां पर क्या गुजरी होगी इसका अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता फिर भी अपने हिंम्मत नहीं हारी और बराबर डटे रहे।

हजरत सैफुददीन सुरखुरू सालार रहमत उल्लाह अलैह के मजारे मुकददस पर लाखों लोग जियारत के लिए हाजरी देते हैं ये बड़ा ही बा फ़ैज़ आस्ताना है पुराने तर्ज का गुम्बद बना हुआ है। शहर बर्हराइच से 10 फरलांग उत्तर जानिब रेलवे गुमटी के उस पार और दरगाह शरीफ से छः सात फरलांग दक्षिण– पश्चिम में हैं। हजरत गाजी अलैहिर्रहमां की छोटी सी फौज ने दुश्मनों के दांत खटटे कर दिए। लेकिन पूरे हिन्दुस्तान से लाखों की संख्या में आई हुई सेना का मुकाबला कब तक करते लशकरे मसऊदी का हर सरदार बड़ी बहादुरी से लड़ रहा था और जख्मों की लज्जत समेटकर शहीद होता जाता रहा था।

अमीर नसर उल्लाह, अमीर खिज्र सैय्यद अहमद व सैय्यद मोहम्मद बलखी, व सुलतान फतह उददीन, व अमीर बैरम, व अबी नस्रूल्लाह, व अमीर बहाउददीन, अमीर याकूब, अमीर नसीरूददीन, मबारिज़, अमीर तुरकान, अमीर बलाती, अमीर सईद, अमीर रजब वगैरह ने राहे मौला में अपनी जानें कुर्बान कर दीं तो हजरत गाजी अलैहिर्रहमां ने अपनी आंखों में आंसू भरकर अल्हमदुलिललाह का विर्द फरमाया कहा ये मेंरे जानिसार साथी अपने मकसद में कामयाब हो गये अब उनके बगैर जिन्दगी का मजा जाता रहा। इंशा अल्लाह मैं भी जलद ही उनके पास पहुचूंगाइसके बाद फरमाया कि सालार सैफुददीन और उनके तमाम साथियों को जो भी सूरत बन आए दफन किया जाए खादिमों नें उन्हें किसी न किसी तरह दफन करके अर्ज किया कि हुजूर दुश्मन बहुत गालिब आ चुके हैं और मुसलमान बहुत बड़ी संख्या में शहीद को चुके हैं अब फरमाइये कि हम जंग करें कि शहीदों को दफन करने की चिन्ता

करें बड़े नाजुक हालात दरपेश हैं चूंकि चारों तरफ से दुश्मन उनको घेरे हुए थे इतना समय न था कि कबरें खोदकर उनको उन्हें दफन किया जाये। आपने फरमाया कि शहीदों की लाशों को सूरज कुण्ड में बतौर दफन डाल दो इंशा अल्लाह उनकी शहादत की बरकत से इस स्थान से कुफ्र व शिर्क का अंधकार कयामत तक के लिए दूर हो जायेगा हुक्म की तामील की गई जब सूरज कुण्ड लाशों से भर गया तो आपने बाकी बचे शहीदों की लाशों को गारों और कुओं मं दफ्न करा दिया ताकि उनके पाक जिस्मों को काफिरों के नजिस हाथ न लगे और बे हुरमती व अपमान न करें इसके पश्चात् आपने घोड़ी से उतर कर ताजा वुजू करके नमाजें जुहर अदा किया और तमाम शोहदा की नमाजें जनाज़ा पढ़कर उनकी रूहों पर फातिहा पढ़ी।

सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां की शहादत

शहादत है मतलूब मकसूद मोमिन
न माले गनीमत न किश्वर कुशाई।

गजनी से सफर करने वाला मुजाहिद यूं तो अमनशान्ति का पैगाम और धर्म प्रचार का इरादा लेकर निकला था लेकिन बातिल परस्त ताकतों को उसका पैगामेअमन व शान्ति और तबलीगी मिशन एक आंख न भाया और हर बार हर स्थान उसके बढ़ते हुए कदमों को रोकने की कोशिशें की गईं। कदम कदम पर हौसला शिकन हालात पैदा हाते रहे काइ साधारण ओर कम हिम्मत वाला होता तो भाग खड़ा होता मगर कुर्बान जाइये इस मर्दे मुजाहिद की साबित कदमी बुलंद हौंसले आली हिम्मती और बहादुरी पर कि मुखालिफ लहरों से टकराते हुए आगे बढ़ता रह। हर महाज पर फतह व नुसरत के झण्डे लहराते हुए अपनी आखिरी मंन्जिल बहराइच तक पहुचा जहां रहमते खुदा वन्दि अपने आगोश में लेने के लिए मुन्तजिर थी और उरुसे शहादत गले लगाने के लिए बेचैन थी आज की तारीख में आपकी शहादत मुकददर हो चुकी थी।

नमाजे जोहर और शोहदा की नमाजें जनाज़ा अदा फरमाने के बाद सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां अपनी बची कुची फौज को समेट कर एक शेर दिल बहादुर की तरह दुश्मन की फौज पर जो चट्टान की तरह जमी हुई थी इतना जोरदार हमला किया कि दुश्मन

के होश उड़ गये और उनकी फौज के अन्दर अफरा तफरी मच गयी इससे पहले सैफुददीन सुरखुरू सालार रहमत उल्लाह अलैह दूसरे सरदारों के हाथों बहुत से बड़े राजाओं को मौत के घाट उतार चुके थे इसके बाद आपने भी बहुतों को अपनी तलवार से मौत की नीन्द सुला दिया शत्रु सेना जो बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही थी। आपने उसे अपने तूफानी हमले से पीछे कदम हटाने पर मजबूर कर दिया यहा तक कि उसे अपनी सरहद ही पर जाकर ठहरना पड़ा। आप भी मोहलत पाकर अपनी जगह पर खड़े हुए अजीब कयामत खेज मन्जर निगाहों के सामने था पूरा मैदाने जंग लाशों से भरा पड़ा था ऐसा महसूस होता था कि गोया जमीन ने लाशों की फसल उगा दी हो कितने नीमजां (अधमरे) तड़प रहे थे। जख्मियों की चीख पुकार से पूरा मैदान गूज रहा था। कितने जांकनी की हालत में जिन्दगी की आखिरी हिचकियां ले रहे थे जो जिन्दा व सलामत थे वो भी अजीब कश्मकश का शिकार थे।

रायशहर देव और राय बहरदेव और कई नौजवान के अकसर साथी शहीद हो चुके हैं अब केवल चन्द लोग रह गये हैं इस अवसर का फायदा उठाते हुए अपनी अपनी सैनिक टुकड़ियों को लेकर आप पर घेरा त[illegible] करते हुए निकट पहुचे ओर चारों ओर से तीर बरसाना शुरू किया ये हालत देखकर आपके साथी पूरी बहादुरी व हिम्मत के साथ सीना सिपर होकर तीरों की बारिश को अपने ऊपर रोकने लगे कि आप तक कोई तीर पहुंचने न पाये लेकिन ये चन्द दीवाने तीरों की बौछार से कब तक बचते हर दीवाना तीरों के जख्म से चूर चूर हो चुका था और हजरत गाजी अलैहिर्रहमां भी जख्मों से निढाल हो चके थे मगर हजारों जख्म खाने के बावजूद आप जख्मी शेर की तरह शत्रुसेना में तहलका मचाते रहे आपका हर वार शत्रु को मौत के मुह में पहुंचा देता। आपकी तलवार बिजली बनकर दुश्मनों पर गिरती और वह जमीन पर ढेर हो जाता जब तक दममें दम रहा बहादुराना शान से मुकाबला करते रहें आसमान ने रूए जमीन पर शुजाअत और बहादुरी के ऐसे मनाजिर

(दृश्य) कम ही देखे होंगे जंग का सिलसिला जारी था। नमाज़े अस्र का समय हो चला था दुश्मनों का सरदार सहर देव टीलों की आड़ में छिपता हुआ आप के बहुत निकट पहुंच कर एक नपा तुला तीर इस तरह मारा कि वह आप के गुलूए मुबारक में जा लगा गले पर तीर लगते ही खून के फव्वारे जारी हो गए पूरा शरीर खून से तर बतर हो गया आप अपनी वफादार घोड़ी (अस्पे नीली) पर सवार थे। खून काफी बह जाने की वजह से आप पर बेहोशी छाने लगी आपकी गिरफत ढीली पड़ गई। घोड़ी की पीठ से आपका जिस्म लुड़कने ही वाला था कि सिकन्दर दीवना ने बढ़कर आपको संभाला और घोड़ी से उतार कर सूर्य कुण्ड के निकट महुवे के वृक्ष के नीचे लिटा कर आपका सरे मुबारक अपने जानों पर रखा और जारो कतार रोने लगे। यह वही सिकन्दर दीवना है जिसे दुनिया ब्राहना शाह बाबा कहती है। आप हजरत इब्राहीम अदहम रह0 के तरीके पर नंगे सर, नंगे पैर रहा करते थे और फकीरों में मुमताज़ मुकाम हासिल था। हाथ में एक सोटा लिए हुए हमेशा हजरज गाजी अलैहिर्रहमा के लश्कर में पैदल चला करते थे। हजरज गाजी अलैहिर्रहमा से इन्हे बेपनाह मुहब्बत थी। जिसकी वजह से उन्हे बारगाहे गाजी में कुर्बत हासिल थी। जिस पर दूसरे लोगों को रश्क आता था।

आज उस दीवाने पर कयामत टूट पड़ी थी क्योंकि वह महबूबे दिल नवाज जिसके वजूद से दिल की दुनिया आबाद थी वही न रहा आज उनका सब्रो जब्त जवाब दे रहा था। रोते–रोते हिचकियां बंध गई थी। सिसकने की आहट से हजरत गाजी अलैहिर्रहमा ने थोड़ी देर के लिए आंखे खोल दीं होठों पर मुस्कुराहट और जबान का नगम–ए–तौहीद जारी था।

14 रजब 424 हिजरी मुताबिक 1033 ई0 को जब कि आपकी उम्र के 19 साल पूरे होने में अभी 1 हफ्ता बाकी था। बरोज इतवार अस्र व मगरिब के दरमियान अपने आशिके जार सिकन्दर दीवाने के ज़ानों पर सर रखे हुए उनकी रूह परवाज कर गई। आप हमेशा के लिए जिन्दा व जावेद बन गये।

क्योंकि कुरआन में अल्लाह ने फरमाया है कि जो अल्लाह की राह में शहीद हुए उन्हें कतई मुर्दा न कहो। बल्कि वह जिन्दा हैं। अपने रब से रिज्क पाते हैं लेकिन तुम्हें शऊर नहीं।

सालारे कारवां हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमा की शहादत के बाद वह चन्द साथी जो जिन्दा बच गये थे आपके बाद जिन्दा रहने पर मौत को तर्जीह दे रहे थे सौ–सौ जान से कुर्बान होने का जज्बा उनके सीने में मचल रहा था। और इस ख्याल से कि जब हमारा सालार ही दुनिया में नहीं रहा जिसके लिए हमने मां–बाप, भाई–बहन, अजीज व अकारिब (रिश्तेदारों) को छोड़ा अपना प्यारा वतन माल जायदाद ऐश व आराम सब कुछ छोड़ कर यहां आये थे अब उसके बगैर हमें ज़िन्दगी का मजा ही क्या। लेहाजा हमें भी उनकी डगर पर चलकर अपनी जानें राहे मौला में कुर्बान करके वफादारी और जांनिसारी का तमगा हासिल कर लेना चाहिए। चुनांचे हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमा के यह चन्द दिवाने अपनी जानों की पर्वाह किये बगैर दुश्मन पर टूट पड़े दुश्मन चारों तरफ से घेरा डालकर तीरों की बारिश शुरू कर दी। यह बचे कुचे चन्द लोग भी तीरों का शिकार होकर शहीद हो गये। मगरिब तक मसऊदी लश्कर का एक व्यक्ति भी जिन्दा बाकी न बचा।

तमाम शोहदा की लाशों के बीच हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमा की लाश इस तरह पड़ी थी जैसे चांद के गिर्द तारे टिमटिमा रहे हों। सिकन्दर दिवाना सरकारे गाजी का सरे मुबारक अपने जानों पर लिए हुए बैठे थे तीरों के वार होते रहे जख्म पे जख्म सहते रहे मगर आपकी मुहब्बत ने जरा भी जुम्बिश की इजाजत न दी। और इसी हालत में अपने महबूब के कदमे नाज पर जान कुर्बान कर दी। किसी कवि ने ठीक ही लिखा है।

सर बवक्ते जिबाह अपना उसके जेरे पाये हैं।
यह नसीब अल्लाह अल्लाह लूटने की जाय हैं।।

असपे नीली गाजी अलैहिर्रहमा की वफादार और महबूब सवारी थी। उसे भी अपने आका से बेपनाह मुहब्बत थी आपकी लाशे मुबारक के करीब सोगवार खड़ी रही तीरों से लहुलुहान होकर उसने भी अपने आका के कदमों में जान दे दी।

यह खूनी मन्जर देख कर सूरज ने पश्चिम ओर अपना मुंह छुपा लिया अब अंधेरा हो चला था एक जांबाज सालार और उसके चन्द जांनिसारों की लाशें बेगौरो कफन पड़ी हुई हैं बजाहिर तो यही नजर आता है कि चन्द शोहदा जिनका जीवन से अब कोई रिश्ता नहीं रहा और उनकी बेगौरा कफन लाशें अपनी बेबसी व बेकसी का मन्जर पेश कर रही हैं।

लेकिन कुरआन उनकी हकीकत से पर्दा उठाते हुए कहता है कि वह लोग जो अल्लाह की राह में शहीद हुए उन्हें मुर्दा न कहो बल्कि वह जिन्दा हैं और अपने रब के पास से रिज्क पाते हैं लेकिन तुम्हें शऊर नहीं।

रात का अंधेरा हो जाने के बाद शहर देव और उसके साथी बाग के अन्दर घुस आये वह लोग सालार मसऊद की लाश को तलाश रहे थे अल्लाह ताआला ने आपकी लाश को दुश्मनों के नापाक हाथों से बचाये रखा और अंधेरे में वह उसे न पा सके शहर देव मैदान जंग ही में रात गुजारना चाहता था किन्तु उसके दूसरे साथियों नें कहा कि जहां पे मुसलमानों का खून गिरा हो वहां पर हमारा ठहरना हरगिज मुनासिब नहीं। अब हमें लौट चलना चाहिए और अपने लश्कर की भी खबर लेनी चाहिए कि कितने लोग मारे गये कितने जिन्दा बचे कितने घायल और जख्मी हैं कुछ उनके दवा इलाज मरहम पट्टी की भी फिक्र करनी चाहिए कल फिर दिन के उजाले में यहां आयेंगे। शहर देव नें अपने साथियों की बात मान ली और सबको लेकर अपने डेरे पर लौट गया।

मुसलमान शोहदा की लाशों के बीच में दो तीन जख्मी मुजाहिदीन गशी की हालत में मुर्दों की तरह पड़े थे लेकिन जब उन्हें कुछ होश आया और आंखे खुली तो देखा कि मैदान दुश्मनों से खाली है

क़िसी तरह लड़खड़ाते–लड़खड़ाते बहराइच उस डेरे की तरफ चले जहां दुश्मनों की हिफाजत की गरज से जंग में जाने से पहले हजरत गाजी अलैहिर्रहमा ने सैय्यद मीर इब्राहीम रह0 को एक हिफाजती दस्ता देकर देखभाल के लिए नियुक्त किया था। कि दुश्मनों पर नजर रखें। अब बाग में सिवाये शहीदों की लाशों के कोई जीवित न बचा था। केवल आपका वफादार कुत्ता संगे सांगल आपकी लाश के निकट खड़ा रहा और रात भर दरिंदों और जंगली जानवरों से लाशों की हिफाजत करता रहा। भौंक–भौंक कर उन्हें दूर भगाता रहा यह कुत्ता गोया अस्हाबे कहफ के कुत्ते के समान था।

इधर जख्मी मुजाहिदीन मौका पाकर मैदाने जंग से उठ कर गिरते पड़ते किसी तरह बहराइच पहुंचे और हजरत सैय्यद इब्राहीम अलैहिर्रहमा को हजरत गाजी अलैहिर्रहमा के शहीद हो जाने की दर्दनाक खबर सुनाई। कैम्प के अन्दर कोहराम मच गया हिफाजती दस्ते के सारे लोग जारो कतार रोने लगे। हजरत सैय्यद इब्राहीम रह0 हजरत गाजी अलैहिर्रहमा के हम मजाक मह ख्याल मुख्लिस और बेतकल्लुफ दोस्त थे। दोनों का मिजाज एक जैसा था दोनों हजरात एक दूसरे से बहुत करीब थे शहादत की खबर सुनते ही आपके दिल पर गम का पहाड़ टूट पड़ा मारे गम के होशो हवाश बजां न रहे । सद्मा बर्दाश्त न कर सके बेहोश हो गये कुछ समय बाद जब थोड़ा आराम हुआ और दिल पे काबू पाया फौरन सवारी का मुतालबा किया लोगों अंधेरी रात और जंगल की खतरात की वजह कुछ टालमटोल किया तो आपने फरमाया तुम लोग मेरा साथ दो या न दो मुझे एक पल की भी देरी गवारा नहीं। जिन जालिमों ने हमारे सालार को शहीद किया है मैं उनसे बदला लिये बगैर इतमिनान से नहीं बैठ सकता चाहे इसके लिए अपनी जान भी गवानी पड़े। सोचो तो सही जिसकी उल्फत व मुहब्बत खून बनकर हमारे रगो रेशे में दौड़ रही है और जिसके वजूद के बदौलत हमारी जिन्दगी में बहार थी और दिल की दुनिया आबाद थी अब उसके बगैर हमारे लिए जीना दुश्वार और जिन्दगी बेमजा है।

सुबह के इन्तिजार में बैठ कर रात काटना मेरे लिए कयामत की रात काटना है।

लोगों ने समझाया कि हुजूर हम आपके कदम ब कदम चलकर राहे मौला में कुर्बान होने के लिए हर वक्त तैयार हैं आपके इशारे पर मर मिटना हमारी जिन्दगी का मकसद है हम आपको तनहा छोड़ दें ऐसा हमसे कभी भी न हो सकता हम तो आपके हुक्मों की तामील करने वाले हैं लेकिन जरा सब्रो जब्त से काम लीजिए और सोचिए जंग का भयानक माहौल रात का सन्नाटा घटा टोप अंधेरा हर तरफ जंगल और वीराना चारों तरफ हू का आलम दरिंदे भी शिकार की तलाश में निकल पड़े होंगे। हमारा जानी दुश्मन भी घात लगाये बैठा होगा। ऐसे खतरनाक माहौल में हमारे लिए निकलना हरगिज मुनासिब नहीं रात गुजर जाने दीजिए सुबह आपके हम रकाब होंगे। हम बुजदिल नहीं हम बहादुरों की संतान हैं। सरकार गाजी का खून हमारी जान से ज्यादा कीमती है। इसका बदला लिए बगैर हम चैन से नहीं बैठ सकते। हजरत गाजी से हमारी मुहब्बत दीवानगी की हद को पहुंची हुई है। हम तो उनके नाम पर मर मिटने का हौसला लेकर ही घर से निकले हैं। इन बातों से हजरत सैय्यद इब्राहीम रह० के बेचैन दिल को कुछ इतमिनान हुआ और रात में निकलने के फैसले क़ो सुबह के लिए मुल्तवी कर दिया। लेकिन सच्चे आशिक के लिए रात काटना बड़ा दुश्वार काम है। इसके लिए बस एक ही सूरत थी कि यादे इलाही में मशगूल हो जायें। अतः आप एक गोशे में बैठ कर अल्लाह की इबादत में मशगूल हो गये और रात भर दुआयें मांगते रहे।

ख्वाबे हकीकत (रात में सपना देखना)

हजरत इब्राहीम रह0 सुबह के इन्तिजार में इबादत में मशगूल थे रात के पिछले पहर जब ठण्डी हवा के झोंके चलने लगे। कुछ थकावट का भी असर था आपकी आंख लग गई आंख लगते ही क्या देखते हैं कि एक बहुत पुरबहार हरे–भरे शादाब और खूबसूरत स्थान पर एक बड़ा सुन्दर नूरानी तख्त बिछा हुआ है जिस पर हरजत गाजी अलैहिर्रहमा शाही लिबास में पूरी शान व शौकत के साथ जलवा अफरोज हैं और मसऊदी लश्कर के तमाम शोहदा आपके चारों तरफ घेरा बनाऐ बैठे हैं। ये खूबसूरत मन्जर देखने के बाद हजरत सैय्यद इब्राहीम रह0 उस नूरानी मजलिश में शरीक होने के लिए कोशिश करते हैं कदम बढ़ाते हैं लेकिन कदम नहीं उठते घबरा कर हजरत गाजी अलैहिर्रहमा को आवाज देते हैं जवाब मिलता है अभी तुम्हें इस मजलिस में आने के लिए इन्तिजार करना होगा मजलिस बर्खास्त हो गई और सरकार गाजी अलैहिर्रहमा घोड़ी पर सवार होकर किसी तरफ जाने लगे। हजरत सैय्यद इब्राहीम पुकारते हैं और पूछते हैं कि बन्दे के लिए क्या हुक्म है। हुक्म होता कि मेरा जाहिरी जिस्म सूरज कुण्ड के बाग में महुवे के नीचे चबूतरे पर है वहीं दफन कर दो सिकन्दर दिवाने को भी मेरे पश्चिम जानिब दफन कर देना। और मेरी घोड़ी जिस स्थान पड़ी है उसे वहीं दफन कर देना। फिर फरमाया कि मेरा कातिल शहर देव तुम्हारे मुकाबले में जरूर आयेगा तुम उसे कत्ल कर देना। तुम्हारे हाथों कत्ल होना उसका मुकद्दर हो चुका है। अन्त में तुम्हें भी जामे शहादत नौश करके हमारे पास आना है । इतना सुनना था कि आंख खुल गई ख्वाब का मन्जर निगाहों में नाच रहा था । हजरत गाजी अलैहिर्रहमा के हुक्म की तामील के लिए बेचैन हो गये। फौरन गुस्ल करके कपड़े बदले और हिफाजती दस्ता देकर बाग में पहुंचे हजरत मसऊद गाजी की लाश को महुवे के पेड़ के नीचे चबूतरे पर दफन किया और सिकन्दर दीवाने की लाश को पश्चिम जानिब दफन किया

और बाकी शहीदों की लाशों को सूरज कुण्ड में दफन कर ऊपर से मिट्टी डाल दी ताकि किसी दुश्मन को शहीदों की लाश के साथ गुस्ताखी और बेहुर्मती का मौका न मिले।

चूंकि ख्वाब में आपको अपनी शहादत की बशारत मिल चुकी थी इस लिए सिकन्दर दीवाना की कब्र के बगल में पहले ही अपने लिए भी तैयार कराई शहर देव लश्करे मसऊदी के कड़ी नजर रखे हुए था जब उसे सूचना मिली कि लश्कर मसऊदी के कुछ लोग अभी जिन्दा हैं तो सांप की तरह बल खाते हुए अब बड़ी तेजी से अपना फौजी दस्ता लेकर मैदान जंग में आ पहुंचा और इधर से हजरत सैय्यद इब्राहीम रह0 मुकाबले के लिए आगे बढ़े और मर्दे मैदां बनकर पूरे अज्मो हिम्मत के साथ जंग में उतर पड़े और शहर देव पर तलवार से ऐसा जोरदार वार किया कि शहर देव का सर तन से जुदा हो गया और पूरा जिस्म जमीन पर तड़पते तड़पते ढेर हो गया। जंग चलती रही यहां तक की आप भी लड़ते लड़ते दुश्मन के हाथों 15 रजब 424 हिजरी मुताबिक 1033 ई0 बरोज दोशम्बा (सोमवार) को शहीद हो गये। साथियों ने वसीयत के मुताबिक पहले से तैयार की गई कब्र में दफन किया और फिर सबके सब एक एक करके शहीद हो गये कोई जिन्दा व सलामत न बचा सिर्फ दो–तीन खादिम जो मैदाने जंग में जखमी पड़े रह गये थे नहीं अच्छे होने पर आपकी मजार की खिदमत व हिफाजत में लग गये और अपनी सारी उम्र यहां गुजारी।

फिर कुछ दिनों के बाद हाजी सैय्यद अहमद व हाजी सैय्यद मुहम्मद जो हजरत गाजी अलैहिर्रहमा के साथियों में थे और सतरिख में ठहरे हुए थे आपका गैबी इशारा पाकर बहराइच आये और पूरी अकीदत व मुहब्बत के साथ आपके आस्ताने की खिदतम में मसरूफ हो गये उन दोनों पे आपकी खास नजरे करम रहती उन दोनों हजरात ने बकमाले मुहब्बत पूरी जिन्दगी आस्ताने गाजी की खिदमत में लगे रहे। झाड़ू देते और शाम को चिराग बत्ती करते।

सालार मसऊद की सीरत व एख्लाक

हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमा पाकीजा सीरत बुलन्द एख्लाक और आली हिम्मत थे कुदरत ने बड़ी फैय्याज तबियत अता फरमायी थी हर मिलने जुलने वालों और लश्करियों व फौजियों को इनामों इकराम से नवाजते रहते कभी किसी को महरूम न करते जरूरत के मुताबिक घोड़, हीरे, जवाहरात, कीमती पोशाक, तलवार, खन्जर अता फरमाते। आपकी फैय्याजी देखकर लोग आपको फखरे हातिम कहते आप बहुत खुश तकरीर थे बड़े अच्छे अन्दाज में गुफ्तगू फरमाते तकवा व परहेजगारी में बेमिसाल थे। हमेशा बावजू रहते नमाजे पंजगाना उनके औकातों पर अदा करते कसरत से नवाफिल पढ़ते आपका जाहिर व बातिन बहुत पाकीजा व साफ था। मिजाज में हद दरजा नजाकत व नफासत थी बैठने उठने की जगह साफ सुथरी होती उम्दा लिबास पहनते इत्र व खुशबू व पान के शौकीन थे जमाले मुहम्मदी आपके चेहरए अनवर से टपकता था।

आपकी मुजाहिदाना जिन्दगी पर नजर डालने के बाद हर कोई यह मान लेता कि वास्तव में आप बहुत बड़े मुजाहिद और बहुत अच्छे कमाण्डर थे इतनी बड़ी फौज आपके जेरे कमान थी जिनमें अक्सर लोग उम्र में आपसे बड़े थे। लेकिन कोई एक व्यक्ति भी आपसे बद्दिल नजर नहीं आता यह सब आपकी आला कायदाना सलाहियत का सुबूत है।

शुजाअत व बहादुरी

हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमा जिस तरह अपनी दूसरी बातों में एक अलग शान रखते थे उसी तरह बहादुरी में बेमिसाल थे और ऐसा क्यों न हो यह सब तो अपने पूर्वज हजरत शेरे खुदा फातेह खैबर अली मुर्तुजा रजी० से वर्सा में मिली थी किसी ने क्या खूब कहा है–

अली का घर भी वह घर है जिस घर का एक बच्चा ।
जहां पैदा हुआ शेरे खुदा मालूम होता है।

आप एक महान हुकमरां सुल्तान महमूद गजनवी के भांजे और उनकी सेना के एक बड़े कमाण्डर साहू सलार के इकलौते बेटे थे कितने नाज व नेअमत में आपकी परवरिश हुई होगी। यह कोई ढकी छुपी बात नहीं आप चाहते तो पूरा जीवन एक शहजादे की तरह गुजारते कदम कदम पर नौकर चाकर हाजिर रहते ऐश व इश्रत के तामाम सामान फराहम होते और जवानी की उमंगों में डूब कर जीवन बिताते लेकिन आपने इसे पसन्द न फरमाया यह सब बाते आपके मिजाज के खिलाफ थीं। कुदरत ने आपके सीने में एक मुजाहिद और गाजी का दिल देकर पैदा किया था। ऐश व इश्रत की जिन्दगी क्यों कर रास आती 13–14 साल की उम्र में गजनी सलतनत से मुंह मोड़ कर परेशानियों व मुसीबतों की पर्वाह किये बगैर बीहड़ रास्तों और जंगलों, पहाड़ों, खतरनाक दरियाओं, लम्बे चौड़े सफर को तय करते हुए कदम कदम पर दुश्मनी ताकतों से टकराते हुए आगे बढ़ते और इस्लाम का झण्डा लहराते हैं।

आपका पूरा जीवन हिम्मत व बहादुरी जवां मर्दी और साबित कदमी की जिन्दा मिसाल है । बहराइच के युद्धों से इसका अन्दाजा अच्छी तरह लगाया जा सकता है। पूरा मन्जर निगाहों में लाइये तो दिल लरज उठता है। तमाम जांनिसार साथी बेयारों मददगार वतन से दूर दुश्मनों की तीरों की बौछारों से एक–एक करके शहीद हो जाते हैं। उनकी बेगौर व कफन लाशें आपकी निगाहों के सामने पड़ी हैं किस कदर दिल दहला देने वाला कयामत खेज मन्जर है आपके दिल पर क्या गुजरी होगी। फिर भी आपकी हिम्मत ने जरा भी कमी नहीं आयी। आप साबित कदम रहे पूरे अज्मो हिम्मत के साथ हालात का मुकाबला करते हैं और अपना फर्ज अन्जाम देते हैं। आपको लालच छू भी नही गया था आपके बड़े फैय्याज आली ज़रफ मुहब्बत और हुस्न व एख्लाक के पैकर थे यही वजह थी कि लोग आपको दिलो जान से चाहते थे ।

गजनी सलतनत से कोई सहायता लिए बिना जब आप हिन्दुस्तान जिहाद के लिए निकले तो हजारों लोग बिना दुनियाबी फायदा सोंचे बगैर आपके साथ हो गये।

आपकी ईमानदारी, इंसाफ और हक गोई समझने के लिए यह काफी है कि जब आपको अनाज की जरूरत महसूस हूई तो मुफ्त नहीं लिया बल्कि उसकी पूरी कीमत अदा की और जमीदारों के इन्कार के बावजूद बतौर पेशगी वाजबी कीमत अता की।

आप अमन पसन्द और सुलहजूह थे कभी भी जंग के लिए पेश कदमी नहीं की जब बहराइच के राजाओं ने आप पर जोर डाला कि बहराइच छोड़ कर चले जायें वरना फिर जंग के लिए तैयार हो जायें। इसके जवाब में आपने सुलह व शान्ति के लिए आरजी सुलह की पेशकश की जिसे कबूल नहीं किया गया। मेरठ और कन्नौज के राजाओं ने अच्छे बर्ताव का सुबूत दिया तो आपने भी उनसे किसी किस्म की छेड़–छाड़ न की। उनको उनके हाल पर छोड़ कर आगे बढ़ गये आपकी मुरव्वत और रवादारी की यह भी एक मिसाल है कि कोहे जुम्ला के राजाओं जोगी दास और गोविन्द दास ने आपसे मुलाकात की ख्वाहिश जाहिर की तो आपने जवाबन कहला भेजा कि मैं मुलाकात से रोकता नहीं मगर जहमत उठाने से क्या फायदा आप लोग मेरी तरफ से मुतमअीन रहें लेकिन जब आपको बहुत अधिक मजबूर किया गया तो सियासी जरूरतों और इंसाफ की बिना पर अपने या अपने साथियों के साथ ज्यादती और सख्ती करने वालों को सजा जरूर दी। जैसा कि आपने कस्बा रावल के राजा शिवकन्द के ऊपर चढ़ाई करके उसे उसके किये की सजा दी वरना माफी और दर गुजर आपकी आम पालिसी थी। जैसा कि जहरीली नहरनी पेश करने वाले हज्जाम को माफ कर देने से होती है। आपने वालिदे मोहतरम से कहा कि इसने दूसरे के बहकावे में आकर यह जुर्म किया है इसे माफ कर दिया जाये। आप इस्लाम के उसूल व कानून के पाबन्द थे। इस्लाम ने जुल्म व ज्यादती और दीन में जब्र व जुल्म की हर्गिज इजाजत नहीं दी। इस्लाम

की तालीम है (एक कुर्आन की आयत का तर्जुमा) दीन में कोई जोर जबरदस्ती नहीं सच्चा और नेक रास्ता गुमराही से मुम्ताज य अफजल है। कुछ लोगों का यह कहना है कि जंग और मुहब्बत में सब कुछ जायज है मगर इस्लाम की यह तालीम है कि तुम किसी कौम की अदावत में इतना आगे न बढ़ जाओ कि इन्साफ न कर सको और उसकी अदावत तुम्हें हद से गुजार दे और तुम परहेज गारी से दूर हो जाओ।

इस्लाम में तबलीग या धर्म प्रचार पर जोर दिया गया है मगर इस हुक्म के साथ कि तुम लोगों को अपने रब के रास्ते की तरफ अकलमन्दी और अच्छी–अच्छी बातों के जरिए बुलाओ और बहुत मुनासिब तरीके से बहस करो ताकि लोग तुम्हारी तरफ मायल हों।

रसूल अल्ला सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और सहाबा इकराम रजी अल्लाहो अन्हुम की जिन्दगी में भी इन तालीमात की भरपूर अम्ली नमूने मौजूद हैं। रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के कब्जे में जब पूरा आ गया तो नजरान के ईसाइयों के साथ आपका पहला मुआमला हुआ आपने उनको यह अधिकार दिये कि नजरान और उसके चारों तरफ के बासिन्दों की जानें उनका धर्म, मजबह उनकी जमीनें, उनका माल, उनके काफिले, उनकी औरते बच्चे अल्लाह की अमान और उसके रसूल की जमानत में है उनकी मौजूदा हालत में कोई बदलाव न किया जाए और न उनके हुकूक में से किसी हक में दस्त अन्दाजी की जाए। कोई साहिब या पादरी को उनके ओहदे से न हटाया जाए उनके जमाने जाहिलियत के किसी तुर्म या खून का बदला न लिया जायगा न फौजी खिदमत ली जाएगी न उन पर उश्र या टैक्स लगाया जायगा और न इस्लामी फौज उनकी जमीन को पामाल करेगी न उन पर जुल्म होगा जब तक वह मुसलमानों के खैर ख्वाह रहेंगे उनके साथ किये गये सारे वादों की पाबन्दी की जाएगी उनको जुल्म से किसी बात पर मजबूर न किया जाएगा।

हजरत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ी0 के ज़माने में जब हज़रत

खालिद बिन वलीद ने हैरा को फतेह किया तो हैरा वालें को यह ज़मानत दी गयी कि उनकी खानकाहें और गिरजे ढाए नहीं जाएंगें और न उनके ईद(त्योहार) के दिन उनको शंख बजाने और सलीबें निकालने से रोका जाएगा (किताबुल खिराज पृष्ठ संख्या 84)

हज़रत उमर रज़ी0 ने जब बैतुल मुकद्दम फतेह किया तो वहां के ईशाइयों को यह हुकूक (अधिकार) दिए कि उनकी जान की अमान (सुरक्षा) होगी उनके गिरजों में सुकूनत अख्तियार न की जाएगी न वह गिराए जाएंगे औंर न उनको न उनके अहातों को नुकसान पहुंचाया जाएगा न उनकी सलीबों और न उनके माल में कुछ कमी की जाएगी न मज़हब के मामले में उनपर जब्र किया जाएगा। न उनको किसी किस्म का नुकसान पहुंचाया जाएगा। (तिबरी जिल्द पांच पृष्ठ संख्या 2405) उन्ही इस्लामी तालीमात का (शिक्षा) प्रभाव था कि आपने बालार्क मूर्ति तोड़ने से मना फरमाया। आपकी रवादारी भेदभाव और तअस्सुब से पाक अमल व किरदार का नमूना है।

रूहानी मुकाम -हजरत सालार मसऊद गाज़ी रहमतउल्लह अलैह

हज़रत सैय्यद सालार मसऊद गाज़ी अलैहिर्रहमां कमाले ज़ाहिर व बातिन का दिलकश इन्सानी नमूना थे एक ओर यदि वह दिन में युद्ध रन में रहते थे तो सारी सारी रात ईश्वर की इबादत में लगे रहते थे। आप रात के समय एकान्त में बैठ कर खुदा की इबादत में लीन हो जाते जिससे पैरों में वरम आ जाते थे। अल्लाह की राह में शहीद हो कर रूहानियत के बुलन्द मुकाम पर फायज़ हो गए।

रूतबा शहीदे इश्क अगर जान जाइए।
कुरबान होने वाले पे, कुरबान जाइए।।

आपकी रूहानी अजमत को कुछ वही लोग जान समझ सकते हैं जिन्हें खुदाए ताला ने चशमे बसीरत और दिले बीना अता फरमाया है।

लतायफे अशरफी मुतरजिम जिल्द सोम पृष्ठ संख्या 28 पर लिखा है। हजरत मखदूम असरफ जहांगीर समनानी रहमुतल्ला अलैह फरमाते हैं।

इत्तेफाक़न हज़रत सालार मसऊद के मज़ारे मुबारक की ज़ियारत के लिए बहराइच जाने का इत्तेफाक़ हुआ शरफे ज़ियारत के बाद हज़रत सैय्यद सालार (अमीर माह) कि ख़िदमत में हाज़िर हुआ। ये फकीर और सैय्यद मज़कूर तफरीह के तौर पर मैदान से गुज़र रहे थे कि हज़रत खिज्र से मुलाकात हो गई हम आपस में कुछ दीनी मालूमात की बातें कर रहे थे अचानक इजराईल ज़हिर हुए और हमसे मुसाफा किया और कुछ वाकयात बयान किए। एक पहर के करीब इस माजरे में गुज़रा था कि हजरत खिज्र कभी बूढ़े की सूरत में कभी जवान की सूरत में और कभी बच्चे की सूरत में दिखाई पड़े।

सय्यद मौसूफ अशरफुल अशरफ अल–जिलानी हयाते गौसुल आलम सैय्यद अशरफ जहांगीर रहमतुल्लाह अलैह पृष्ठ संख्या 164 पर लिखते हैं

हजरत गौसुल आलम बहराइच भी तशरीफ ले गये।एक मर्तबा हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी रहमुल्लाह अलैह के आस्ताने पर तशरीफ फरमा थे। एक दिन में 70 बार हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम से मुलाकात हुई। हजरत अकसर फरमाया करते थे कि खिज्र अलैहिस्सलाम से जितनी मुलाकातें बहराइच में हुई हैं रूए जमीन पर कहीं नहीं हुई है। इसके बाद आप सैय्यद ज़ाफर (अमीर माह)की खिदमत में गये और उनसे मुलाकात फरमायी सूफी अब्दुल सहमान चिश्ती अलैहिर्रहमां दरे गाजी पे सुल्तान फिरोज़ शाह की हाज़री का वाक्या लिखने के बाद तहरीर फरमाते हैं पस जानना चाहिये कि जाहिरी बदन के इन्तेकाल के बाद हिदायत देना और खुसूसन बादशाहों के दिलों पर तसर्रूफ (राज़ करना) सुल्तानुस शोहदा के कमालात में ये है (मिरातुल असरार पृष्ठ सुख्या 459) आगे लिखते हैं।

इसके अलावा शुेख मुर्तज़ा हजरत मीर सैय्यद सुल्तान के मल्फूज़ात में लिखते हैं कि मीर सैय्यद सुल्तान बहुत सफर करने के बाद हजरत शेख अलाउद्दीन चिश्ती मश्कूर की इजाज़त से 12 साल तक हजरत ख्वाजा कुतुबुददीन बखतियार काफी के मज़ार से मिले हुए पुराने कब्रुस्तान में रियासत व मुजाहिदात में मश्गूल रहे लेकिन कामयाबी न हुई। एक दिन वो हैरान व परेशान कब्र के पास बैठे थे एक आदमी को जो कोढ़ के मर्ज़ में मुबतिला था जाते देखा।

अचानक एक खूबसूरत नौजवान तेज घाड़े पर सवार जाहिर हुआ उस सवार ने चन्द चाबुक मारे जिससे वह गिर गया लेकिन वह बदश्तूर उसे चाबुक मारता रहा यहो तक की उसकी खराब कोढ़ से खराब सुदा खाल निकल गयी और दूसरी नई खाल निकल आई। ऐसा मालूम होता था कि गोया वो बीमार ही नही था। मीर सैय्यद सुल्तान इस वाक्ये से बहुत हैरान हुए और जवान के पास जाकर सारा माज़रा पूछा तो उन्होंने फरमाया कि इस मरीज़ ने हजरत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बखतियार काकी के मजार पर जाकर सेहत के लिए दुआ की थी और आं हजरत नें मुझे हुक्म फरमाया कि इसका काम कर दो। चुनांन्चे मैने आकर इसे बीमारी से निजात दिलायी। उन्होंनें पूछा कि आप कहां से तशरीफ लाये हैं फरमाया मैं वो हूं कि हर एक की विलायत को मेरी विलायत से हिस्सा मिलता है और मुझे सालार मसऊद कहते हैं और मेरा मुकाम बहराइच है ये कहकर वो गायब हो गये। इसके बाद मीर सैय्यद सुल्तान आपकी मज़ार पर हाज़री के लिए बहराइच रवाना हुए और एक लम्बे समय तक आपके आस्थाने पर ठहरे। और उनकी सारी मुरादें पूरी हो गईं आगे और लिखते हैं कि मैंने कुतुबुल विलायत मीर सैय्यद अली कवाम के मल्फूज़ात में लिखा देखा है कि आपने अपने अकमल खुलफा मिस्ल शाह मूसा वगैरह को वसीयत की कि खुदा की बारगाह में कुर्बत के लिए सालार मसऊद की रूहानियत की तरफ तवज्जोह करना चाहिए क्योंकि उनकी रूहे पाक (सूरज) की तरफ आरेफीन पर चमकती है और ये कौम (सूफी–सन्त) उनसे फैज हासिल करती है।

मिरातुल असरार पृष्ठ संख्या 460

अक्सर अहले बसीरत पर मुत्तफिक (एक मत) हैं कि आपकी शहादत के बाद मुल्के हिन्दुस्तान में जो कोई शहादत से सरफराज़ होता है आपकी मुताबियत पर मामूर हो जाता है।

मिरातुल असरार पृष्ठ संख्या 440

तारीखे मीराते सिकन्दरी में लिखा है कि हजरत शाह महबूब आलम गुजराती फरमाते हैं कि जब अक्सर लोग अपनी हाजतें (ज़रूरतें) कुतबुल औलिया हजरत ख्वाजा मोइनुददीन चिश्ती अजमेरी की खिदमत में पेश करते हैं तो हजरत ख्वाजा उनको सालार मसऊद की

रूहानियत के हवाले करके खुद आजाद हो जाते हैं।

मिरातुल असरार पृरूठ संख्या 440

नकल किया जाता है कि हजरत शेख शरफुददीन यहया मुनीरी रहमतुल्लाह अलैह का एक मुरीद था उसने पूछा कि ये क्या रस्म है कि हर मुल्क और हर शहर में लोग सालार मसऊद गाजी की कब्र बनाते हैं। हजरत शेख साहब ने फरमाया कि हक तआला ने सालार मसऊद गाजी को कमाल अता किया है कि तमाम आदमी दुनिया के हर घर में उनकी कब्र बना ले तो अपने तसर्रुफ विलायत से सब जगह हाज़िर हों और फैज़ पहुंचाएं।

मिराते मसऊदी फारसी पृष्ठ संख्या(74)

मोलवी इनायत हुसैन बलग्रामी हजरत सरकार गाजी अलैहिर्रहमां की रूहानियत पर रोशनी डालते हुए लिखते है कि सुलतानुस शोहदा जामे मुशाहिदाए इलाही से सरशार कौनों मका से बेखबर एहकामे इलाही से खबरदार जो हुक्मे खुदा पाते अमल में ताते। आप हजरत यूसुफ अलैहिर्रहमां की तरह खूबसूरत और फरिश्ता सिफत इन्सान थे। आपकी अक्लो खिरद को देखकर लागों की अक्लें हैरान थीं। अल्लाह तआला आपकी जाते बाबरकत को औसाफे बातिन से आरास्ता फरमाया था।
शारेह बुखारी अल्लामा अलहाज़ मुफती मोहम्मद शरीफुल हक अमजदी अलैहिर्रहमां तज़किरए गाजी के मुकददमे में तहरीर फरमाते हैं।
फातेहीन ने सर खम कराए उरफा ने दिल जीते यूं इस्लाम फैला मगर इस्लाम की इशाअत करने वालों में कुछ ऐसे भी मर्दानें खुदा का तजकिरा मिलता (वर्णन) है जो एक साथ दोनों हथियारों से लैस थे। तलवार की काट ऐसी थी कि जो उसकी जद पर आया दो टुकड़े हुआ निगाह ऐसी पुरतासीर थी कि जिस पर पड़ी वो उनका गुलाम बन गया उन्होंने तलवारों की धार से सरों को झुकाया और निगाहों की कोशिश से दिलों को मोम किया। उन्हीं पाक जात अफराद में हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां भी हैं।

अदीबे शहीर हजरत अल्लामा बदरूल कादरी लिखते हैं कि हजरत गाजी मियां अलैहिर्रहमां सर जमीने हिन्द पर इस्लाम के मुबल्लिग़ बनकर आए। वो शुजाअत और बहादंरी के साथ–साथ रूहानियत व विलायत के भी ताजदार थे।

अनेक भारतीय सुलतानों व बादशाहों का आपके दर पे सवाली बनकर आना

सुल्तान मोहम्मद शाह तुगलक की आपके दर पे हाजरी

सुल्तानुश शोहदा हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी रहमतुल्लाह अलैह का रूहानी मुकाम इतना बुलन्द था कि हुकूमत व सल्तनत के ताजदार और रूहानियत व विलायत के आलम बरदार अकीदत व मुहब्बत के साथ हाजिर होकर फैज़ हासिल करते चले आ रहे हैं।

सुल्तान मोहम्मद तुगलक ने भी दर पर हाजरी की गरज से बहराइच का सफर किया आपके दर पर हाजरी के बाद उसने आपके दरगाह के चारों तरफ एक किले नुमा दीवारें तामीर करवायी और आपकी मजार के गुम्बद के चारों तरफ संगे मरमर की दीवारें और जालियां जो देखने में बड़ी खूबसूरत मालूम होती हैं तामीर कराई।

खानकाह इनायत अली शाह तकिया कलां जो उर्फे आम में बड़ी तकिया के नाम से मशहूर है और उसमें तकरीबन पचास साठ सालों से एक दीनी मदरसा जामिया गाजिया सय्यदुल उलूम बड़ी शान व शौकत से अपनी दीनी तालीमी फरायज अंजाम दे रहा है कायम है।जिसके प्रिंसपल हजरत मौलाना इम्तियाज़ अहमद आजमी साहब हैं उनकी निजामत में यह मदरसा तरक्की की राह पर गा़मजन है। इस खानकाह की इमारत भी मोहम्मद तुगलक ने तामीर करायी थी इस खानकाह में एक आलीशान बावली कुआं भी मोहम्मद तुगलक ने तामीर कराया जिसकी मिसाल भारत ही नहीं बल्कि दुनिया में मिलना मुश्किल है।

बतूता और मोहम्मद शाह तुगलक

दुनिया के महान् सय्याह इब्ने बतूता ने अपने मशहूर सफर नामे में लिखा है कि बादशाह मोहम्मद शाह तुगलक ने बहराइच जाने का इरादा किया। ये एक खूबसूरत शहर है और दरियाए सरयू के किनारे बसा हुआ है। सरयू एक बड़ी नदी है बादशाह ने सालार मसऊद की कब्र की जियारत के लिए नदी पार की सालार मसऊद ने वहां के अकसर इलाकों को फतह कर लिया था। और उनके संम्बन्ध में अजीब व गरीब बातें मश्हूर ह लोगों के नदी पार करते समय बड़ी भीड़ हुई अतः एक बड़ी कश्ती जिसमें तीन सौ आदमी सवार थे डूब गई और उनमें से एक अरब जो अमीर गिज़ा उनके साथ था। हम एक छोटी कश्ती में थे इस वज़ह से अल्लाह ने हमें बचा लिया। उस अरब का नाम जो डूबने से बच गया था सलाम था और यह अजीब इत्तेफाक था उसका इरादा था कि हमारे साथ कश्ती में बैठे लेकिन हमारी कश्ती ज़रा आगे बढ़ आई थी इस वजह से वो बड़ी कश्ती में बैठ गया था जो डूब गयी जब वो नदी से निकला तो लागों ने यह सोचा कि वह हमारी कश्ती में था इसलिए हमारे साथियों में शोर मच गया सब लोगों ने ख्याल किया कि हम भी डूब गये लेकिन जब उन्होंने हमें सही सालिम देखा तो हमको मुबारक बाद दी फिर हमने सैय्यद सालार मसऊद की कब्र की ज़ियारत की उनका मजार एक बुर्ज़ में है वहां भीड़ इतनी थी कि मैं अन्दर दाखिल न हो सका फिर उस नवाह में हम बांस के जंगल में दाखिल हुए तो हमने गेंडा देखा लोगों ने उसको मारा और उसका सर लाए वो हाथी से छोटा था लेकिन उसका सर हाथी के सर से कुछ बड़ा था। सफरनामा इब्ने बतूता मुतरज़िम पृष्ठ संख्या 191।

सुल्तान फिरोज़ शाह तुगलक दरे गाज़ी पे

वाजेह हो कि सुल्तान फिरोज़ शाह तुगलक हजरत शैखुल इस्लाम अलाउददीन नबसा हजरत शेख फरीदुददीन अजोधनी रहमतुल्लाह अलैह का मुरीद था। बादशाह ने अपनें तमाम ओहदे हुकूमत में औलियाए इकराम की पैरवी और उनके मजारों की जियारत की चालीस साल तक उन्ही बुजुर्गानें दीन की पैरवी में हुकूमत की फिरोज़शाह हर सफर से पहले औलियाओं और बुजुर्गों की खिदमत में

हाज़िर होता था। उसने 776 हिजरी में बहराइच का सफर किया और शहर में पहुंचकर सालार मसऊद के आस्ताने पर हाजिर होकर फातिहा पढ़ी।

बादशाह ने बहराइच में कुछ दिन कयाम किया। एक रात ख्वाब में सालार मसऊद रहमतुल्लाह अलैह की जियारत नसीब हुई सैय्यद सालार ने फिरोंजशाह को देखकर अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा जो इस बात का इशारा था कि अब बुढ़ापा आ गया। और बेहतर है कि अब आखिरत का सामान किया जाए और अपनी हस्तन को याद रखा जाए सुबह को बादशाह ने हलक किया और तमाम साथियों नें भी सर मुडाया।

आस्ताने गाजी पे फिरोज़शाह व अमीर माह रहमतुल्लाह अलैह की एक साथ हाज़िरी

आस्ताने गाजी अलैहिर्रहमां पे फिराज़शाह की हाज़िरी के सम्बन्ध में साहब मिराते मसऊदी एक वाक्या लिखते हैं।

जिन दिनों फिरोज़शाह तठ की जंगी मुहिम में मसरूफ था उसी दौरान एक रोज उसकी वालिदा अपने मकान की छत पर खड़ी थीं कि उसकी नज़र एक ऐसे जुलूस पर पड़ी जिसमें लोग नेजे और रंगे बिरंगे झण्डे व निशान व आलम लिए हुए उछलते कूदते गाते बजाते जा रहे थे। इस धूम धाम को देखकर फिरोज़शाह की वालिदा को बड़ी हैरत हुई पूछा इतने जौक व शौक के साथ जुलूस लेकर लोग कहां जा रहे हैं। उन्हें बताया गया कि उन्हें रूहानियत के ताजदार सुलतानुश शोहदा सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां के आस्ताने पर हाजिरी की गरज से बहराइच जा रहे हैं जहो से लोगों की मुरादें पूरी होती हैं व इतने बड़े ब करामत फी सबीलिल्लाह है। कि उनके तबस्सुल से अल्लाह तआला बड़ी बड़ी मुसीबतों और मुश्किलों से निजात फरमाता है।

मशहूर हैं कि उनके आस्ताने से अन्धों को आंखें कोढ़ियों और जुजामियों को शिफ़ा मिलती है। ये बात सुनकर फिरोज़शाह की वालिदा के दिल में हजरत गाजी अलैहिर्रहमां की मुहब्बत व अकीदत पैदा हो गई और उससे ख्याल पैदा हुआ कि जब वो इतने बड़े खुदा के मुकर्रब बन्दे शहीदे राहे मौला और रूहानियत के मर्कज़ हैं तो क्यों न अपने बेटे कीं कामयाबी और फतेह के लिए उनकी तरफ रूजू किया जाए।

अतः उसने सरकारे गाजी अलैहिर्रहमां की दुहाई देते हुए दिल में यह नीयत कर ली कि अगर मेरा बेटा फतह मन्द होकर आएगा तो उसे ज़रूर आपके आस्ताने पर हाजिरी के लिए बहराइच भेजूंगी। उधर बादशाह की फौज के पैर उखड़ने ही वाले थे कि किसी गैबी ताकत ने सहारा देकर कामयाब व कामरान बना दिया। फतह व नुसरत ने आदशाह के कदम चूमे। बादशाह विजयी होकर घर लौटा तो उसकी वालिदा ने कहा कि बेटे आज तुम एक बहुत मुश्किल जंगी महाज से फतह होकर लौटे हो मेरे ख्याल में तुम्हारी तमाम तर कामयाबी और फज़ले खुदावन्दी सरकार गाजी अलैहिर्रहमां की रूहानी ताईद की बदौलत है इसलिए जल्द से जल्द उनकी बारगाह में हाज़िर होकर खिराजे अकीदत पेश करके अपनी नियाज़मन्दी का सुबूत दो।

फिरोजशाह को पहले ही से अल्लाह वालों से अकीदतो मुहब्बत थी वालिदा मोहतरमा का हुक्म पाकर उसके दिल में भी हजरत गाजी अलैहिर्रहमां के आस्ताने पर हाजरी का शौक पैदा हुआ अतः दिल्ली से सफर करके बहराइच पहुंचा तो कुछ बद बख्तों ने सुलतान को बदगुमां कर दिया कि इस मकबरे में हजरत गाजी अलैहिर्रहमां का जस्दे अतहर(जिस्म या शरीर) मदफून नही है। बल्कि ये कही नामालूम मुकाम पर है यहां उनकी असली कब्र नहीं है सुलतान कशमकश और तशवीश में मुबतिला हो गया कि आखिर वास्तविक कब्र कहां है। ख्याल पैदा हुआ कि अगर कोई आरिफ कामिल साहिबे बातिन मिल जाता तो वो अपने नूरे बातिन और कश्फ के जरिए हमारी सही रहनुमाई कर सकता है।

बहुत पता करने पर मालूम हुआ कि उस समय बहराइच में एक बहुत बड़े वली कामिल बुजुर्ग हजरत सैय्यद अफज़लुददीन अबू ज़ाफर अमीर माह रहमतुल्लाह अलैह हैं उनसे मुलाकात की जाए तो यकीनन वो सही रहनुमाई और निशान दिहि कर सकते हैं।तो सुल्तान स्वंय हजरत अमीर माह रहमतुललाह की खिदतम में हाज़िर हुआ और अपना सारा हाल ब्यान किया। हजरत अमीर माह रहमतुल्लाह अलैह ने इस बात की तसदीक की कि हजतरत गाजी अलैहिर्रहमां क़ी असली मज़ार वहीं है जिसकी लोग जियारत करते हैं क्योंकि उसी मज़ार से निकलकर तुम्हारी मदद के लिए फलां तारीख और फलां तठ की तरफ तशरीफ ले

गये थे। और फिर मुहिम सर होने के बाद वापस हुए तो हमने देखा कि इसी मज़ार में दाखिल हुए। सुल्तान ने ज़ब शाही रोज़ नामचां देखा तो वास्तव में जंग की वही तारीख दर्ज थी जो अमीर माह रहमतुल्लाह अलैह ने बताई थी सुलतान को पूरा यकीन हो गया कि हजरत गाजी अलैहिर्रहमो की कब्र जहां मशहूर है वहीं है फिर बादशाह ने अमीर माह रहमतुल्लाह अलैह के साथ गाजी के आस्ताने पर हाजिरी की ईच्छा ज़ाहिर की तो हजरत अमीर माह रहमतुल्लाह अलैह फिरोज़शाह को साथ में लेकर चल पड़े।

हजरत अमीर माह रहमतुल्लाह अलैह के हालात में मिलता है कि जब आप बहराइच में चलते तो उंगलियों के बल चलते पूरा कदम न रखते जब बादशाह अमीरमाह रहमतुललाह अलैह के साथ गाजी के आस्ताने पर पहुंचे और फातिहा पढ़ी। फातिहा पढ़ने के बाद बादशाह ने अमीरमाह रह0 से कहा कि आप की कुछ करामतें बताइए इस पर हजरत अमीरमाह रह0 ने फरमाया कि इससें बड़ी करामत और क्या होगी कि मुझसा फकीर और तुमसा बादशाह दोनों इनके दर पे हाथ बांधे खड़े हैं और दरबानी कर रहे हैं। इस जवाब से बादशाह बहुत प्रभावित हुए और फैज पाने की गरज से कुछ दिनों आस्ताने गाजी पे कयाम किया।

दरे गाज़ी पर औरंगज़ेब आलमगीर रहमतुल्लाह अलैह की हाज़री

1068 हिजरी 1658 ई0 1118 हिजरी 1707ई0 के बीच के ज़माने में औरंगज़ेब आलमगीर रह0 दिल्ली से बहराइच आए। किला दरगाह शरीफ से बाहर पश्चिम कोने पर मस्जिद आलमगीरी के नाम से तामीर कराई जो उनकी यादगार है। अलतमस का बेटा नसीरूददीन महमूद दिल्ली सलतनत का पहला शहजादा था जिसने बहराइच में अकामत(ठहरना) अख्तियार की उसके सूबेदारी के ज़माने में बहराइच के चारों तरफ मुसलमानों की बस्तियां बसाई गईं। लेकिन मिनहाज सिराज ने शहज़ादे के जो हालात लिखे हैं उनमें सालार मसऊद का कोई ज़िक्र नहीं मिलता उनका बयान है कि–

सालार मसऊद की मजार पर पक्की इमारत सबसे पहले नसीरूददीन महमूद ने तामीर कराई थी और मोहम्मद बिन तुगलक

725 हिजरी मुताबिक 1345 ई0 ता0 752 हिजरी मुताबिक 1351 ई0 दिल्ली का पहला सुल्तान था जो सालार मसऊद की मजार की ज्यारत के लिए आया था। फिरोज शाह तुगलक भी ज्यारत के लिए 776 हिजरी मुताबिक 1374 ई0 में बहराइच आया था। वह यहां के रूहानी माहौल से इतना प्रभावित हुआ कि उसने दुर्वेशों की तरह सर मुण्डवाया और आखिरत के ख्याल में मग्न रहने लगा।

तारीखे फिरोज शाही अफीफ पृष्ठ संख्या 372

यही बयान किया जाता है कि उसने कई इमारतें कुंए कब्रस्तान और बरामदे तामीर कराये थे। भारत में सालार मसऊद का मक़बरा एक मक़बूल तरीन ज़्यारत गाह है। हर साल लाखों हिन्दू और मुसलमान यहां ज़्यारत के लिए आते हैं। गाजी मियां जो बाले मियां और बाला पीर हठीलापीर वगैरह नामों से मश्हूर हैं। उत्तरी भारत की कहानियों सकाफती जिन्दगी विशेष रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश बिहार पूर्वी और पश्चिमी बंगाल के देहातों में एक विशेष स्थान रखती है जनता मं उनके संबन्ध में बहुत से लायानी किस्से मश्हूर है। लोगों का मानना है कि उनकी शहादत उस समय हुई जब उनकी शादी की तक़रीबात हो रही थी इसलिए इस वाक्या ने दोहरे उर्स की शक्ल अख्तियार कर ली है उनकी याद में कई स्थानों पर जेठ के महीने में मई जून की पहली इतवार को झण्डों या निशान के साथ उरूसी जुलूस निकाले जाते हैं चूंकि इस त्योहार में बहुत सी गलत रस्में शामिल हो गई थीं इसलिए सिकन्दर लोधी 894 हिजरी मुताबिक 1489 ई0 ता0 923 हिजरी मुताबिक 1517 ई0 में इसको बन्द कर दिया। लेकिन बाद में फिर होनें लगा। एक दफा शहंशाह अकबर ने आगरा के आस – पास इस त्योहार को मनाते देखा था। गाजी मियां की शहादत का हर दिन हर साल बारहवीं तेरहवीं और चौदहवीं रजब की तारीखों में मनाया जाता है।

करामते गाज़ी

हज़रत सैय्यद सालार मसऊद गाजी अलैहिर्रहमां हिन्दुस्तान में उन शोहदाए इस्लाम में से है जिनकी ज़ाते रूहानी फैज़ान और अज़ीम करामतों का मरकज़ है। आपके आस्ताने से लाइलाज मरीज़ शिफा पाते हैं। विशेष रूप से कोढ़ी मुकम्मल तौर से सेहतयाब होते हैं अन्धों की आंखों को रौशनी मिलती है आपके सदके और वसीले से मांगी मुरादें मिलती हैं गूंगे को ज़बान और बे औलाद को औलाद अता होती है। दर हकीकत आपकी ज़ात हजरत ईसा अलैहिस्सलाम के मोअजिज़ात का मजहर और करामात का आइना है अल्लाह के फजल से आपके दर पर आने वालों की जरूरतें पूरी होती हैं और मुश्किलें आसान होती हैं यहां तमाम धर्मों के लोग मुसलिम तथा गैर मुसलिम आपकी बारगाह से फैज़ियाब होते हैं और अपनी खाली झोलियां भर कर जाते हैं।

जासो की गोद भर गई गाज़ी के फैज़ से

हज़रत गाजी अलैहिर्रहमां की सबसे पहली करामत जो मशहूर हुई वह यह है कि मौजा नगरौर जिला बहराइच में नन्द महर अहिर जोंगद मल का चरवाहा था उसकी शादी हुए कई साल हो गये थे लेकिन उसके यहां कोई बच्चा पैदा नहीं हुआ। उसकी औरत जासो की गोद कई जमाने तक खाली थी। पास पड़ोस के लोग उसे बांझ पन का ताना देने लगे ला–औलादी का गम उस पर लोगों के ताने जख्म पर नमक का काम करने लगे वह हमेशा गमगीन और दुःखी रहती एक दिन उसकी सास भी ताना देते हुए कहने लगी कि तू मनहूस है मेरे घर से दूर हो जा तू बांझ है। तेरी कोक से कोई बच्चा जन्म ले यह नामुमकिन है। मैं अपने लड़के की शादी दूसरी जगह कर दूंगी। तुझसे कोई वास्त नहीं रहेगा औरत के दिल पर चोट लगी आंखों में आंसू भरे घर से निकल खड़ी हुई। तीन चार मिल चलने के बाद हजरत गाजी

अलैहिर्रहमा की मजार के पास थक कर बैठ गई खादिमान दरगाह हजरत सैय्यद हाजी अहमद व सैय्यद हाजी मोहम्मद उसे बहुत ज्यादा रंजीदा और गमजदा देखकर वजह पूछी तो उसने रो–रो कर अपने हालात बयान किये आप हजरात ने तसल्ली देते हुए कहा कि सब्र से काम लो यह सालार गाजी आस्ताना है यह अल्लाह की राह में शहीद हुए हैं इनका मरतबा अल्लाह के यहां बहुत बुलंद है अपना दामन फैला कर अपनी मुराद मांग । इन्शा अल्ला आपकी दुआ की बरकत से तेरे दिल की कली खिल जायेगी और तेरी गोद भर जायेगी। जासो ने रो–रोकर हजरत गाजी अलैहिर्रहमा की दुहाई देते हुए अपनी मुराद मांगनी शुरू कर दी इतने में उसका शौहर नन्द महर जिसे वाकई अपनी औरत दिली मुहब्बत थी ढूंढते हुए आस्ताने गाजी पर आ पहुंचा बीबी से दुःख भरी दास्तान सुनने के बाद उसने दुआ की और मन्नत मानी फिर दोनों घर लौट आये। अल्लाह का फज्ल हुआ। उसी रात औरत उम्मीद से हो गई और 9 माह बाद एक बच्चा पैदा हुआ। उन्हे यकीन हो गया कि मालिक ने हमें जो बच्चा अता फरमाया है यह हजरत सैय्यद सालार की दुआ की बरकत है। उसी तारीख से यह दोनों मियां बीबी बड़ी अकीदत के साथ सोमवार के दिन आस्ताने गाजी पर हाजिर होते अकीदत के फूल पेश करते मशहूर है कि उन्हीं लोगों ने गाय के दूध और चूने के गारे से हजरत गाजी अलैहिर्रहमा की मजार को पोख्ता बनाया और यह लोग मारे खुशी के चलते फिरते उठते बैठते हजरत गाजी अलैहिर्रहमा की इस करामत का चर्चा करते। आपकी यह करामत इतनी मशहूर हो गयी कि जो भी किसी मुसीबत में मुबतिला होता आपके दर पर हाजिर होकर मन्नते मांगता इस तरह रोज बरोज जायरीन का हुजूम बढ़ता गया।

यह वह दर है जहां अन्धे को आंख मिलती है
(दास्ताने बीबी जोहरा)

बयान किया जाता है कि शुरू के उन्हीं दिनों में खानदाने सादात से ताअल्लुक (सम्बन्ध) रखने वाले दो बुजुर्ग सैय्यद रूकमुद्दीन व सैय्यद जमालुद्दीन अपना वतन छोड़ कर कस्बा रूदौली जिला बाराबंकी में सुकूनत अख्तियार कर लिया था। सैय्यद रूकमुद्दीन के दो साहब जादे थे और सैय्यद जमालुद्दीन साहब के यहां केवल एक लड़की थी जिसकी उम्र 12 साल हो चुकी थी। उसका नाम जोहरा था। वह बे पनाह खूबसूरत थी लेकिन नाबीना थी। उसे खुद भी अन्धी होने का गम सताता रहता और घर वालों को भी बड़ा रन्जो मालाल रहता खुदा का दिया हुआ घर में बहुत कुछ था दुनियाबी आरामों आशाईस में किसी तरह की कोई कमी नहीं थी। जोहरा एक होनहार लड़की थी घर के सभी लोग उसे बहुत प्यार करते थे। मुहब्बत व शफकत से पेश आते थे। उसकी छोटी से छोटी तकलीफ भी किसी को गवारा न थी। हमेशा उसका नाज उठाने के लिए तैयार रहते लेकिन जब वाल्दैन और खानदान के लोगों को उसकी माजूरी और मजबूरी का एहसास होता तो सारे ऐश व आराम बे माना होकर रह जाते दिल तड़प उठता। दुनिया के तरीके इलाज से जोहरा को बीनाई मिलनी मुमकिन न थी। सिर्फ अल्लाह की बारगाह से उम्मीद वाबस्ता थी। हुस्ने इत्तेफाक कि उन्हीं दिनों कुछ जायरीन आस्ताने गाजी अलैहिर्रहमा पे हाजिरी देकर खुशी खुशी लौट रहे थे कि उन लोगों ने जोहरा के वाल्दैन और घर वालों से हजरत गाजी अलैहिर्रहमा की रूहानियत फयूजो बरकात वा करामात के तजकिरे बड़े ही वालिहाना अन्दाज में किये। जिससे उनके दिलों में हजरत गाजी अलैहिर्रहमा की अकीदत व मुहब्बत बैठ गई। और उन्होंने दिल ही दिल में यह नियत कर ली कि हजरत गाजी अलैहिर्रहम करम फरमा दें।और दुआ कर दें कि अल्लाह तआला हमारी बच्ची को बीनाई अता कर दें तो हम भी उनके आस्ताने पर हाज़िर होकर नज़्र पेश करेंगे और उनके रौजे की तामीर कराएंगे। घर के अन्दर सुबह शाम हजरत

गाजी अलैहिर्रहमां का तजकिरा चलता। बीबी जोहरा भी सुनतीं और दिल ही दिल में खुश होतीं उसने भी मन्नत मानी और नीयत करली कि अगर हजरत गाजी अलैहिर्रहमां का का करम हो जाए और मैं आंखो से देखने लगूं तो अपनी तमाम उम्र हजरत गाजी के आस्ताने पर झाड़ू बहारू करके उम्र गुजार लूंगी इसी उम्मीद पर बीबी जोहरा को हजरत गाजी अलैहिर्रहमां से गायबाना अकीदत और सच्ची मोहब्बत पैदा हो गई। धीरे –धीरे इस मोहब्बत ने इश्के कामिल का रंग अख्तियार कर लिया। अब बीबी जोहरा रात दिन ख्याले महबूब और यादे जाना में महू रहती और यार के दीदार की हसरत लिए गोशए तन्हाई में बेठी रहतीं।

दिल ढूंढता है वही फुरसत के रात दिन
बैठी रहूं तसव्वुरे जानां किए हुए।

आखिर एक दिन तसव्वुरे जानां किए हुए तन्हाई में बैठी थीं कि उन्हें ऐसा लगा कि हजरत सैय्यद सालार मसऊद गाजी सामने खड़े हैं और कह रहे हैं कि जोहरा देखती क्यों नहीं।

गाजी की आवाज उनके कानों में गूंज उठी लेकिन आंखों में रौशनी कहां कि वह गाजी के चेहरा अनवर को देख सके बेचैन हो गई आंखों से आंसू गिरने लगे खुदा से इलतिजा करने लगी कि ऐ मेरे खालिक व मालिक तू रहीम और करीम है अगर मैं मुहब्बते गाजी में सच्ची हूं तो तू मुझे मेरी आंखों में रौशनी अता फरमा दे ताकि मैं गाजी का दीदार कर सकूं वरना मुझे मौत देदे। दीदारे यार से महरूमी का गम अब सहा नहीं जाता इतना कहते ही उनकी आंखों में रौशनी आ गई।

(इश्क़ सच्चा हो तो फिर अरमान क्यों न पूरा हो)

आंख उठाया तो देखा कि वाकई हजरत सैय्यद सालार गाजी अलैहिर्रहमां तमाम तर रानाइयों के साथ खड़े हैं और उनका चेहरा आफताब व महताब की तरह रौशन है।

(काम आखिर जज़्बए अख्तियार आ ही गया)
दिल कुछ इस सूरत से तड़पा, उनको प्यार आ ही गया।

बीबी जोहरा उनकी तरफ तेजी से आगे बढ़ीं मगर फौरन ही हजरत गाजी का जलवए ज़ेबा नज़रों से ओझल हो गया सारा सुकून व करार जाता रहा। मुहब्बत की आग और भड़क उठी आंखों को रौशनी मिलने

के बाद भी निगाहों में कैफ समा छा गया जारो कतार रोने लगीं जबानें हाल से कहने लगीं

क्यों रूख को छुपा बैठे, करके मुझे दीवाना ।

बीबी जोहरा को बीनाई मिलने के बाद घर के सारे लोग बहुत खुश हुए एक बड़ी फिक्र और गम से निजात मिल गई। लेकिन बीबी जोहरा के दिल पे गम की घटा छा गई। हजरत गाजी का जलवए ज़ेबा देखने के बाद उनके दिल पर एक हंगामा बपा हो चुका था। लज्जते नज़ारा याद करके और तड़प जाती एक रात आपके ख्यालों में गुम थीं और आंख लग गई ख्वाब में हजरत गाजी तशरीफ लाए और कह रहे हैं जोहरा अगर तुम मेरी मुहब्बत में सच्ची हो तो बहराइच आ जाओ ख्वाब से बेदार हुई तो बहराइच पहुंचने के लिए बेकरार हो गई माता पिता से अपना ख्वाब बयान किया रौजे की तामीर और मन्नत याद दिलाई बहराइच जाने की इजाजत मांगी। इजाजत मिल गई। सैय्यद जमाल उद्दीन ने खुशी खुशी पूरे इंतिजाम के साथ बीबी जोहरा को अपने भाई के लड़के और उनके मामू के साथ बहराइच भेज दिया।

बीबी जोहरा बड़ी अकीदतो अहतराम के साथ गाजी अलैहिर्रहमां के आस्ताने पर हाजिर हुई मजारे पाक का बोसा लिया अकीदत व मुहब्बत के हार व फूल पेश किए। साहबे आस्ताना ने भी उनकी हाजरी को कुबूल फरमाकर अपने फैजान से मालामाल कर दिया जियारत के बाद बीबी जोहरा ने अपनी मन्नत पूरी करने की गरज से तामीरात का काम शुरू किया पहले हजरत गाजी का रौजा तामीर कराया उसके बाद हजरत सैफउद्दीन सुरखुरू सालार का मकबरा और फिर मकबरए गंजे शहीदा तामीर कराया। हजरत गाजी की मजार शरीफ के करीब में पश्चिम जानिब एक मकबरा बनवाकर वसीयत की कि मेरी आखरी आराम गाह यही है मेरे मरने के बाद मुझे इसी में दफन किया जाए। बीबी जोहरा ने अपनी जिन्दगी के दिन पूरे करने के बाद 18 साल की उम्र में 14 रजब बरोज इतवार हिन्दी तारीख के हिसाब से जेठ की पहली तारीख को इस दुनिया से रेहलत फरमाया और वसीयत के मुताबिक अपने बनाए हुए मकबरे के अन्दर दफन की गईं। हजरत

गाजी अलैहिर्रहमां की जात से सच्ची मुहब्बत और गहरी वाबस्तगी का ही नतीजा है कि जिस तारीख दिन और महीने में आपकी शहादत हुई उसी तारीख दिन और मीहनें में बीबी जोहरा नें भी विसाल (इन्तेकाल) फरमाया। आपके चचा जात भाई और मामू ने भी दरे गाजी पे मरना पसन्द किया।आपकी मजार के पश्चिम जानिब दफन किए गए।

बड़े बड़े सुलतानों बादशाहों ने दरे गाजी पे हाजरी के दौरान यह तमन्ना और ख्वाहिश जाहिर की कि अगर इजाजत हो तो पुराने गुम्बद को तोड़कर नया और बड़ा गुम्बद तामीर कर दिया जाए मगर उन्हें बातनी इशारे से रोक दिया गया क्योंकि इसे बीबी जोहरा ने तामीर कराया था। हजरत गाजी अलैहिर्रहमां को बीबी जोहरा का बनवाया गया गुम्बद महबूब है। दौलत का सहारा लेकर आलीशान इमारत तो बनवाई जा सकती है लेकिन बीबी जोहरा की मुहब्बत और खुलूस का जवाब मुमकिन नहीं। .

आपके दर पे लोगों की उम्मीदें और मन्नतें पूरी होती हैं

हज़रत शेख मुहम्मद फय्याज से मनकूल है कि कुतबुल वक्त हज़रत राही सैय्यद नूर मोहम्मद मानकपूरी के घर में कोई औलाद नहीं होती थी। हज़ार तदबीर करने के बाद भी कोई औलाद पैदा न हुई। आपकी बीवी ने यह मन्नत मानी थी कि या ग़ाज़ी सरकार अगर आप मेरे लिए दुआ फरमा दें कि अल्लाह तअला मुझे कोई औलाद अता फरमा दे तो मैं उसे लेकर आपके दर पे हाज़री दूंगी। अल्लाह तअला ने उन्हें एक मुबारक फरज़न्द अता फरमाया अब मन्नत पूरी करने की फिक्र हुई मगर गरीबी की वजह से मन्नत में ताखीर होती गई इसलिए राही सैय्यद नूर मोहम्मद साहब रंजीदा और ग़मज़दा रहते एक दिन सैय्यद साहब अपने हुजरे में इबादत में मशगूल थे कि हज़रत ग़ाज़ी अलैहिर्रहमां अपनी नूरानी सूरत में तशरीफ लाए और फरमाया कि अपने बेटे को मेरे पास लाओ अब तकलीफ उठाकर बहराइच जाने की ज़रूरत नहीं है तुम्हारी मन्नत यहीं पूरी हो जाएगी। सैय्यद नूर मोहम्मद की खुशी की इन्तिहा न रही अपने नूरे नज़र सैय्यद मुबारक को लाकर कदमों में डाल दिया हज़रत ग़ाज़ी ने उसके सर पर मुहब्बत से हाथ फेरा और दुआऐं दी और बाहर तशरीफ लाए। बाहर एक मर्द फक़ीर नंगे सर नंगे पैर घोड़ी पकड़े खड़ा था। सैय्यद नूर मोहम्मद ने सवाल किया कि हुज़ूर यह कौन बुजुर्ग हैं आपने फरमाया यह सिकन्दर दीवाना है ज़िन्दगी में भी हमारे साथ थे और शहादत के बाद भी साथ हैं। फिर आप घोड़ी पर सवार होकर आंखों से ओझल हो गए।

आपकी करामत का इन्कार करने वालों का अन्जाम बुरा होता है

हज़रत गाज़ी अलैहिर्रहमां की करामतों का चर्चा जब दूर– दूर तक फैल गया। बनारस से बड़ी तादाद में लोग एक जुलूस की शक्ल में नेज़े और निशान लिए हुए मस्तों की टोली बनाकर बहराइच आ रहे थे जब जुलूस जौनपुर पहुंचा वहां से भी लोग हज़ारों की तादाद में नेज़े और निशान के साथ उस जुलूस में शामिल हो गए तमाशा देखने वालों की एक भीड़ जमा हो गयी। शहर में एक शोर मच गया मकतब में प्रढ़ाने वाले एक मुल्ला को जब ख़बर हुई तो वह अपने चन्द शागिर्दों के साथ आया और जुलूस के क़रीब पहुंच कर कुफ़ व शिर्क और बिदअत के फतवे लगाने लगा। जुलूस के लोगों ने उसकी बातों पर कोई ध्यान न दिया वह झगड़े पर आमादा हो गया। बारगाहे गैब से एक ज़ोरदार तमाचा उसके मुंह पर पड़ा जिसकी वह ताब न ला सका और गश (चक्कर) खाकर ज़मीन पर गिर पड़ा देखने वालों ने देखा कि उसका पूरा चेहरा काला पड़ गया। सच ह औलिया से अदावत रखने वालों का यही अन्जाम होता है। उस मुल्ला की सारी कोशिश औलिया ए अल्लाह की अदावत की बुनियाद पर थी इसलिए उसका यह अन्जाम हुआ।

कोई हरगिज़ न रोक सकेगा गाज़ी तेरे दीवानों को-ज़माना चाहे लाख कोशिश करले

कस्बा अमेठी ज़िला लखनऊ के मशहूर व मारूफ बुजुर्ग हज़रत मखदूम बन्दगी मियां का एक हज्जाम (नाई) था जो हफ्ते में एक निश्चित दिन आकर हज़रत के बाल बनाने और नाखून तराशने की खिदमत अन्जाम देता। एक बार मुक़र्ररा (निश्चित) समय से एक रोज पहले ही आया और कहने लगा हुजूर आज ही बाल बनवा लें चूंकि मुझे कल सुबह बहराइच जाना है बहुत लोग जा रहे हैं उन्हीं के साथ मुझे भी जाना है।

हज़रत बन्दगी मियां ने बतौर आज़माइश नाई से कहा कि क्या ज़रूरी है कि हर साल जाओ इस साल नागा कर दो अगले साल चले जाना नाई ने कहा एक साल का समय बहुत होता है ख़ुदा जाने ज़िन्दगी रहे न रहे। मुझे इजाज़त दे दीजिए मैं हर सूरत में बहराइच जाऊंगा जी लगा हुआ है हज़रत ने देखा कि उसे बहराइच जाने से रोकना बड़ा मुश्किल है बाल बनवाया और उसे जाने की इजाज़त दे दी। फिर हज़रत ने कहा कि जब तुम बहराइच जा ही रहे हो तो मेरा एक खत लेते जाओ। आपने एक खत लिखा और नाई से कहा कि इसे बहराइच लेते जाओ फलां बाग में चले जाना वहां सुर्ख कपड़ा पहने हुए एक खूबसूरत नौजवान घोड़े पर सवार मिलेगाउसे यह खत दे देना और अगर जवाब दे तो लेते आना।

नाई दूसरे दिन सुबह सवेरे बहराइच जाने वाले काफिले के साथ रवाना हुआ। बहराइच पहुंचकर मज़ार की ज़ियारत की और फातिहा पढ़ी इसके बाद नाई बाग में गया इधर–उधर नज़र दौड़ाई कि एक खूबसूरत नौजवान सुर्ख कपड़ा पहने हुए घोड़े पर सवार सामने आ खड़ा हुआ नाई को कुछ डर महसूस हुआ वह घबरा गया नौजवान ने आते ही नाई से खत के बारे में पूछा नाई ने खत पेश कर दिया नौजवान ने खत पढ़े बगैर अपना जवाबी खत नाई को देते हुए कहा यह जवाब है उस खत का जो तुम लाए थे इसे हज़रत बन्दगी मियां को दे देना फिर उस नौजवान ने अपनी राह ली। और आंखों से ओझल हो गया।

अमेठी आने के बाद नाई ने वह खत हजरत बन्दगी मियां की खिदमत में पेश कर दिया। नाई के दिल में ये बात मुअम्मा बनकर खटक

रही थी कि आखिर ये नौजवान कौन था और खत बगैर पढ़े उसका जवाब दे दिया। मुझे पहचानकर खत भी मांग लिया हिम्मत करके नाई ने हजरत बन्दगी मियां से पूछ ही लिया कि हुजूर वह व्यक्ति कौन था जिसे आपने खत लिखा था और खत में आपने क्या लिखा था और उसने बिना पढ़े खत का जवाब दे दिया और जवाब में लिखा किया था। हजरत बन्दगी मियां ने कहा कि घोड़े पर सवार नौजवान कोई और नहीं बल्कि खुद सरकार गाजी पाक थे। जिनके उर्स में तुम गये थे। खत में मैंने यह लिखा था कि क्यों खुदा के बन्दों को बे फायदा कुलाकर परेशान करते हो। उन्होंने जवाब में लिखा कि जब तुम अपने एक नाई को नहीं रोक सके तो मैं कैसे इतने बड़े हुजूम को रोक सकता हूं। नाई ने कहा हुजूर फिर आपने मुझे पहले ही क्यों न बता दिया कि जो खत तुमसे मांगेगा वो खुद हजरत सैय्यद सालार गाजी होंगे। हजरत बन्दगी मियां ने कहा नादान तुम्हारे लिए यही क्या कम है कि तुमने उनकी ज़्यारत कर ली। (देता है बादाह ज़र्फ कदह ख्वाह देखकररोक सका न हरगि[illegible] कोई तेरे दीवानों को) (कैसे कोई रोक सकेगा, शमा से परवानों को जि[illegible] चाहा दर पे बुला लिया, जिसे चाहा अपना बना लिया।)

सरदार अली मिम्बर कमेटी दरगाह का बयान है कि 1897 ई0 में रात नौ बजे मैंनें खुद अपनी आंखों से देखा कि एक औरत नकाब पोश और एक मर्द आए। उस समय दरगाह में कोई न था। मुझसे कहा कि दरवाजा खोल दो मैंने कहा कि इस समय दरवाजा नहीं खुल सकता तो कहने लगे कि मुझको हुक्म हुआ है कि इस समय सरदार अली हैं। तुम जाओ और उनसे कहो, मैं हैरत में पड़ गया कि इन्हें मेरा नाम कैसेमालूम हुआ मगर मैंने कह दिया कि जब तुम बुलाए हुए आए हो तो दरवाजा भी अपने आप खुल जाएगा चुनान्चे दोनों अन्दर गये और दरवाजा खुद ब खुद खुल गया कुछ देर के बाद वह वापस आए और मुझसे कहा कि मजार के अन्दर जाओ कुछ रखा है लेलो जब मैं गया तो देखा कि एक सीनी गर्म जलेबियों से भरी हुई रखी है और पांच रूपये भी हैं जिसे मैंने ले लिया।

इसी तरह 1909 ई0 में एक नाबीना औरत फखरपुर के पास रहने वाली उसका शौहर उसका हाथ पकड़े हुए दरगाह शरीफ में आए कुछ समय तक मजारे अक़दस के पास रहे और जो निकले तो खुश व खुर्रम उनकी दोनों आंखों में रौशनी आ चुकी थी। यह वाक्या मैंने अपनी आंखों से खुद देखा और यह भी देखा है रात को शहीदों का लश्कर आपके दरपर हाजिर हुआ और फिर चला गया।

फनाह के बाद भी बाकी है शाने रहबरी तेरी

हजरत सैय्यंद सालार मसऊद गाज़ी अलैहिर्रहमां रूहानियत के ताजदार हैं शहादत से पहले भी आपसे क़रामतों का ज़हूर होता था और जामे शहादत नोश करने के बाद आज भी करामतों का ज़हूर होता है और इन्शा अल्लाह तआला क़यामत तक होता रहेगा।

करामतों का ज़हूर ज़ाहिरी ज़िन्दगी में भी हो सकता है और विसाल फरमाने के बाद भी उलमाए इकराम ने इस पे बहुत सी दलीलें दी हैं।

इमाम मोनवी ने अक़सामे ज़्यारत में फरमाया कि एक ज़्यारत हुसूले बरकत के लिए होती हैं यह मज़ाराते औलिया के लिए सुन्नत है और उनके लिए बरज़ख में बेशुमार बरकात हैं।

अल्लामा नाबलिसी ने हदीकुल नदियां में फरमाया कि औलिया की करामतें इन्तेकाल के बाद भी बाकी हैं जो न माने वह जाहिल है। हठ धरम है।

फतावा रिजविया भाग 4 पृष्ठ संख्या 288

हजरत शेख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहे अलैह अशअतुल लमआत शरहे मिशक़ात में फरमाते हैं कि औलिया अल्लाह इस दारे फानी से दारे बका की तरफ मुन्तकिल हो जाते हैं और वह अपने परवरदिगार के पास ज़िन्दा हैं उन्हें रिज़्क दिया जाता है वह खुश खुर्रम हैं। लेकिन लोगों को इसका शऊर नहीं।

फतावा रिजविया भाग चार पृष्ठ संख्या 288

अशअतुल लमआत शरहे मिशकात बाबे ज़ियारत कुबूर में फरमाते हैं। हुज्जतुल इस्लाम इमाम मोहम्मद गजाली रह0 कि जिससे उसकी जिन्दगी में मदद लेना जायज है उससे बाद वफात भी मदद तलब करना जायज है। मशायखे एज़ाम में से एक ने फरमाया मैंने चार मशायख को देखा कि वह अपनी कबरों में इस ताह तसर्रुफ करते हैं जिस तरह अपनी जिन्दगी में तसर्रुफ (व्यवहार) करते थे ये उससे भी बढ़कर। हजरत शेख मारूफ करखी हजरत शेख अब्दुल कादिर जीलानी और दो बुजुर्ग और शुमार किए इन चारों में खिज्र मजकूर नहीं। जो कुछ उस

बुजुर्ग ने देखा और पाया उसको बयान कर दिया। अशअतुल लमआत उर्दू पृष्ठ संख्या 922– 923,

इमाम अल्लामा तफताज़ानी ने शरहे मकासिद में अहले सुन्नत के नजदीक इल्मो इदराक मुताअला की तहकीक करके फरमाया कि औलिया की कब्रों की ज्यारत और पाक रूहों से निस्बत नफा होती है। फतावा रिजविया भाग चार पृष्ठ संख्या 288,

रद्दुल मुखतार में इमाम गजाली से मरवी है कि पाक रूहों और औलियाए इकराम का हाल बराबर नहीं, कल्कि जुदा– जुदा है। वह अपने – अपने दरजों और बुलन्द मर्तबों के मुताबिक अल्लाह के फजल से ज़ायरीनों को नफा देते हैं। फतावा रिजविया भाग चार पृष्ठ संख्या 291,

औलियाए इकराम और सालिहीने इज़ाम का फैज़ बाद विसाल भी जारी रहता है तफसीर अजीजी पारा आम पृष्ठ 50 पर है।

मजहरी साहब तफसील में बयान फरमाते हैं।

तर्जुमा–अल्लाह तआला शहीदों की रूहों को, जिस्मों को कुव्वत देता है वह जमीन व आसमान और जन्नत में जहां चाहें जाते हैं

घूमते – फिरते हैं और अपने दोस्तों की इमदाद करते है और दुश्मनों को हलाक करते हैं।

ज़ियाउल कुरआन जिल्द एक पृष्ठ संख्या 108
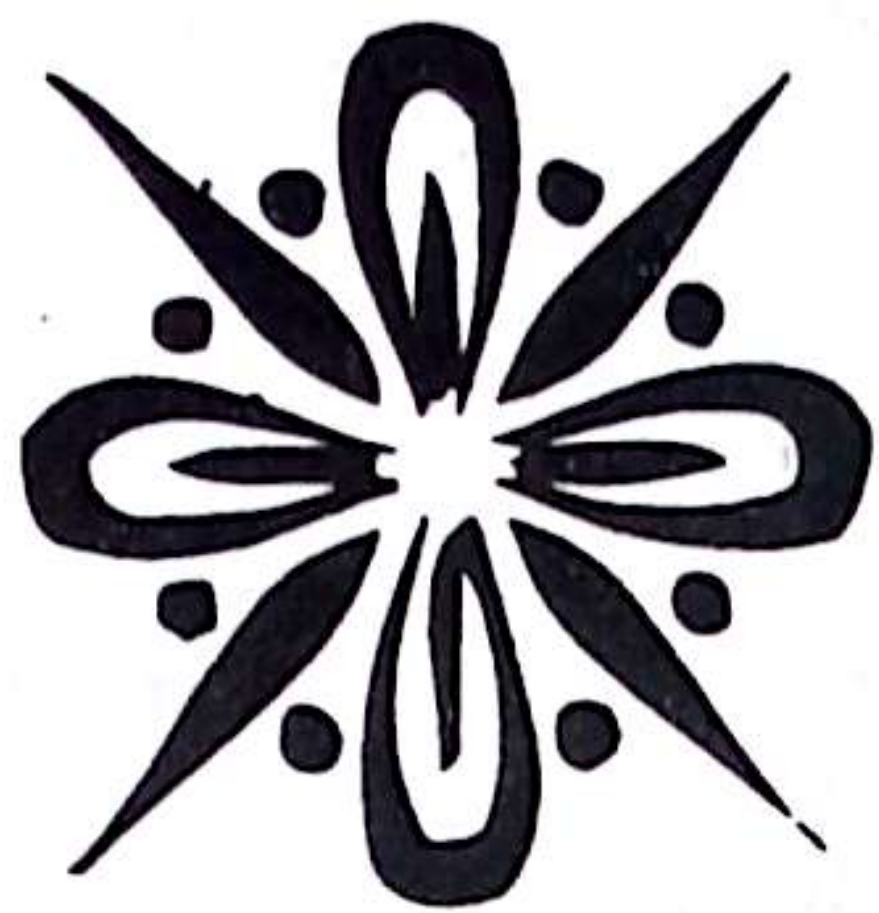
शहीदों को तो अक्सर नाज़ होता है शहादत पर।
पर ग़ाज़ी मियां तुम पर शहादत नाज़ करती है।।
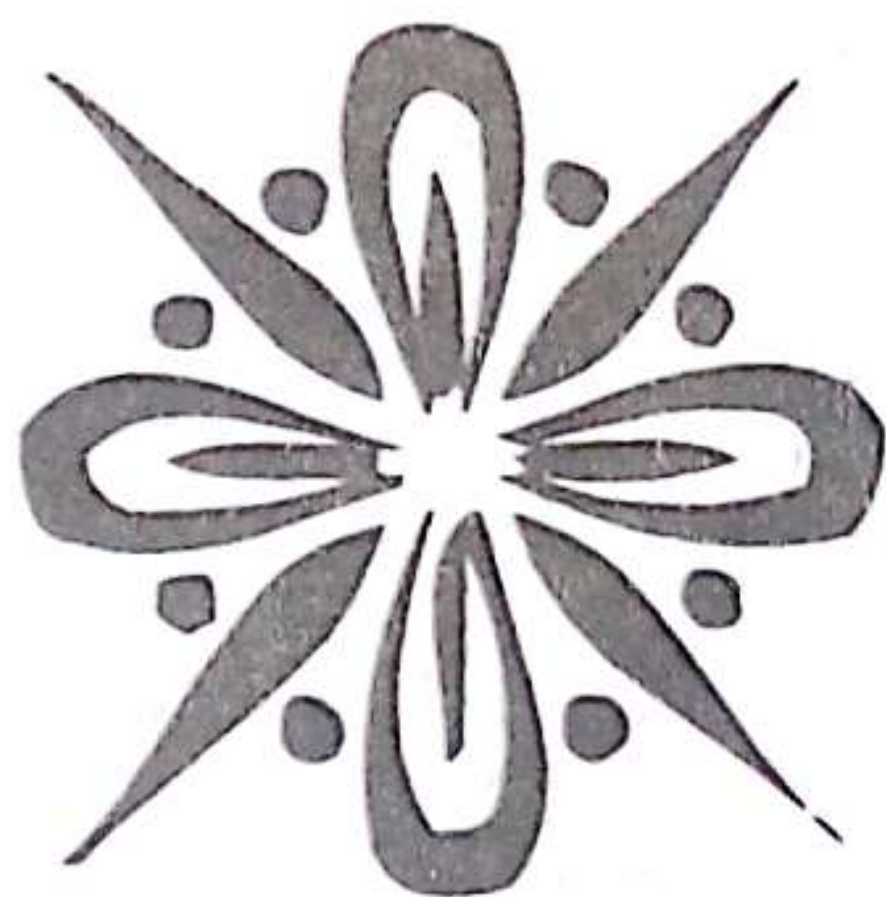
बिस्मिल्लाहहिर्रहमानिर्रहीम

अज तुफैल सैय्यद सालार मसऊद जमां।
शेरे हक शाहे शहीदां फातेहे हिन्दोस्तां।।

फातहो गालिब कुनम बर हरीके अज दुश्मनां
हम मुरा खुशहाल गिरदां ऐ खुदाऐ दो जहां।।
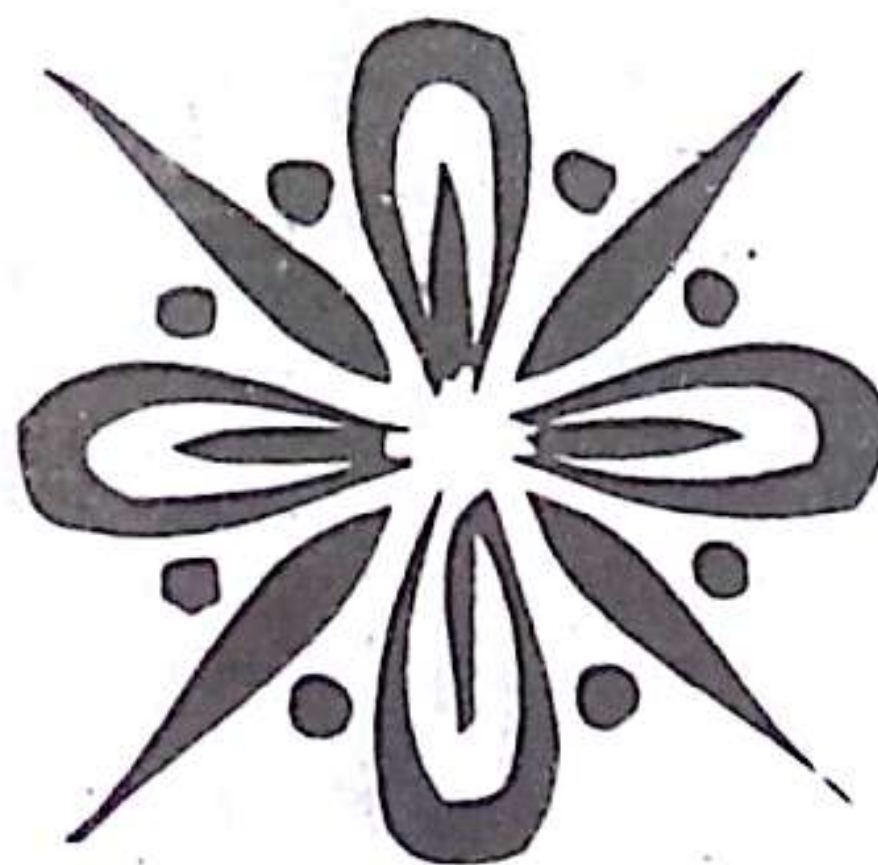
बादशाह ऐसा वो जिसकी एक दुनिया रहे गदा

अज़ ....ताजउल शरिआ हज़रत अल्लामा अख्तर रज़ा खां अज़हरी मद्ज़िल्लहुलआली बरेली शरीफ़

हज़रत मसऊद गाज़ी अख्तर ब्रज हुदा
बे कसों का हम नवा वो सालकों का मुकतदा

साक़ी सबाए उल्फत राज़दारे मआरफत
बादशाह ऐसा वो जिसकी एक दुनिया है गदा

आसमानो नूर का ऐसा दरखशन्दां क़मर
जिसकी ताबिश से मुनव्वर सारा आतम हो गया

नायब शाह शैदां वो मुहाफिज़ नूर का
जिसने सींचा है लहू से गुलशने दीने जहां

इस्तकामत का वो कोहे मोहकमे बाला तरीं
जिसके आगे काहे आफातो मसायब झुक गया

सादगी में भी है वो सरदार खूबां देखिये
क्या मुकद्दस ज़ात है जिसकी निराली हर अदा

नौश–ए–बज़्मे जनां वो बन्द–ए रब्बेजनां
हूरो गुलाम जिस की खिदमत में मुकर्रर हैं सदा

तेरे नूरे फैज़से खैरात दुनिया को मिली
हमको भी जिद्दे मुअज्ज़म का मिले सदक़ाशहा

या इलाही तेरे बन्दे के दर पर नूर पर
गरदिश–ए–अय्याम का मैं तुझसे करता हूं गिला

या इलाही बे नियाज़दहर तू कर दे मुझे
दूर कर दे मेरे दिलसे उल्फत–ए–हरमा सिवा

अल्लाह अल्लाह ये नसीब अख्तर शीरीं सुखन
फैज़ मौला से है वो सालार का मिदहत सरा

तेरी हरइक अदा में शौकत कुरआन से गाज़ी

अज़ ....हज़रत अल्लामा मौलाना सैय्यद आरिफ साहब नानपारवी मद्ज़िल्लहुलआली

ज़मीन ए हिन्द पर तेरा बड़ा एहसान है गाज़ी
यहां के ज़र्रे, ज़र्रे में तेरा फैज़ान है गाज़ी

मिटाई ज़ुल्मते बातिल उजाला हक़ का फैलाया
तेरी हरइक अदा में शौकते कुरआन है ग

फरोगे दीन की खातिर जवानी तूने कुरबां की
तेरा ज़ौके शाहादत किस कदर ज़ीशान गाज़ी

नमाज़ें हों अज़ानें हों मसाजिद हों मदारिस हों
यहां जो कुछ भी है तेरा ही तो फैज़ान है गाज़ी

हयाते चन्द रोज़ा को लुटा कर राहे मौला में
तू बागे सरमदी का दीदए रेहान है गाज़ी

जनाबे खिज़्र को देखा है गलियों में तेरी अक्सर
न जाने किस बुलन्दी पर तेरा एवान है गाज़ी

फक़ीराए गनी जाए मरीज़ आए शिफा पाए
तेरे दरबारे आली की ये आली शान है गाज़ी

तेरा रूए मुनव्वर है हरीमे कदस का जलवा
तेरे किरदार पे अक़्ले बशर हैरान है गाज़ी

दिखा दो चांद सा चेहरा मुझे भी ख्वाब में आक़ा
दिले आरिफ का मुद्दत से यही अरमान है गाज़ी
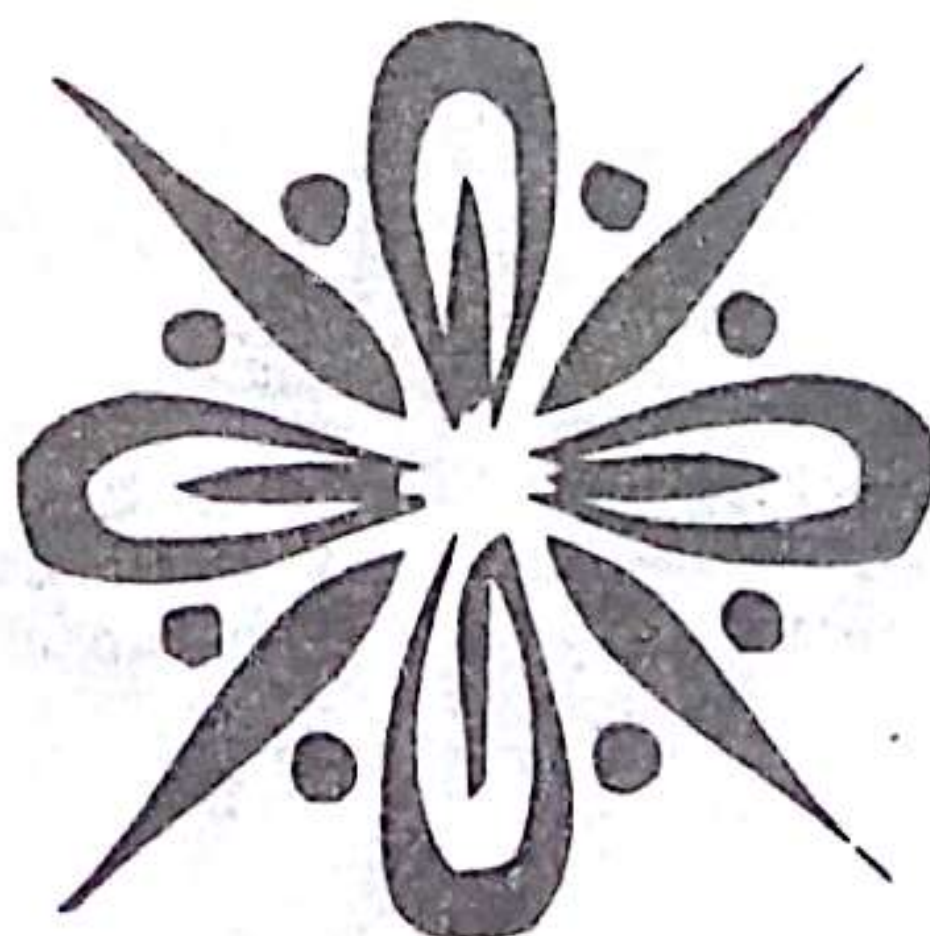
मनक़बत

बुलबुले हिन्द हजरत अल्लामा मुफ्ती मो० रज्जब अली साहब कि़बला नानपारवी

दरशान-ए- गा़जी़ मसऊद रजी़०

दोनो आलम में है चर्चा हज़रते मसऊद का
क्या कोई समझेगा रूतबा हज़रते मसऊद का
ज़र्रा–ज़र्रा उनके कूचे का सआदतगीर है
ज़िक्र प्यारा नाम सच्चा हज़रते मसऊद का
छा गए अनवारो रहमत के सहाएब इस तरफ
जिस तरफ चमका है जलवा हज़रते मसऊद का
रज़्म गाहे नूर–ओ– नारो हक़–ओ– बातिल बन गया
अमरे रब से ज़र्रा ज़र्रा हज़रते मसऊद का
बस रहा है जिस की खुश्बू से मशामे अहले हक़
क्या सुहाना फूल फूला हज़रते मसऊद का
सर बुलन्दे दहर है वो सर खुदा के फज़्ल से
है भरा जिस सर में सौदा हज़रते मसऊद का
धूम है दरबारे आली की सख़ा की हर तरफ
जिस तरफ देखो है चर्चा हज़रते मसऊद का
सब्ज़ गुम्बद वाले आक़ा की निगाहे लुत्फ से
है जनां बरदोश क़बा हज़रते मसऊद का
है बिला तफरीक फैज़े आम जारी देख लो
सिदक़ दिल से आ के रौज़ा हज़रते मसऊद का
वो मुनाफिक़ है कि जिस के दिल में उनसे बुग्ज़ है
मोमिने कामिल है शैदा हज़रते मसऊद का
उनके दर की खाक बोसी में सआदत है मेरी
मैं हूं साएल और मंगता हज़रते मसऊद का
शिरको बिदअत लाख उसको कोई जाने ऐ रजब
मैं हूं मंगता और बन्दा हज़रते मसऊद का
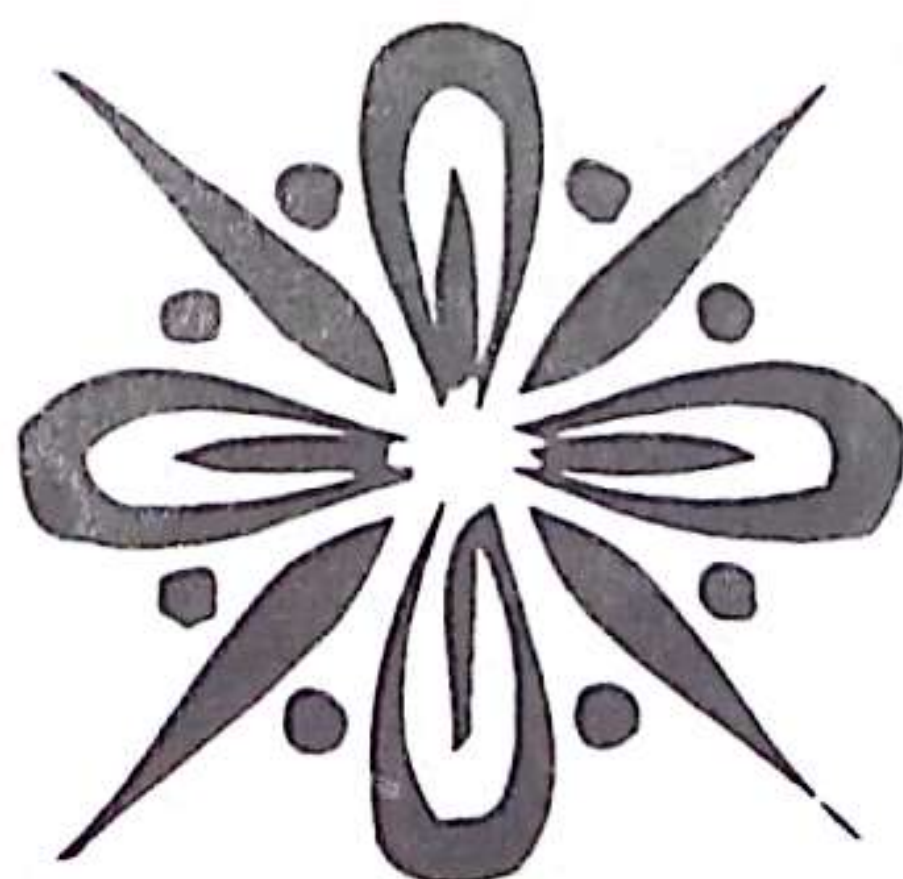
मनक़बत

दरशान साहब अलफारूक़ बैनुलहक़ वलबातिलुलमुजाहिद फि सबीलिल्लाह वल्दुलअज़ीज़

सैय्यद सालार साहू सैय्यदना व मौलैना मसऊद ग़ाज़ी

बुलबुले हिन्द हज़रत अल्लामा मुफ्ती मो0 रज्जब अली साहब किबला नानपारवी

मुबारक बाद जलवा सैय्यदे सालार गाज़ी का
हर इक सू है उजाला सैय्यदे सालार गाज़ी का

किधर हैं तालिबाने जलव–ए–ज़ेबा चले आऐं
उठा है आज परदा सैय्यदे सालार गाज़ी का

मुबारक हो तुझे ऐ सर ज़मीने मुशहिदे अक़दस
है पिनहा तुझमे जलवा सैय्यदे सालार गाज़ी का

चे निस्बत महर राबा ज़र्रए ईं ख़ाके बहराइच
है रशके महरे ज़र्रा सैय्यदे सालार गाज़ी का

यहां का ज़र्रा ज़र्रा सुरखुरू–ए– इश्के मौला है
यहां बरसा है झाला सैय्यदे सालार गाज़ी का

करम के फूल बरसें या इलाही इन मुशाहिद पर
रहे गुलज़ार रौज़ा सैय्यदे सालार गाज़ी का

ज़मीनो आसमानो दारे दुनिया बज़्मे बाला में
हर एक जानिब है शहरा सैय्यदे सालार गाज़ी का

दयारे कुफ्र में इस्लाम के अनवार फैलाना
ये है मखसूस हिस्सा सैय्यदे सालार गाज़ी का

लरज़ उठ्ठे कुलूब अहले ज़ुल्मत हक़ की हैबत से
बजा जिस वक़्त डंका सैय्यदे सालार गाज़ी का

जो रब के हैं मिटाऐ वो किसी के मिट नहीं सकते
रहेगा नाम ऊंचा सैय्यदे सालार गाज़ी का

हज़ारों तिश्ना गाने जहां सैराब होते हैं
है मलजा सब का चश्मा सैय्यदे सालार गाज़ी का

भिकारी पा रहे हैं भीख कैसे शादमां होकर
है खुश हर एक मंगता सैय्यदे सालार गाज़ी का

ये शान–ए– फ़ैज़ है हर शख्स पर फैज़ान होता है
नबी का खुल्क़ नक़्शा सैय्यदे सालार गाज़ी का

जिसे देखो वो दामान–ए–इरादत अपना भरता है
है जारी फैज़ कैसा सैय्यदे सालार गाज़ी का

हुज़ूर सुरखुरू सालार की चौखटके सदक़े में
मिले मुझको भी सदक़ा सैय्यदे सालार गाज़ी का

वो दिल बे खौफ है आबाद है शादाब है जिस पर
सहाब–ए–फैज़ बरसा सैय्यदे सालार गाज़ी का

इलाही अपनी रहमत सेरजब को शादमां कर दे
है ये भी नाम लेवा सैय्यदे सालार गाज़ी का

मनक़बत

दयार सैय्यद सालार में

सब को मिलता है दयारे सैय्यदे सालार में।
फ़ैज़ के बहते हैं धारे सैय्यदे सालार में।।

शाने ग़ाज़ी और शहादत और विलायत वाला पन।
खूबियां हैं सब हमारे सैय्यदे सालार में।।

दामने रहमत का साया उसके सर पर हो गया।
जो भी आ पहुंचा सैय्यदे सालार में।।

बाग़े जन्नत की हवा तैबा से हो कर हर घड़ी।
रोज़ आती है मज़ारे सैय्यदे सालार में।।

आरज़ू ले कर के अल्लन हाज़िरे दरबार है।
अपना भी दामन पसारे सैय्यदे सालार में।।

मनक़बत

इसतग़ासा बद्रगाह हैदर कर्रार अली मुर्तज़ा शेरे खुदा जिद्दा अली हुज़ूर सुल्तानउस्शोहदा

बे मददगार मनम हज़रते हैदर मद्दे
दस्त कुदरत मद्दे फातहे खैबर मद्दे
बाइसे रहमते हक़ मज़हरे अलताफे नबी
हामी दीने मतीं नफ्स पयम्बर मद्दे
तश्ना लब आमदह अम बर दर्त ऐ आबे हयात
बहरे बखशिश मद्दे क़ासिमे कौसर मद्दे
चूं दर पाक तो शद माने मिल जाये जहां
हामिले खल्क नबी बामने मुज़तर मद्दे
शारिबे अदना गुलामे बदरत इस्तारह
शाह कुम्बर मद्दे मालिको सरवर मद्दे

मनक़बत

ग़ाज़ी-ए- हिन्द

हज़रत मौलाना इस्माईल अतहरी बस्तवी

ग़ाज़ी–ए–हिन्द तुझे रब ने बनाया ग़ाज़ी
हिन्द में तुझ सा नहीं आज तक आया ग़ाज़ी
वक़्त शाहिद है कि तुगलक़ व शहंशाहों ने
तेरी सरकार में भी सर को झुकाया ग़ाज़ी
बिगड़ियां लाखों की बनती हैंसंवरती हैं जहां
मेरी बिगड़ी भी इसी दर से बनाया ग़ाज़ी
ला दवा कितने मरीज़ों ने शिफा पाई है
दे दिया मुर्दा दिलों को भी शिफाया ग़ाज़ी
तेरे आसी ने भी तो आस लगा रखी है
कीजिये इसपे भी अब अपनी अताया ग़ाज़ी
सैकडों वलियों ने भी इन से दरे विलायत पाकर
हिन्द में कितने मुसलमान बनाया ग़ाज़ी
अतहरे खस्ता जिगर आप की रहमत पे निसार
आशिके ज़ार उसे अपना बनाया ग़ाज़ी

मनक़बत

मसऊद ग़ाज़ी

जज़मी और दिलावर हैं मसऊद ग़ाज़ी
शुजाअत का पैकर हैं मसऊद ग़ाज़ी
हिदायत की जू पाशियां जिसने बख़्शीं
वो माह मुनव्वर हैं मसऊद ग़ाज़ी
जवां मर्द मोमिन, मुजाहिद,मुबल्लिग़
रहे हक़ के रहबर हैं मसऊद ग़ाज़ी
जो ठुकराये ग़ज़नी का ताजे हुकूमत
वो रब के क़लन्दर हैं मसऊद ग़ाज़ी
तलब से सिवा हर सवाली को बख़्शा
ग़नी और तवंगर हैं मसऊद ग़ाज़ी
किया दीन को सुरखुरू अपने खूं से
शहादत के अख़्तर हैं मसऊद ग़ाज़ी

मनक़बत

क़तआ

करें क्या वस्फ और बतलाऐं क्या मसऊद ग़ाज़ी हैं
दिलो जां और अली व फातिमा मसऊद ग़ाज़ी हैं

जज़ाक अल्लाह बहत्तर जां निसारों की तरह अकबर
हुसैन इब्ने अली की इक अदा मसऊद ग़ाज़ी हैं
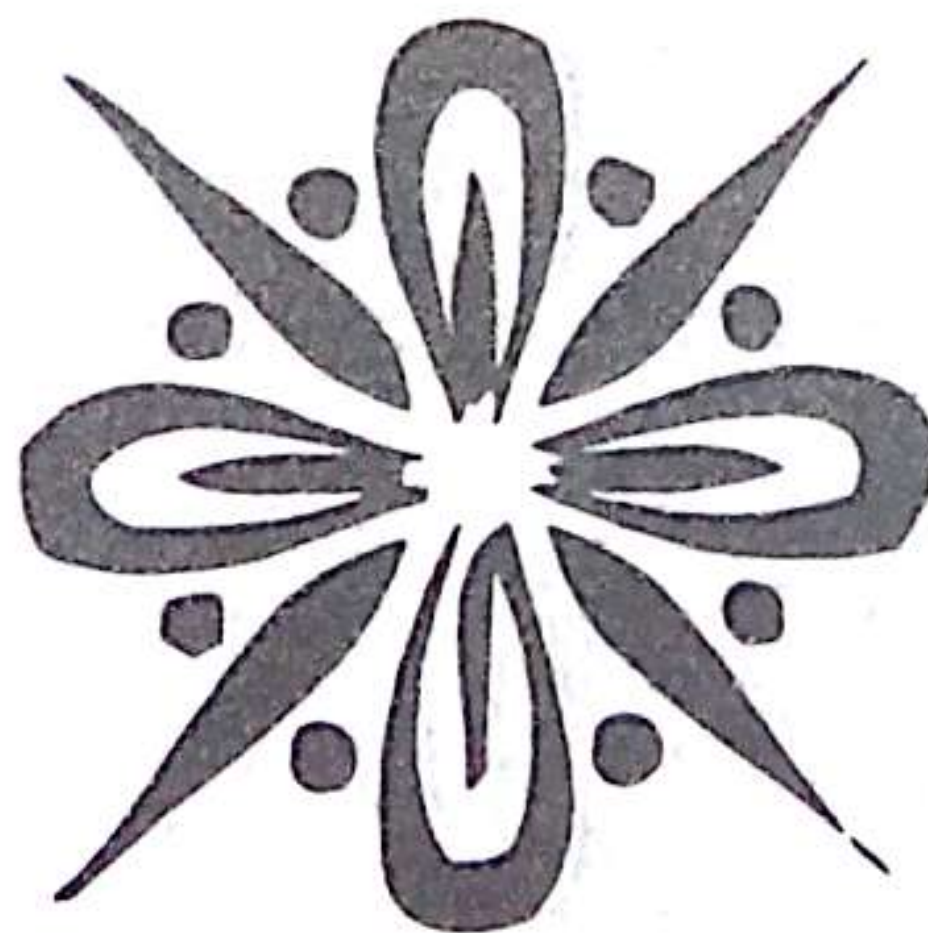
मनक़बत

बुलबुले हिन्द हज़रत अल्लामा मुफ्ती
मो0 रज्जब अली साहब क़िबला
ब आसताना सालारे आज़म हिन्द व
मख़दूमना मसऊद ग़ाज़ी रज़ी0 अलक़वी

हाज़िरे दरबार होकर अर्ज़ करता है सलाम।
गर कुबूल उफतद जहे इज्ज़ोशरफ शाह हुदा।।
अस्सलाम ऐ ग़ाज़ी दीन मतीन मुस्तफा।
अस्सलाम ऐ जौहरे सियाल तेग़े मुरतुज़ा।।
अस्सलाम ऐ रौनक़ेसहने गुलिस्ताने रज़ा।
अस्सलाम ऐ बहजत गुलहाए दामाने क़जा।।
अस्सलाम ऐ मर्द मैदाने वंलायत अस्सलाम।
अस्सलाम ऐ शीर सैहरा–ए–शुजाअत अस्सलाम।।
अस्सलाम ऐ नख़ल गुलज़ारे सयादत अस्सलाम।
अस्सलाम ऐ हुस्न रूख़सारे शहादत अस्सलाम।।

मनक़बत

ब बारगाहे हुजूर पुर नूर सैय्यद ग़ाज़ी शहीद रज़ी0
व ब आसतानहाये जुमला हज़रात शोहदा–ए– किराम बहराइच शरीफ
रज़ी0 जमीऐन

सलाम ऐ क़ाफिला सालारे राहे इश्क़ पैगम्बर।
सलाम ऐ मशअले राहे यक़ीन–ओ– मिल्लते सरवर।।

सलाम ऐ मज़हरे फैज़े जमाल मालिके कौसर।
सलाम ऐ पर तवे इज़्ज़ो जलाले शाफए महशर।।

सलाम ऐ जुल जुल हक सलाम ए नूर नूरे हक।
सलाम ऐ मेहदी व हादी सलाम ए कायद ओ रहबर।।

सलाम ऐ गाज़ी यानों सरफरोशाने मिल्लत ।
सलाम ऐ सालिकाने राहे दीं अकवाम के रहबर।।

मनक़बत

हज़रत अकबर वारसी

चप्पे चप्पे पुर मज़ारात शहीदां देखिये
दीद के क़ाबिल है बहराइच मैदां देखिये

हर तरफ है बारिशे अनवारे इरफां देखिये
बारगाहे सैय्यदे सालार ज़ीशां देखिये

है अली के चांद का दरबार इस दरबार के
ज़र्रे ज़र्रे में ज़िया–ए–महरे तांबा देखिये

कांपती है हैवते हक़ से निगाहे ज़ायरीं
क़ब्र पर रोअबे अली शेरे यज़दां देखिये।

जान की कुरबां खुदा की राह में इस्लाम को।
हिन्द में इनके लिए लाखों मुसलमां देखिये।।

इन का दीगर वास्ता खालिक़ से मक़सद मांगिये।
ग़ैब से फिर अपने इस मक़सद के सामां देखिये।।

देखने से आप के होते कुल अमराज़ दूर।
मेरा हाले ज़ार सुल्ताने शहीदां देखिये।।

मैं हूं मुश्किल में नज़र है आप की शिकस्ता।
मेरी जानिब यादगारे शाहे मुरदां देखिये।।

किस की लेता है बलाऐं किस पे होता है निसार।
ये मेरा दिल हाथ में लेकर मेरी जां देखिये।।

बढ़ते जाते हैं अक़ीदे उनके पा–पा कर मुराद।
हिन्दुओं से घटते जाते हैं मुसलमां देखिये।।

मस्जिदें,दारूलशिफा,मेहमान ख़ाने, मदरसे।
क्या कमेटी ने किये राहत के सामां देखिये।।

मन्जूम शिजरा-ए-नसब

सुल्तानुश्शोहदा फिलहिन्द हजरत सय्यद सालार मसऊद गाज़ी रजि

या इलाही रहम कर खैरुलवरा के वास्ते या रसूल अल्लाह करम, रब्बुलउला के वास्ते
या इलाही शाफए रोज़े जज़ा के वास्ते शाद रख हम को मोहम्मद मुस्तफा के वास्ते
या इलाही दुश्मनाने दीं पे रख गालिब हमें फातहे खैबर अली शेर खुदा के वास्ते
या इलाही अपनी रहमत से हमें सरशार कर हनफिया गाज़ी मोहम्मद बासफा के वास्ते
या इलाही हक पे तू रखना हमें साबित कदम बन्दा–ए–मन्नान ग़ाज़ी पेशवा के वास्ते
या इलाही गरमीए महशर से हम सब को बचा शह बतल गाजी इमामे हक नुमा के वास्ते
या इलाही गाजियाने दीं का मतवाला बना शाहे आसिफ गाजिए राहे हुदा के वास्ते
या इलाही सुन्नते सरकार का पाबन्द रख शह उमर गाजी गुलामे मुस्तफा के वास्ते
या इलाही कर दरखशन्दर हमारी कब्र को हजरते गाजी मोहम्मद पुर जिया के वास्ते
या इलाही पाक सीरत पाक तीनत हो अता शाहे तय्यब पाक बाजू बे रिया के वास्ते
या इलाही तीरगई कल्ब को शफाफ कर गाजिए राहे खुदा ताहिर शहा के वास्ते
या इलाही अपने प्यारों की गुलामी कर अता पैकरे सब्र व रजा हजरत अता के वास्ते
या इलाही हो गुनहगारों पे अलताफ व करम हजरते सालार साहू रहनुमा के वास्ते

या इलाही शाने आलम की दुआ मकबूल हो
हजरते मसऊद गाजी मुकतदा के वास्ते

नतीजा-ए-फिक्र :

शाने आलम मसऊदी

बानी व सदर अन्जुमन ज़िया-ए-ग़ाज़ी बहराइच शरीफ

मसऊदिया रिज़विया दारुल तहक़ीक़ की दीगर मतबूआत

- अनवार-ए-मसऊदी (मतबूआ)
- मिरात-ए-मदारी (मतबूआ)
- मनाक़िब-ए-रज़्ज़ाकिया (मतबूआ)
- अहकाम-ए-मय्यत (मतबूआ)
- अनवार-ए-कुरआनी (मतबूआ)
- अइम्म-ए-अरबआ (ज़ेर तबा)
- अकलील शरीफ मय हाशिया मसऊदी (ज़ेर तरतीब)
- शान-ए-नुज़ूल (माखूज़ अज़ खज़ाएनुल इरफान) (ज़ेर तरतीब)
- इरफान-ए-मसऊदी (ज़ेर तरतीब)
- फैज़ान-ए-मसऊदी (ज़ेर तरतीब)
- मुख्तसर तारीख-ए-बरहाइच (ज़ेर तरतीब)
- अनवार-ए-मसऊदी (हिन्दी) (मतबूआ)
- खुतबात-ए-मसऊदी (ज़ेर तरतीब)
- अमलयात-ए-मसऊदी (ज़ेर तरतीब)
- मनाक़िब-ए-सय्यद सालार [illegible] (ज़ेर तरतीब)
- मुख्तसर तज़करा हज़रत [illegible] (मतबूआ)

मुख्तसर तज़करा हज़रत [illegible] रह० (ज़ेर तरतीब)

प्रकाशक

मसऊदिया रिज़विया दारुल तहक़ीक़ वलतसनीफ वलतालीफ

मसऊदी मन्ज़िल ईदगाह दरगाह शरीफ, बहराइच (यूपी०)

Printed By : Taj Offset Press Bahraich 9236835169